

CTET L1 Sanskrit L2 Marathi P1

Topic:- CDP_P1_CTET

1) Recent theories in the field of child development suggest that development gets influenced by

- (i) genetics
- (ii) education
- (iii) culture
- (iv) social policies

- (1) (i) only
- (2) (i), (ii) only
- (3) (i), (ii), (iii) only
- (4) (i), (ii), (iii), (iv)

बाल विकास के क्षेत्र में हाल ही के सिद्धान्त यह सुझावित करते हैं कि विकास प्रभावित होता है

- (i) आनुवंशिकता से
- (ii) शिक्षा से
- (iii) संस्कृति से
- (iv) सामाजिक नीतियों से

- (1) केवल (i)
- (2) केवल (i), (ii)
- (3) केवल (i), (ii), (iii)
- (4) (i), (ii), (iii), (iv)

[Question ID = 1][Question Description = CTET_P1_PART_1_CDP_SET_102_Q1]

- 1. 1 [Option ID = 1]
- 2. 2 [Option ID = 2]
- 3. 3 [Option ID = 3]
- 4. 4 [Option ID = 4]

2) Development of children occurs

- (1) in an orderly manner but is individualistic in nature.
- (2) in a disorderly manner suddenly at a particular moment.
- (3) at the same rate for all children across the world.
- (4) as a result of schooling only.

बच्चों का विकास किस प्रकार से होता है ?

- (1) व्यवस्थित रूप से होता है परन्तु स्वाभाविक रूप से वैयक्तिक होता है ।
- (2) अव्यवस्थित रूप में, किसी विशिष्ट पल में अचानक से उभर आता है ।
- (3) पूरे विश्व में सभी बच्चों में एकसमान दर से होता है ।
- (4) केवल विद्यालयीकरण के परिणाम से होता है ।

[Question ID = 2][Question Description = CTET_P1_PART_1_CDP_SET_102_Q2]

1. 1 [Option ID = 5]
2. 2 [Option ID = 6]
3. 3 [Option ID = 7]
4. 4 [Option ID = 8]

3) _____ is a primary agent/agency of socialisation and _____ is a secondary agent/agency of socialisation among young children.

- (1) Family; library
- (2) Parents' workplace; neighbourhood
- (3) Mass media; family
- (4) Law; religious organisation

छोटे बच्चों में समाजीकरण का _____ प्राथमिक कारक/संस्था है और _____ द्वितीयक कारक/संस्था है ।

- (1) परिवार; पुस्तकालय
- (2) अभिभावकों का कार्यस्थल; आस-पड़ोस
- (3) संचार माध्यम; परिवार
- (4) कानून; धार्मिक संगठन

[Question ID = 3][Question Description = CTET_P1_PART_1_CDP_SET_102_Q3]

1. 1 [Option ID = 9]
2. 2 [Option ID = 10]
3. 3 [Option ID = 11]
4. 4 [Option ID = 12]

4) As per Jean Piaget's theory of cognitive development, at which stage do most children clearly understand Past, Present and Future ?

- (1) Sensorimotor
- (2) Preoperational
- (3) Concrete operational
- (4) Formal operational

जीन पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त के अनुसार, अधिकांश बच्चे किस अवस्था में बीते हुए समय, वर्तमान और भविष्य के बारे में स्पष्ट रूप से समझ बना लेते हैं ?

- (1) संवेदी-गत्यात्मक
- (2) पूर्व-संक्रियात्मक
- (3) मूर्त संक्रियात्मक
- (4) औपचारिक संक्रियात्मक

[Question ID = 4][Question Description = CTET_P1_PART_1_CDP_SET_102_Q4]

- 1. 1 [Option ID = 13]
- 2. 2 [Option ID = 14]
- 3. 3 [Option ID = 15]
- 4. 4 [Option ID = 16]

5) In Jean Piaget's theory, the basic building blocks of thinking are referred to as

- (1) Reflexes
- (2) Schemas
- (3) Codes
- (4) Concepts

जीन पियाजे के सिद्धान्त में, चिन्तन की बुनियादी निर्मितियों को किस रूप में जाना जाता है ?

- (1) सहज क्रियाएँ
- (2) स्कीमा
- (3) संकेत
- (4) अवधारणाएँ

[Question ID = 5][Question Description = CTET_P1_PART_1_CDP_SET_102_Q5]

- 1. 1 [Option ID = 17]
- 2. 2 [Option ID = 18]
- 3. 3 [Option ID = 19]
- 4. 4 [Option ID = 20]

6) According to Lev Vygotsky's theory, _____ shape(s) _____ development.

- (1) Genes; Social
- (2) Culture; Cognitive
- (3) Nature; Emotional
- (4) Emotions; Physical

लेव वायगोत्स्की के सिद्धान्त के अनुसार, _____ विकास को _____ आकार देता/देते हैं/हैं।

- (1) सामाजिक; आनुवंशिक कारक
- (2) संज्ञानात्मक; संस्कृति
- (3) भावात्मक; प्राकृतिक कारक
- (4) शारीरिक; संवेग

[Question ID = 6][Question Description = CTET_P1_PART_1_CDP_SET_102_Q6]

- 1. 1 [Option ID = 21]
- 2. 2 [Option ID = 22]
- 3. 3 [Option ID = 23]
- 4. 4 [Option ID = 24]

7) Lev Vygotsky emphasised upon the role of _____ in the process of cognitive development.

- (1) Language
- (2) Cognitive conflict
- (3) Reflexes
- (4) Schemas

लेव वायगोत्स्की ने संज्ञानात्मक विकास की प्रक्रिया में किसकी भूमिका पर बल दिया है ?

- (1) भाषा
- (2) संज्ञानात्मक द्वंद्व
- (3) सहज क्रियाएँ
- (4) स्कीमा

[Question ID = 7][Question Description = CTET_P1_PART_1_CDP_SET_102_Q7]

- 1. 1 [Option ID = 25]
- 2. 2 [Option ID = 26]
- 3. 3 [Option ID = 27]
- 4. 4 [Option ID = 28]

8) Both Lawrence Kohlberg and _____ have given theories of moral development.

- (1) Lev Vygotsky
- (2) Jerome Bruner
- (3) Jean Piaget
- (4) B. F. Skinner

नैतिक विकास का सिद्धान्त लॉरेंस कोहलबर्ग के साथ-साथ और किसके द्वारा प्रतिपादित किया गया है ?

- (1) लेव वायगोत्स्की
- (2) जेरोम ब्रुनर
- (3) जीन पियाजे
- (4) बी. एफ. स्किनर

[Question ID = 8][Question Description = CTET_P1_PART_1_CDP_SET_102_Q8]

- 1. 1 [Option ID = 29]
- 2. 2 [Option ID = 30]
- 3. 3 [Option ID = 31]
- 4. 4 [Option ID = 32]

9) A teacher should be _____ about his pedagogies.

- (1) rigid
- (2) inflexible
- (3) flexible
- (4) ignorant

एक अध्यापक को अपनी शिक्षणशास्त्रीय प्रविधियों के बारे में किस प्रकृति का होना चाहिए ?

- (1) दृढ़ (जड़)
- (2) गैर-लचीला
- (3) लचीला (सुनम्य)
- (4) अनजान

[Question ID = 9][Question Description = CTET_P1_PART_1_CDP_SET_102_Q9]

- 1. 1 [Option ID = 33]
- 2. 2 [Option ID = 34]
- 3. 3 [Option ID = 35]
- 4. 4 [Option ID = 36]

10) Intelligence Quotient (IQ) tests are often critiqued for

- (1) their ability to measure a broad range of skills
- (2) having an implicit western culture bias
- (3) considering social influence on intelligence
- (4) overestimating the influence of emotions of cognition

बुद्धि लब्धि (IQ) परीक्षणों की आलोचना प्रायः क्यों की जाती है ?

- (1) कौशलों की विस्तृत श्रृंखला को मापने की उनकी क्षमता
- (2) प्रत्यक्ष रूप से पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से ग्रसित
- (3) बुद्धि पर सामाजिक प्रभाव का अवबोधन
- (4) संज्ञान पर भावनाओं के प्रभाव का अतिशय प्राक्कलन

[Question ID = 10][Question Description = CTET_P1_PART_1_CDP_SET_102_Q10]

1. 1 [Option ID = 37]
2. 2 [Option ID = 38]
3. 3 [Option ID = 39]
4. 4 [Option ID = 40]

11) **Assertion (A) :**

When a student is struggling to find solution for a given problem, the teacher should encourage the student to verbalise her thoughts.

Reason (R) :

Learning is more effective when teachers keep minimal expectation of success from students.

Choose the correct option :

- (1) Both (A) and (R) are true and (R) is the correct explanation of (A)
- (2) Both (A) and (R) are true but (R) is not the correct explanation of (A)
- (3) (A) is true but (R) is false
- (4) Both (A) and (R) are false

अभिकथन (A) :

जब कोई विद्यार्थी किसी दिए गए प्रश्न का हल ढूँढने की प्रक्रिया से जूझ रहा है, तो अध्यापक को उसे अपने विचार मौखिक तौर पर अभिव्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

तर्क (R) :

अधिगम तब अधिक प्रभावशाली होता है जब अध्यापक विद्यार्थियों से सफलता की कम-से-कम अपेक्षा रखते हैं।

सही विकल्प चुनिए :

- (1) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या करता है
- (2) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है
- (3) (A) सही है लेकिन (R) गलत है
- (4) (A) और (R) दोनों गलत हैं

[Question ID = 11][Question Description = CTET_P1_PART_1_CDP_SET_102_Q11]

1. 1 [Option ID = 41]
2. 2 [Option ID = 42]
3. 3 [Option ID = 43]
4. 4 [Option ID = 44]

12) Gender is a _____ construct while sex is a _____ construct.

- (1) social, biological
- (2) social, moral
- (3) moral, social
- (4) biological, social

जेंडर _____ निर्मिति है जबकि लिंग _____ निर्मिति है ।

- (1) सामाजिक, जैविक
- (2) सामाजिक, नैतिक
- (3) नैतिक, सामाजिक
- (4) जैविक, सामाजिक

[Question ID = 12][Question Description = CTET_P1_PART_1_CDP_SET_102_Q12]

- 1. 1 [Option ID = 45]
- 2. 2 [Option ID = 46]
- 3. 3 [Option ID = 47]
- 4. 4 [Option ID = 48]

13) A teacher should _____ individual differences in learning preferences to facilitate learning for all.

- (1) consider
- (2) ignore
- (3) remove
- (4) downplay

एक अध्यापक को सभी के लिए अधिगम सहज-सुगम बनाने के लिए अधिगम प्राथमिकताओं में वैयक्तिक भिन्नताओं के प्रति क्या करना चाहिए ?

- (1) उन्हें महत्वपूर्ण मानना चाहिए
- (2) उनको अनदेखा करना चाहिए
- (3) उनको मिटा देना चाहिए
- (4) दमन करना चाहिए

[Question ID = 13][Question Description = CTET_P1_PART_1_CDP_SET_102_Q13]

- 1. 1 [Option ID = 49]
- 2. 2 [Option ID = 50]
- 3. 3 [Option ID = 51]
- 4. 4 [Option ID = 52]

14) The main purpose of assessments should be to

- (1) find ranges in students' scores
- (2) understand students' learning progress
- (3) identify potential failures and achievers
- (4) assign grades to the students

आकलन का मुख्य उद्देश्य क्या होना चाहिए ?

- (1) विद्यार्थियों के अंकों की व्यापकता का पता लगाना
- (2) विद्यार्थियों के सीखने की प्रगति के प्रति समझ बनाना
- (3) संभाव्य असफल और सफल विद्यार्थियों की पहचान करना
- (4) विद्यार्थियों को ग्रेड मान देना

[Question ID = 14][Question Description = CTET_P1_PART_1_CDP_SET_102_Q14]

1. 1 [Option ID = 53]
2. 2 [Option ID = 54]
3. 3 [Option ID = 55]
4. 4 [Option ID = 56]

15) Which of the following technique is likely to encourage critical thinking among students ?

- (1) Asking for immediate response on questions
- (2) Allowing reflection time to students
- (3) Asking close-ended questions to students
- (4) Discouraging interaction among students

निम्नलिखित में से कौन-सी प्रविधि विद्यार्थियों में समालोचनात्मक चिन्तन को प्रोत्साहित कर सकती है ?

- (1) प्रश्न का तुरन्त उत्तर देने के लिए कहना
- (2) विद्यार्थियों को विमर्श हेतु समय देना
- (3) विद्यार्थियों से बंद-अंत वाले प्रश्न पूछना
- (4) विद्यार्थियों में परस्पर अन्तःक्रिया को निरुत्साहित करना

[Question ID = 15][Question Description = CTET_P1_PART_1_CDP_SET_102_Q15]

1. 1 [Option ID = 57]
2. 2 [Option ID = 58]
3. 3 [Option ID = 59]
4. 4 [Option ID = 60]

16) Which of the following hinders inclusion of students belonging to disadvantaged groups ?

- (1) Stereotypes and set beliefs
- (2) Child-centric approaches
- (3) Formative assessment
- (4) Consideration of individual differences

सुविधा वंचित समूहों से संबंध रखने वाले विद्यार्थियों के समावेशन में निम्नलिखित में से किसके द्वारा अवरोध उत्पन्न होता है ?

- (1) रूढ़िबद्ध और स्थापित धारणाएँ
- (2) बाल-केन्द्रित उपागम
- (3) रचनात्मक आकलन
- (4) वैयक्तिक भिन्नताओं का ध्यान रखना

[Question ID = 16][Question Description = CTET_P1_PART_1_CDP_SET_102_Q16]

1. 1 [Option ID = 61]
2. 2 [Option ID = 62]
3. 3 [Option ID = 63]
4. 4 [Option ID = 64]

17) Dysgraphia poses direct challenges in

- (1) Sketching
- (2) Speaking
- (3) Seeing
- (4) Hearing

पठनवैकल्य प्रत्यक्ष रूप से किस कौशल में चुनौती का कारण बनता है/दिता है ?

- (1) स्केच बनाना
- (2) वाचन
- (3) देखना
- (4) सुनना

[Question ID = 17][Question Description = CTET_P1_PART_1_CDP_SET_102_Q17]

1. 1 [Option ID = 65]
2. 2 [Option ID = 66]
3. 3 [Option ID = 67]
4. 4 [Option ID = 68]

18) In order to successfully include students with visual impairment, a teacher should

- (1) write as much information as possible on the board
- (2) restrict the use of assistive devices in class
- (3) verbalise the written information
- (4) give very easy tasks only to these students

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को सहजता के साथ शामिल करने के लिए अध्यापक को क्या करना चाहिए ?

- (1) जितनी अधिक संभव हो सके, अधिक से अधिक सूचनाएँ श्यामपट्ट पर लिखनी चाहिए
- (2) कक्षा में समर्थक उपकरणों का प्रयोग बाधित करना चाहिए
- (3) लिखित सूचनाओं को मौखिक रूप से सम्प्रेषित करना चाहिए
- (4) इन विद्यार्थियों को केवल बहुत ही सरल से कार्य देने चाहिए

[Question ID = 18][Question Description = CTET_P1_PART_1_CDP_SET_102_Q18]

1. 1 [Option ID = 69]
2. 2 [Option ID = 70]
3. 3 [Option ID = 71]
4. 4 [Option ID = 72]

19) Which of the following is a typical identifying characteristic of students with Autism ?

- (1) Highly developed social skills
- (2) Impulsivity
- (3) Impaired communication skills
- (4) Above-average IQ levels

स्वलीनता विकार से जूझते विद्यार्थियों की प्रतिनिधिक पहचान विशेषता निम्नलिखित में से क्या है ?

- (1) उच्च रूप से विकसित सामाजिक कौशल
- (2) आवेगशीलता
- (3) अवरुद्ध सम्प्रेषण कौशल
- (4) औसत से ऊपर बुद्धि लब्धि स्तर

[Question ID = 19][Question Description = CTET_P1_PART_1_CDP_SET_102_Q19]

1. 1 [Option ID = 73]
2. 2 [Option ID = 74]
3. 3 [Option ID = 75]
4. 4 [Option ID = 76]

20) Giftedness in children is characterised by

- (1) low levels of intelligence
- (2) high levels of comprehension
- (3) easily giving up on tasks
- (4) inability to perform simple tasks with focussed attention

बच्चों में प्रतिभाशीलता किस प्रकार से परिलक्षित होती है ?

- (1) बुद्धि का निम्न स्तर
- (2) बोधगम्यता का उच्च स्तर
- (3) कार्यों को आसानी से छोड़ देना
- (4) छोटे-छोटे कार्यों को ध्यान केन्द्रित करके कर पाने की अक्षमता

[Question ID = 20][Question Description = CTET_P1_PART_1_CDP_SET_102_Q20]

1. 1 [Option ID = 77]
2. 2 [Option ID = 78]
3. 3 [Option ID = 79]
4. 4 [Option ID = 80]

21) *Assertion (A) :*

Schools should emphasize on curriculum aimed at constructing new knowledge.

Reason (R) :

Children are capable of constructing and interpreting new knowledge with support of teacher.

Choose the correct option :

- (1) Both (A) and (R) are true and (R) is the correct explanation of (A)
- (2) Both (A) and (R) are true but (R) is not the correct explanation of (A)
- (3) (A) is true but (R) is false
- (4) Both (A) and (R) are false

अभिकथन (A) :

विद्यालयों को नवीन ज्ञान के सृजन की ओर लक्षित पाठ्यचर्या पर बल देना चाहिए ।

तर्क (R) :

बच्चों में अध्यापक के सहयोग से नवीन ज्ञान के सृजन और उसकी व्याख्या करने की क्षमता होती है ।

सही विकल्प चुनिए :

- (1) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या करता है
- (2) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है
- (3) (A) सही है लेकिन (R) गलत है
- (4) (A) और (R) दोनों गलत हैं

[Question ID = 21][Question Description = CTET_P1_PART_1_CDP_SET_102_Q21]

1. 1 [Option ID = 81]
2. 2 [Option ID = 82]
3. 3 [Option ID = 83]
4. 4 [Option ID = 84]

22) Schools should emphasise on

- (1) reproduction of materials learnt
- (2) textbook learning
- (3) decontextualised learning
- (4) constructive learning

विद्यालयों को किस पर बल देना चाहिए ?

- (1) सीखी गई सामग्रियों को ज्यों का त्यों कह देना
- (2) पाठ्यपुस्तक से सीखना
- (3) संदर्भरहित अधिगम
- (4) रचनात्मक अधिगम

[Question ID = 22][Question Description = CTET_P1_PART_1_CDP_SET_102_Q22]

- 1. 1 [Option ID = 85]
- 2. 2 [Option ID = 86]
- 3. 3 [Option ID = 87]
- 4. 4 [Option ID = 88]

23) In order to create a conducive learning environment, it is important to

- (1) minimise opportunities for self-learning
- (2) give chances for self-assessment
- (3) promote competition among students
- (4) follow standardised curriculum

प्रेरक अधिगम परिवेश सृजित करने के लिए क्या महत्वपूर्ण है ?

- (1) स्व-अधिगम के लिए अवसरों को कम कर देना
- (2) स्व-आकलन हेतु अवसर देना
- (3) विद्यार्थियों में प्रतियोगी भावना को बढ़ावा देना
- (4) मानकीकृत पाठ्यचर्या का अनुसरण करना

[Question ID = 23][Question Description = CTET_P1_PART_1_CDP_SET_102_Q23]

- 1. 1 [Option ID = 89]
- 2. 2 [Option ID = 90]
- 3. 3 [Option ID = 91]
- 4. 4 [Option ID = 92]

24) *Assertion (A) :*

A teacher should encourage students to develop entity view of ability.

Reason (R) :

Entity view of ability motivates students to learn more effectively.

Choose the correct option :

- (1) Both (A) and (R) are true and (R) is the correct explanation of (A)
- (2) Both (A) and (R) are true but (R) is not the correct explanation of (A)
- (3) (A) is true but (R) is false
- (4) Both (A) and (R) are false

अभिकथन (A) :

अध्यापक को चाहिए कि वह विद्यार्थियों को योग्यता का सत्त्व संबंधी परिप्रेक्ष्य विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करें।

तर्क (R) :

योग्यता का अस्तित्व संबंधी परिप्रेक्ष्य विद्यार्थियों को अधिक प्रभावशाली तरीके से सीखने के लिए अभिप्रेरित करता है।

सही विकल्प चुनिए :

- (1) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या करता है
- (2) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है
- (3) (A) सही है लेकिन (R) गलत है
- (4) (A) और (R) दोनों गलत हैं

[Question ID = 24][Question Description = CTET_P1_PART_1_CDP_SET_102_Q24]

- 1. 1 [Option ID = 93]
- 2. 2 [Option ID = 94]
- 3. 3 [Option ID = 95]
- 4. 4 [Option ID = 96]

25) Which of the following is likely to hinder problem solving ?

- (1) Functional fixedness
- (2) Cognitive flexibility
- (3) Divergent thinking
- (4) Reflective writing

निम्नलिखित में से किसके द्वारा समस्या समाधान में अवरोध पैदा होने की संभावना है ?

- (1) कार्यात्मक स्थिरता
- (2) संज्ञानात्मक सुनम्यता (लचीलापन)
- (3) अपसारी चिंतन
- (4) विमर्शात्मक लेखन

[Question ID = 25][Question Description = CTET_P1_PART_1_CDP_SET_102_Q25]

- 1. 1 [Option ID = 97]

2. 2 [Option ID = 98]
3. 3 [Option ID = 99]
4. 4 [Option ID = 100]

26) **Assertion (A) :**

Teachers should identify the misconceptions carried by students and discuss those instead of ignoring them.

Reason (R) :

These misconceptions are a form of alternative conceptions which students often form based on their interaction with environment and these are meaningful in process of learning.

Choose the correct option :

- (1) Both (A) and (R) are true and (R) is the correct explanation of (A)
- (2) Both (A) and (R) are true but (R) is not the correct explanation of (A)
- (3) (A) is true but (R) is false
- (4) Both (A) and (R) are false

अभिकथन (A) :

अध्यापकों को चाहिए कि वे विद्यार्थियों की भ्रांतियों की पहचान करें और उनको अनदेखी करने के बजाय उन पर चर्चा करें।

तर्क (R) :

ये भ्रांतियाँ वैकल्पिक अवधारणाओं के रूप हैं, जो अक्सर विद्यार्थी अपने परिवेश के साथ अन्तःक्रिया करके आधार बना लेते हैं और ये अधिगम की प्रक्रिया में अर्थपूर्ण हैं।

सही विकल्प चुनिए :

- (1) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या करता है
- (2) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है
- (3) (A) सही है लेकिन (R) गलत है
- (4) (A) और (R) दोनों गलत हैं

[Question ID = 26][Question Description = CTET_P1_PART_1_CDP_SET_102_Q26]

1. 1 [Option ID = 101]
2. 2 [Option ID = 102]
3. 3 [Option ID = 103]
4. 4 [Option ID = 104]

27) **Emotions _____.**

- (1) significantly influence learning but don't have any influence on memory
- (2) have no influence on learning but significantly influence memory
- (3) significantly influence learning as well as memory
- (4) have no influence either on learning or on memory

भावनाएँ

- (1) अधिगम को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं परन्तु स्मृति पर इनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है ।
- (2) अधिगम पर किसी प्रकार का प्रभाव नहीं डालती लेकिन स्मृति को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं ।
- (3) अधिगम को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं साथ ही साथ स्मृति को भी ।
- (4) न तो अधिगम को प्रभावित करती हैं और न ही स्मृति को प्रभावित करती हैं ।

[Question ID = 27][Question Description = CTET_P1_PART_1_CDP_SET_102_Q27]

1. 1 [Option ID = 105]
2. 2 [Option ID = 106]
3. 3 [Option ID = 107]
4. 4 [Option ID = 108]

28) Students feel motivated to learn if the task is

- (1) Irrelevant
- (2) Unchallenging
- (3) Related to their life
- (4) Very abstract

विद्यार्थी सीखने के प्रति अभिप्रेरित होते हैं यदि कार्य

- (1) अप्रासंगिक हो ।
- (2) बिना किसी चुनौती वाला हो ।
- (3) उनके जीवन से संबंधित हो ।
- (4) बहुत ही अमूर्त हो ।

[Question ID = 28][Question Description = CTET_P1_PART_1_CDP_SET_102_Q28]

1. 1 [Option ID = 109]
2. 2 [Option ID = 110]
3. 3 [Option ID = 111]
4. 4 [Option ID = 112]

29) To facilitate students' learning, a teacher should

- (1) ignore previous knowledge of students
- (2) not clarify syntax and structure
- (3) minimise generalisation and transfer of learning
- (4) avoid use of subject-jargons

विद्यार्थियों के अधिगम को सहज-सुगम बनाने के लिए अध्यापक को क्या करना चाहिए ?

- (1) विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान की अनदेखी करनी चाहिए
- (2) वाक्य-विन्यास और संरचना स्पष्ट नहीं करनी चाहिए
- (3) अधिगम के अति सामान्यीकरण और निस्तारण को कम करना चाहिए
- (4) विषय से संबंधित शब्द-जाल के प्रयोग से बचना चाहिए

[Question ID = 29][Question Description = CTET_P1_PART_1_CDP_SET_102_Q29]

1. 1 [Option ID = 113]
2. 2 [Option ID = 114]
3. 3 [Option ID = 115]
4. 4 [Option ID = 116]

30) Which of the following hinders learning ?

- (1) Relating previous knowledge with topic to be taught
- (2) Sense of alienation with school culture
- (3) Implementation of multisensory approach
- (4) Pedagogy based on constructivism

निम्नलिखित में से किसके द्वारा अधिगम में बाधा उत्पन्न होती है ?

- (1) पहले पढ़ाए गए विषय से ज्ञान को सम्बद्ध करना
- (2) विद्यालयी संस्कृति से विमुखता का भाव
- (3) बहुसंवेदी उपागम का क्रियान्वयन
- (4) रचनावाद पर आधारित शिक्षणशास्त्रीय प्रविधियाँ

[Question ID = 30][Question Description = CTET_P1_PART_1_CDP_SET_102_Q30]

1. 1 [Option ID = 117]
2. 2 [Option ID = 118]
3. 3 [Option ID = 119]
4. 4 [Option ID = 120]

Topic:- MATH_Q31-45_P1_CTET

1) Ten crore twenty thousand two hundred three is written in figures as

- (1) 100002203
- (2) 1020203
- (3) 1002203
- (4) 100020203

दस करोड़ बीस हजार दो सौ तीन को अंकों में लिखा जाता है

- (1) 100002203
- (2) 1020203
- (3) 1002203
- (4) 100020203

[Question ID = 31][Question Description = CTET_P1_PART_2_MATHS_SET_102_Q31]

1. 1 [Option ID = 121]
2. 2 [Option ID = 122]
3. 3 [Option ID = 123]
4. 4 [Option ID = 124]

2) Which of the following fractions is less than $\frac{4}{5}$ and greater than $\frac{1}{2}$?

- (1) $\frac{8}{9}$
- (2) $\frac{7}{9}$
- (3) $\frac{1}{3}$
- (4) $\frac{2}{5}$

निम्न में से कौन-सी भिन्न $\frac{4}{5}$ से छोटी है और $\frac{1}{2}$ से बड़ी है ?

- (1) $\frac{8}{9}$
- (2) $\frac{7}{9}$
- (3) $\frac{1}{3}$
- (4) $\frac{2}{5}$

[Question ID = 32][Question Description = CTET_P1_PART_2_MATHS_SET_102_Q32]

1. 1 [Option ID = 125]
2. 2 [Option ID = 126]
3. 3 [Option ID = 127]
4. 4 [Option ID = 128]

3) What will be the value of K in the six digit number 56234K, if the number is divisible by 6 ?

- (1) 0
- (2) 1
- (3) 4
- (4) 6

छः अंकों की संख्या 56234K, में K का क्या मान होगा, यदि यह संख्या 6 से विभाज्य हो ?

- (1) 0
- (2) 1
- (3) 4
- (4) 6

[Question ID = 33][Question Description = CTET_P1_PART_2_MATHS_SET_102_Q33]

1. 1 [Option ID = 129]
2. 2 [Option ID = 130]
3. 3 [Option ID = 131]
4. 4 [Option ID = 132]

- 4) In a class of 28 students, 15 are girls. If 21 students clean their teeth daily and $\frac{3}{5}$ of the girls clean their teeth daily, then state which fraction of boys are doing the same work daily.

- (1) $\frac{2}{5}$
- (2) $\frac{4}{7}$
- (3) $\frac{4}{9}$
- (4) $\frac{12}{13}$

28 विद्यार्थियों की एक कक्षा में 15 लड़कियाँ हैं। यदि 21 विद्यार्थी प्रतिदिन अपने दाँत साफ करते हैं तथा लड़कियों का $\frac{3}{5}$ भाग प्रतिदिन अपने दाँत साफ करती हैं, तो बताइए कि लड़कों का कितना भाग प्रतिदिन यही काम करता है।

- (1) $\frac{2}{5}$
- (2) $\frac{4}{7}$
- (3) $\frac{4}{9}$
- (4) $\frac{12}{13}$

[Question ID = 34][Question Description = CTET_P1_PART_2_MATHS_SET_102_Q34]

- 1. 1 [Option ID = 133]
- 2. 2 [Option ID = 134]
- 3. 3 [Option ID = 135]
- 4. 4 [Option ID = 136]

- 5) Which of the following statements are true ?

- (i) Every number is always more than its additive inverse.
- (ii) Sum of any two integers is always more than each of the integers.
- (iii) Successor of -2 is -1 .
- (iv) Product of a number and its additive inverse is always negative.

Options :

- (1) (i) and (iii)
- (2) (ii) and (iv)
- (3) (i) and (ii)
- (4) (iii) and (iv)

निम्न में से कौन-से कथन सत्य हैं ?

- (i) प्रत्येक संख्या अपने योज्य प्रतिलोम से सदैव बड़ी होती है।
- (ii) किन्हीं भी दो पूर्णाकों का योग उन पूर्णाकों में से प्रत्येक से बड़ा होता है।
- (iii) -2 का परवर्ती -1 है।
- (iv) एक संख्या और उसके योज्य प्रतिलोम का गुणनफल सदैव ऋणात्मक होता है।

विकल्प :

- (1) (i) और (iii)
- (2) (ii) और (iv)
- (3) (i) और (ii)
- (4) (iii) और (iv)

[Question ID = 35][Question Description = CTET_P1_PART_2_MATHS_SET_102_Q35]

- 1. 1 [Option ID = 137]
- 2. 2 [Option ID = 138]
- 3. 3 [Option ID = 139]
- 4. 4 [Option ID = 140]

6) A shopkeeper bought 138 boxes of apples each containing 24 apples. He could sell only $117\frac{3}{4}$ boxes of apples on the first day. How many apples are left with him ?

- (1) 486
- (2) 498
- (3) 510
- (4) 522

एक दुकानदार ने सेबों के 138 डिब्बे, जिनमें से प्रत्येक में 24 सेब हैं, खरीदे। पहले दिन वह सेबों के केवल $117\frac{3}{4}$ डिब्बे ही बेच पाया। उसके पास कितने सेब शेष बचे हैं ?

- (1) 486
- (2) 498
- (3) 510
- (4) 522

[Question ID = 36][Question Description = CTET_P1_PART_2_MATHS_SET_102_Q36]

- 1. 1 [Option ID = 141]
- 2. 2 [Option ID = 142]
- 3. 3 [Option ID = 143]
- 4. 4 [Option ID = 144]

7) Two angles having their sum 180° are always known as

- (1) Adjacent angles
- (2) Complementary angles
- (3) Supplementary angles
- (4) Linear pair

दो कोण जिनका योग 180° है, सदैव कहलाते हैं

- (1) आसन्न कोण
- (2) पूरक कोण
- (3) सम्पूरक कोण
- (4) रैखिक युग्म

[Question ID = 37][Question Description = CTET_P1_PART_2_MATHS_SET_102_Q37]

- 1. 1 [Option ID = 145]
- 2. 2 [Option ID = 146]
- 3. 3 [Option ID = 147]
- 4. 4 [Option ID = 148]

8) Which of the following statements is *not* true ?

- (1) Sum of an acute angle and a right angle is always an obtuse angle.
- (2) Sum of two acute angles is always less than a right angle.
- (3) Sum of two right angles is equal to a straight angle.
- (4) Sum of two obtuse angles is always a reflex angle.

निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य *नहीं* है ?

- (1) एक न्यूनकोण और एक समकोण का योग सदैव एक अधिक कोण होता है।
- (2) दो न्यूनकोणों का योग सदैव एक समकोण से कम होता है।
- (3) दो समकोणों का योग एक ऋजु कोण के बराबर होता है।
- (4) दो अधिक कोणों का योग सदैव एक प्रतिवर्ती कोण होता है।

[Question ID = 38][Question Description = CTET_P1_PART_2_MATHS_SET_102_Q38]

- 1. 1 [Option ID = 149]
- 2. 2 [Option ID = 150]
- 3. 3 [Option ID = 151]
- 4. 4 [Option ID = 152]

9) Which one of the following groups of letters have only one line of symmetry ?

- (1) B, I, H
- (2) C, G, U
- (3) D, E, M
- (4) N, A, B

निम्न अक्षर-समूहों में से किस एक में केवल एक सममित रेखा है ?

- (1) B, I, H
- (2) C, G, U
- (3) D, E, M
- (4) N, A, B

[Question ID = 39][Question Description = CTET_P1_PART_2_MATHS_SET_102_Q39]

- 1. 1 [Option ID = 153]
- 2. 2 [Option ID = 154]
- 3. 3 [Option ID = 155]
- 4. 4 [Option ID = 156]

10) Yogesh runs with a speed of 30 km/h and completes a race in 5 minutes. What is the length of the race (in m) ?

- (1) 2050
- (2) 2500
- (3) 2550
- (4) 2600

योगेश 30 km/h की चाल से दौड़ता है और किसी दौड़ को 5 मिनट में पूरा करता है। उस दौड़ की कितनी लंबाई (m में) है ?

- (1) 2050
- (2) 2500
- (3) 2550
- (4) 2600

[Question ID = 40][Question Description = CTET_P1_PART_2_MATHS_SET_102_Q40]

- 1. 1 [Option ID = 157]
- 2. 2 [Option ID = 158]
- 3. 3 [Option ID = 159]
- 4. 4 [Option ID = 160]

11) Shalu reached her sister's house on 18th January, 2020 in the morning and left her house on 2nd April, 2020 at night. For how many days did she stay there ?

- (1) 74
- (2) 75
- (3) 76
- (4) 77

शालू प्रातः 18 जनवरी, 2020 को अपनी बहन के घर पहुँची और 2 अप्रैल, 2020 की रात को वापस चल पड़ी। वह वहाँ कितने दिन ठहरी ?

(1) 74

(2) 75

(3) 76

(4) 77

[Question ID = 41][Question Description = CTET_P1_PART_2_MATHS_SET_102_Q41]

1. 1 [Option ID = 161]
2. 2 [Option ID = 162]
3. 3 [Option ID = 163]
4. 4 [Option ID = 164]

12) The side of a square is 48 cm. The length and breadth of a rectangle are $1\frac{1}{2}$ and $\frac{2}{3}$ respectively of the side of the square. The difference in their perimeters (in cm) is

(1) 10

(2) 12

(3) 14

(4) 16

एक वर्ग की भुजा 48 cm है। एक आयत की लम्बाई और चौड़ाई उस वर्ग की भुजा की क्रमशः $1\frac{1}{2}$ तथा $\frac{2}{3}$ गुनी हैं। इनके परिमापों में अन्तर (cm में) है

(1) 10

(2) 12

(3) 14

(4) 16

[Question ID = 42][Question Description = CTET_P1_PART_2_MATHS_SET_102_Q42]

1. 1 [Option ID = 165]
2. 2 [Option ID = 166]
3. 3 [Option ID = 167]
4. 4 [Option ID = 168]

13) What will be the next number in the pattern $\frac{1}{4}, \frac{3}{16}, \frac{5}{64}, \frac{7}{256}, \dots$?

(1) $\frac{8}{125}$

(2) $\frac{9}{284}$

(3) $\frac{9}{1024}$

(4) $\frac{11}{4096}$

पैटर्न $\frac{1}{4}, \frac{3}{16}, \frac{5}{64}, \frac{7}{256}, \dots$ में अगली संख्या क्या आएगी ?

(1) $\frac{8}{125}$

(2) $\frac{9}{284}$

(3) $\frac{9}{1024}$

(4) $\frac{11}{4096}$

[Question ID = 43][Question Description = CTET_P1_PART_2_MATHS_SET_102_Q43]

1. 1 [Option ID = 169]
2. 2 [Option ID = 170]
3. 3 [Option ID = 171]
4. 4 [Option ID = 172]

14) 540 persons were asked to vote for their favourite season from the three seasons – Winter, Summer, Rainy. Data so obtained was represented in a pie chart. If the central angle for winter season is 150° , then how many persons had voted for winter season ? (Assume that each person has voted for one season only)

(1) 100

(2) 150

(3) 225

(4) 300

540 व्यक्तियों से शीत, ग्रीष्म और वर्षा ऋतुओं में से उनकी पसन्द की ऋतु पूछी गई। प्राप्त आंकड़ों को पाई चार्ट पर दर्शाया गया। यदि शीत ऋतु का केन्द्रीय कोण 150° आया, तो कितने व्यक्तियों ने शीत ऋतु को पसन्द किया ? (कल्पना कीजिए कि प्रत्येक व्यक्ति ने केवल एक ऋतु को ही पसंद किया है)

(1) 100

(2) 150

(3) 225

(4) 300

[Question ID = 44][Question Description = CTET_P1_PART_2_MATHS_SET_102_Q44]

1. 1 [Option ID = 173]
2. 2 [Option ID = 174]
3. 3 [Option ID = 175]
4. 4 [Option ID = 176]

15) Rahul saved some money every month from his pocket money as given below :

End of the month	Total Savings (in ₹) up to that month
------------------	--

January	80
February	140
March	210
April	285
May	375
June	480

Which of the following statements is correct ?

- (1) Savings in May is maximum.
- (2) Sum of savings in January and February is equal to the sum of savings in March and May.
- (3) Least savings is in the month of February.
- (4) Total savings up to end of June is ₹ 375.

राहुल ने अपने जेब खर्च में से प्रति माह कुछ बचत की, जैसा नीचे दिया है :

माह का अन्त	उस माह तक कुल बचत (₹ में)
-------------	---------------------------

जनवरी	80
फरवरी	140
मार्च	210
अप्रैल	285
मई	375
जून	480

निम्न में से कौन-सा कथन सही है ?

- (1) मई में अधिकतम बचत हुई ।
- (2) जनवरी और फरवरी में हुई बचत का योग मार्च तथा मई में हुई बचत के योग के बराबर है ।
- (3) सबसे कम बचत फरवरी माह में हुई ।
- (4) जून माह के अन्त तक की कुल बचत ₹ 375 है ।

[Question ID = 45][Question Description = CTET_P1_PART_2_MATHS_SET_102_Q45]

- 1. 1 [Option ID = 177]
- 2. 2 [Option ID = 178]
- 3. 3 [Option ID = 179]
- 4. 4 [Option ID = 180]

Topic:- MATH_Q46-60_P1_CTET

- 1) According to National Curriculum Framework, 2005 discussions in a primary grade mathematics classroom should be
- (1) didactic in nature.
 - (2) based on mathematical concepts learnt inside the classroom only.
 - (3) contextual and based on life-experiences of children.
 - (4) focused on solving problems given in mathematics textbook.

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2005 के अनुसार, प्राथमिक स्तर की गणित की कक्षा में परिचर्चा _____ होनी चाहिए।

- (1) प्रकृति में उपदेशात्मक
- (2) केवल कक्षा में सीखी हुई गणितीय अवधारणाओं पर आधारित
- (3) संदर्भात्मक एवं बच्चों के जीवन के अनुभवों पर आधारित
- (4) गणित की पाठ्यपुस्तक में दी गई समस्याओं के समाधान पर केन्द्रित

[Question ID = 46][Question Description = CTET_P1_PART_2_MATHS_SET_102_Q46]

1. 1 [Option ID = 181]
2. 2 [Option ID = 182]
3. 3 [Option ID = 183]
4. 4 [Option ID = 184]

- 2) Which of the following is the most appropriate characteristic of mathematical language at primary level ?
- (1) It must be highly focused, specific and technical.
 - (2) It must be ambiguous and open-ended so as to make learning joyful.
 - (3) It should be reinforced through the language used by the child in everyday life.
 - (4) It should not include mathematical vocabulary at all.

निम्नलिखित में से कौन-सी प्राथमिक स्तर पर गणितीय भाषा की सर्वाधिक उपयुक्त विशिष्टताएँ हैं ?

- (1) यह अत्यधिक एकाग्रचित, सुस्पष्ट और प्राविधिक होनी चाहिए।
- (2) अधिगम को आनन्दमयी बनाने के लिए इसे अस्पष्ट और आम दिनचर्या वाली भाषा की तरह होना चाहिए।
- (3) दैनिक जीवन में बच्चों द्वारा उपयोग की जाने वाली भाषा के माध्यम से इसे प्रबलित करना चाहिए।
- (4) इसमें गणितीय शब्दसंग्रह को बिल्कुल भी सम्मिलित नहीं किया जाना चाहिए।

[Question ID = 47][Question Description = CTET_P1_PART_2_MATHS_SET_102_Q47]

1. 1 [Option ID = 185]
2. 2 [Option ID = 186]
3. 3 [Option ID = 187]
4. 4 [Option ID = 188]

3) Which of the following is/are the most appropriate purpose of classroom assessment in mathematics at primary level ?

- (A) To inform and guide teaching-learning process.
- (B) To provide opportunities to the learner to reflect on their learning.
- (C) To create competition among learners to improve their performance.

Choose the correct option :

- (1) (A) and (B)
- (2) (A) and (C)
- (3) (B) and (C)
- (4) Only (A)

निम्नलिखित में से प्राथमिक स्तर पर गणित के कक्षायी आकलन के सर्वाधिक उपयुक्त उद्देश्य क्या है/हैं ?

- (A) शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को निर्देशित करना एवं मार्गदर्शन देना ।
- (B) शिक्षार्थियों को उनके अधिगम पर विचार करने के अवसर प्रदान करना ।
- (C) शिक्षार्थियों में उनके निष्पादन में सुधार के लिए प्रतिस्पर्धा की भावना विकसित करना ।

सही विकल्प का चयन कीजिए :

- (1) (A) और (B)
- (2) (A) और (C)
- (3) (B) और (C)
- (4) केवल (A)

[Question ID = 48][Question Description = CTET_P1_PART_2_MATHS_SET_102_Q48]

- 1. 1 [Option ID = 189]
- 2. 2 [Option ID = 190]
- 3. 3 [Option ID = 191]
- 4. 4 [Option ID = 192]

4) Which of the following is **not** a pre-number concept ?

- (1) Matching
- (2) Hierarchical inclusion
- (3) Seriating
- (4) Approximation

निम्नलिखित में से कौन-सी संख्या-पूर्व अवधारणा **नहीं** है ?

- (1) मिलान
- (2) पदानुक्रमित समावेशन
- (3) क्रमबद्ध लगाना
- (4) सन्निकटन

[Question ID = 49][Question Description = CTET_P1_PART_2_MATHS_SET_102_Q49]

1. 1 [Option ID = 193]
2. 2 [Option ID = 194]
3. 3 [Option ID = 195]
4. 4 [Option ID = 196]

5) The children in a mathematics class are arranging the given numbers in the following order :
28, 48, 57, 92

Which of the following concepts is being used by the children in arranging the numbers ?

- (1) Proportion
- (2) Place value
- (3) Regrouping
- (4) Approximation

गणित की कक्षा में बच्चे दी गई संख्याओं को निम्नलिखित क्रम में व्यवस्थित कर रहे हैं :

28, 48, 57, 92

बच्चों द्वारा निम्नलिखित में से कौन-सी अवधारणा का उपयोग संख्याओं को व्यवस्थित करने में किया गया है ?

- (1) समानुपात
- (2) स्थानीय मान
- (3) पुनः समूहीकरण
- (4) सन्निकटन

[Question ID = 50][Question Description = CTET_P1_PART_2_MATHS_SET_102_Q50]

1. 1 [Option ID = 197]
2. 2 [Option ID = 198]
3. 3 [Option ID = 199]
4. 4 [Option ID = 200]

6) Which among the following is the most appropriate strategy for introducing the concept of place value to grade I learners ?

- (1) Write the place value of numbers on the blackboard and explain.
- (2) Write expanded form of numbers.
- (3) Use manipulatives to explain 10 as a bundle of ones.
- (4) Draw place value columns on a chart paper.

स्तर I के शिक्षार्थियों को स्थानीय मान की अवधारणा प्रस्तावित करने के लिए निम्नलिखित में से कौन-सी सबसे उपयुक्त योजना है ?

- (1) श्यामपट्ट पर संख्याओं का स्थानीय मान लिखिए और समझाइए ।
- (2) संख्याओं के विस्तारित रूप को लिखिए ।
- (3) हस्त कौशल सामग्री का उपयोग करते हुए 10 को एकक के गट्टे के रूप में समझाइये ।
- (4) स्थानीय मान के स्तंभों को चार्ट पेपर पर चित्रित कीजिए ।

[Question ID = 51][Question Description = CTET_P1_PART_2_MATHS_SET_102_Q51]

1. 1 [Option ID = 201]
2. 2 [Option ID = 202]
3. 3 [Option ID = 203]
4. 4 [Option ID = 204]

7) "Communication is an important process skill required in mathematics." What do you mean by mathematical communication ?

- (1) Ability of the child to read the word problems quickly and correctly
- (2) Ability of the child to participate in mathematics quiz
- (3) Ability of the child to consolidate, organise and express mathematical thinking
- (4) Ability of the child to write mathematical essays

"गणित में संप्रेषण एक महत्वपूर्ण वांछित प्रक्रिया कौशल है।" गणितीय संप्रेषण से आप क्या समझते हैं ?

- (1) ईबारती सवालों को शीघ्र तथा सही तरीके से पढ़ने की बच्चे की क्षमता
- (2) गणितीय प्रश्नोत्तरी में भाग लेने की बच्चे की क्षमता
- (3) गणितीय चिंतन को समेकित, संघटित एवं अभिव्यक्त करने की बच्चे की क्षमता
- (4) गणितीय निबंध लिखने की बच्चे की क्षमता

[Question ID = 52][Question Description = CTET_P1_PART_2_MATHS_SET_102_Q52]

1. 1 [Option ID = 205]
2. 2 [Option ID = 206]
3. 3 [Option ID = 207]
4. 4 [Option ID = 208]

8) When asked to find out $354 + 99$, a primary grade student, solves it in the following way :

$$354 + 99 = 354 + 99 + 1 - 1 = 354 + 100 - 1 = 454 - 1 = 453$$

The strategy used by the student to find the sum is known as

- (1) Substitution
- (2) Addition-Subtraction
- (3) Compensation
- (4) Partition

जब $354 + 99$ का जोड़ ज्ञात करने के लिए कहा गया, तब प्राथमिक स्तर के विद्यार्थी ने निम्न प्रकार से उसे हल किया :

$$354 + 99 = 354 + 99 + 1 - 1 = 354 + 100 - 1 = 454 - 1 = 453$$

जोड़ ज्ञात करने के लिए विद्यार्थी द्वारा प्रयुक्त विधि/कार्यनीति कहलाती है

- (1) विस्थापन
- (2) योजन-व्यवकलन
- (3) प्रतिकरण
- (4) वितरण/विभाजन

[Question ID = 53][Question Description = CTET_P1_PART_2_MATHS_SET_102_Q53]

1. 1 [Option ID = 209]

- 2. 2 [Option ID = 210]
- 3. 3 [Option ID = 211]
- 4. 4 [Option ID = 212]

9) Which of the following is **not** true about mathematics ?

- (1) It is based on empirical evidences to prove different mathematical truths.
- (2) It is based on deductive reasoning.
- (3) It is a creative discipline and has aesthetic value.
- (4) It is validated by reasoning.

निम्नलिखित में से कौन-सा गणित के संबंध में सही **नहीं** है ?

- (1) विभिन्न गणितीय तथ्यों को प्रमाणित करने के लिए यह अनुभवजन्य/अनुभवसिद्ध साक्ष्यों पर आधारित है ।
- (2) यह निगमनात्मक विवेचन पर आधारित है ।
- (3) यह एक सृजनात्मक विषय-क्षेत्र है और इसका सौंदर्यपरक मूल्य है ।
- (4) इसे तर्क द्वारा वैधीकृत/अभिपुष्ट किया जाता है ।

[Question ID = 54][Question Description = CTET_P1_PART_2_MATHS_SET_102_Q54]

- 1. 1 [Option ID = 213]
- 2. 2 [Option ID = 214]
- 3. 3 [Option ID = 215]
- 4. 4 [Option ID = 216]

10) 'NIPUN' Bharat scheme that ensures every child in India gains foundational numeracy and literacy was launched by the Education Ministry of India under National Education Policy (NEP) 2020. 'NIPUN' stands for

- (1) National Initiative for Proficiency in Reading with Understanding and Numeracy
- (2) National Initiative for Proficiency in Writing with Understanding and Numeracy
- (3) National Initiative for Perfection in Understanding and Numeracy
- (4) National Initiative for Improved Pedagogy in Understanding and Numeracy

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) के अंतर्गत, भारतीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा 'निपुण' भारत योजना की शुरुआत की गई थी जो प्रत्येक छात्र में आधारभूत संख्यात्मकता एवं साक्षरता को सुनिश्चित करती है । 'निपुण' भारत का पूरा नाम है

- (1) नेशनल इनीशिएटिव फॉर प्रोफिशिएंसी इन रीडिंग विद अंडरस्टैंडिंग एंड न्यूमेरेसी
- (2) नेशनल इनीशिएटिव फॉर प्रोफिशिएंसी इन राइटिंग विद अंडरस्टैंडिंग एंड न्यूमेरेसी
- (3) नेशनल इनीशिएटिव फॉर परफेक्शन इन अंडरस्टैंडिंग एंड न्यूमेरेसी
- (4) नेशनल इनीशिएटिव फॉर इम्प्रूव्ड पैडागोजी इन अंडरस्टैंडिंग एंड न्यूमेरेसी

[Question ID = 55][Question Description = CTET_P1_PART_2_MATHS_SET_102_Q55]

- 1. 1 [Option ID = 217]
- 2. 2 [Option ID = 218]
- 3. 3 [Option ID = 219]
- 4. 4 [Option ID = 220]

11) Class I and Class II NCERT books have chapters based on listing out daily activities in a child's routine; the days of a week, days of months, change of weather etc. Such chapters :

- (1) Convey no meaning in a mathematics classroom.
- (2) Make mathematics textbook colourful and fun to read.
- (3) Help students learn the standard units of measurement.
- (4) Help students to learn the concept of time contextually.

NCERT की कक्षा I और कक्षा II की पाठ्यपुस्तकों में ऐसे पाठ हैं जो कि बच्चे की दैनिक गतिविधियों को सूचीबद्ध करने पर; सप्ताह के दिनों पर, महीनों के दिनों पर, मौसम के परिवर्तन, आदि पर आधारित हैं। ऐसे पाठ :

- (1) गणित की कक्षा में किसी अर्थ को संप्रेषित नहीं करते हैं।
- (2) गणित की पाठ्यपुस्तक को रंग-बिरंगा एवं आनंददायक बनाते हैं।
- (3) विद्यार्थियों को मापन की मानक इकाइयों को सीखने में सहयोग करते हैं।
- (4) विद्यार्थियों को समय की अवधारणा को संदर्भात्मक रूप से सीखने में सहयोग करते हैं।

[Question ID = 56][Question Description = CTET_P1_PART_2_MATHS_SET_102_Q56]

1. 1 [Option ID = 221]
2. 2 [Option ID = 222]
3. 3 [Option ID = 223]
4. 4 [Option ID = 224]

12) Which among the following is/are part of the key processes required for developing creative thinking in mathematics ?

- A. Recognising patterns and relationships
- B. Formulating hypotheses
- C. Using a given formula to solve problems

- (1) A and B
- (2) A and C
- (3) B and C
- (4) Only B

निम्नलिखित में से कौन-सा/से गणित में सृजनात्मक चिंतन के विकास के लिए मुख्य प्रक्रमों का एक भाग है/हैं ?

- A. पैटर्न तथा संबंधों को पहचानना
- B. परिकल्पनाएँ बनाना
- C. दिए गए सूत्र का उपयोग कर समस्याओं का समाधान करना

- (1) A और B
- (2) A और C
- (3) B और C
- (4) केवल B

[Question ID = 57][Question Description = CTET_P1_PART_2_MATHS_SET_102_Q57]

1. 1 [Option ID = 225]
2. 2 [Option ID = 226]
3. 3 [Option ID = 227]
4. 4 [Option ID = 228]

- 13) According to National Curriculum Framework 2005, the most appropriate way to develop a positive attitude towards mathematics and a liking for it in primary grade children is to
- (1) provide opportunities to enhance cognitive skills for learning mathematics
 - (2) use mathematical games, puzzles and stories to make connections between mathematics and children's life experiences
 - (3) use an aptitude scale to find out children's score on it and provide remedial measures
 - (4) frequently organise sessions by experts on importance of mathematics in everyday life

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 के अनुसार, प्राथमिक स्तर के बच्चों में गणित के प्रति रुचि एवं एक सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करने का सबसे उपयुक्त मार्ग है

- (1) गणित के अधिगम हेतु संज्ञानात्मक कौशलों में वृद्धि के लिए अवसर प्रदान करना
- (2) गणित एवं बच्चों के जीवन के अनुभवों में, गणितीय खेलों, पहेलियों और कहानियों का उपयोग कर, संबंध बनाना
- (3) अभिक्षमता स्केल का उपयोग कर बच्चों का परिणाम जानना एवं उपचारी विधियाँ प्रदान करना
- (4) दैनिक जीवन में गणित के महत्त्व पर विशेषज्ञों द्वारा सत्रों का निरंतर आयोजन करना

[Question ID = 58][Question Description = CTET_P1_PART_2_MATHS_SET_102_Q58]

1. 1 [Option ID = 229]
2. 2 [Option ID = 230]
3. 3 [Option ID = 231]
4. 4 [Option ID = 232]

- 14) When asked to solve 12×25 , a child uses the following method :
- $$12 \times 25 = 3 \times 4 \times 25 = 3 \times 100 = 300$$
- As a constructivist mathematics teacher what will be your reaction to the strategy used by the child ?
- (1) Accept the answer but tell the child that it is not the right way to do multiplication.
 - (2) Instruct the child to seek help from other students to solve the problem using correct algorithm.
 - (3) Appreciate the child and encourage other students to come up with different ways to solve the problem.
 - (4) Appreciate the child's answer but advice him/her not to use this method in examination to solve the problem.

जब किसी बच्चे को 12×25 का हल निकालने के लिए कहा गया, तब उसने निम्नलिखित विधि अपनाई :

$$12 \times 25 = 3 \times 4 \times 25 = 3 \times 100 = 300$$

गणित के एक रचनावादी शिक्षक के रूप में, बच्चे द्वारा प्रयुक्त विधि पर आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी ?

- (1) उत्तर स्वीकारें किन्तु बच्चे को बताएँ कि गुणन करने की यह सही विधि नहीं है।
- (2) सही कलन विधि का उपयोग कर प्रश्न हल करने के लिए बच्चे को अन्य विद्यार्थियों की सहायता लेने का निर्देश दें।
- (3) बच्चे की सराहना करें और अन्य विद्यार्थियों को भी प्रश्न हल करने के लिए विभिन्न तरीकों को ढूँढने के लिए कहें।
- (4) बच्चे के उत्तर की सराहना करें किन्तु उसे सलाह दें कि परीक्षा में प्रश्न हल करने के लिए इस विधि का उपयोग न करे।

[Question ID = 59][Question Description = CTET_P1_PART_2_MATHS_SET_102_Q59]

1. 1 [Option ID = 233]
2. 2 [Option ID = 234]
3. 3 [Option ID = 235]
4. 4 [Option ID = 236]

15) Which of the following statements is least likely to be one of the characteristics of levels in Van Hiele's theory of geometric thinking ?

- (1) They are age dependent
- (2) They are sequential
- (3) They are experience dependent
- (4) They are developmental

निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा कथन वैन हैले की ज्यामितीय चिंतन के सिद्धांत (थ्योरी) में स्तरों की न्यून रूप से संभावनीय विशिष्टता है ?

- (1) ये आयु पर निर्भर हैं
- (2) ये आनुक्रमिक हैं
- (3) ये अनुभव पर निर्भर हैं
- (4) ये विकासात्मक हैं

[Question ID = 60][Question Description = CTET_P1_PART_2_MATHS_SET_102_Q60]

1. 1 [Option ID = 237]
2. 2 [Option ID = 238]
3. 3 [Option ID = 239]
4. 4 [Option ID = 240]

- 1) With respect to the location of the capital of India the directions of Lucknow (Capital of Uttar Pradesh) and Jaipur (Capital of Rajasthan) respectively are
- (1) North-East, North-West
 - (2) South-East, South-West
 - (3) South-West, South-East
 - (4) North-West, North-East

भारत की राजधानी की स्थिति के सापेक्ष लखनऊ (उत्तर प्रदेश की राजधानी) और जयपुर (राजस्थान की राजधानी) की दिशाएँ क्रमशः हैं

- (1) उत्तर-पूर्व, उत्तर-पश्चिम
- (2) दक्षिण-पूर्व, दक्षिण-पश्चिम
- (3) दक्षिण-पश्चिम, दक्षिण-पूर्व
- (4) उत्तर-पश्चिम, उत्तर-पूर्व

[Question ID = 61][Question Description = CTET_P1_PART_3_EVS_SET_102_Q61]

1. 1 [Option ID = 241]
2. 2 [Option ID = 242]
3. 3 [Option ID = 243]
4. 4 [Option ID = 244]

- 2) A teacher is recruited in a school in Maharashtra. She is teaching about food and she gives an example of 'bharli vangi', which is a dish made of
- (1) stuffed baby eggplant preparation
 - (2) plain lentil stew
 - (3) creamy dish of fresh pomfret fishes
 - (4) curry made of potatoes, cauliflower and tomatoes

एक अध्यापिका की नियुक्ति महाराष्ट्र के एक विद्यालय में हुई है। वह भोजन के विषय में पढ़ा रही है तथा वह 'भरली वांगी' का उदाहरण देती है जो कि एक व्यंजन है जो बना है

- (1) छोटे-छोटे भरवाँ बैंगन से
- (2) सादा दाल का दमपुख्त (स्टू)
- (3) ताजी पोमफ्रेट मछलियों का मलाईदार व्यंजन
- (4) आलू, फूलगोभी तथा टमाटर की करी

[Question ID = 62][Question Description = CTET_P1_PART_3_EVS_SET_102_Q62]

1. 1 [Option ID = 245]
2. 2 [Option ID = 246]
3. 3 [Option ID = 247]
4. 4 [Option ID = 248]

- 3) The feathers of the birds are of different colours, shapes and sizes. Their feathers help them to fly and
- A. eat different types of food
 - B. keep them warm
 - C. walk in different ways
 - D. keep them waterproof
- (1) B and C
(2) B and D
(3) B, C and D
(4) A, B, C and D

पक्षियों के पंख विभिन्न रंगों, आकारों एवं माप के होते हैं। इनके पंख उन्हें उड़ने में सहायता करते हैं तथा

- A. विभिन्न प्रकार का भोजन खाने में
 - B. उन्हें गर्म रखते हैं
 - C. विभिन्न तरीकों से चलने में
 - D. उन्हें जलसह बनाते हैं
- (1) B और C
(2) B और D
(3) B, C और D
(4) A, B, C और D

[Question ID = 63][Question Description = CTET_P1_PART_3_EVS_SET_102_Q63]

- 1. 1 [Option ID = 249]
- 2. 2 [Option ID = 250]
- 3. 3 [Option ID = 251]
- 4. 4 [Option ID = 252]

4) Animals that lay eggs have following characteristics :

- (1) external ears and hair on their bodies
- (2) internal ears and no hair on their bodies
- (3) external ears and no hair on their bodies
- (4) internal ears and have hair on their bodies

जो पशु अण्डे देते हैं, उनकी निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं :

- (1) उनके बाहरी कान एवं शरीर पर बाल होते हैं।
- (2) उनके आंतरिक कान होते हैं एवं शरीर पर बाल नहीं होते हैं।
- (3) उनके बाहरी कान होते हैं एवं शरीर पर बाल नहीं होते हैं।
- (4) उनके आंतरिक कान एवं शरीर पर बाल होते हैं।

[Question ID = 64][Question Description = CTET_P1_PART_3_EVS_SET_102_Q64]

1. 1 [Option ID = 253]
2. 2 [Option ID = 254]
3. 3 [Option ID = 255]
4. 4 [Option ID = 256]

5) The name of the first Indian women who reached the peak of the Mount Everest and pitched the national flag and took photographs of the event is

- (1) Karnam Malleswari
- (2) Sunita Williams
- (3) Suryamani
- (4) Bacchhendri Pal

उस पहली भारतीय महिला का नाम, जिन्होंने एवरेस्ट पर्वत की चोटी पर कदम रखा और राष्ट्रीय ध्वज (तिरंगा) गाड़ा तथा कई फोटो भी खींचीं, है

- (1) कर्णम मल्लेश्वरी
- (2) सुनीता विलियम्स
- (3) सूर्यमणि
- (4) बछेन्द्री पाल

[Question ID = 65][Question Description = CTET_P1_PART_3_EVS_SET_102_Q65]

1. 1 [Option ID = 257]
2. 2 [Option ID = 258]
3. 3 [Option ID = 259]
4. 4 [Option ID = 260]

6) Which of the following statement(s) is/are true regarding Manipur ?

- A. Manipur means 'Land of Jewels'.
- B. Lavani is the folk dance of Manipur.
- C. Loktak lake is known for circular floating swamps called phumdis.
- D. Manipur is the largest producer of bamboo products.

- (1) A only
- (2) A, C and D
- (3) A, B and C
- (4) A and C

निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथन मणिपुर के सम्बन्ध में सही है/हैं ?

- A. मणिपुर का अर्थ है 'जेवरों का देश' ।
- B. लावनी मणिपुर का लोक नृत्य है ।
- C. लोकटक ताल जाना जाता है फुमदी नामक गोलाकार तैरते हुए दलदलों के लिए ।
- D. मणिपुर बाँस के उत्पादों का सबसे बड़ा उत्पादक है ।

(1) केवल A

(2) A, C और D

(3) A, B और C

(4) A और C

[Question ID = 66][Question Description = CTET_P1_PART_3_EVS_SET_102_Q66]

- 1. 1 [Option ID = 261]
- 2. 2 [Option ID = 262]
- 3. 3 [Option ID = 263]
- 4. 4 [Option ID = 264]

7) Work is something we do to

- A. earn fame
- B. have fun
- C. support oneself and others
- D. save energy

(1) A and B

(2) B and C

(3) C only

(4) C and D

कार्य ऐसी चीज़ है जो हम करते हैं

- A. यश कमाने के लिए
- B. मनोरंजन के लिए
- C. अपने को व अन्य लोगों को सहारा/भरण-पोषण के लिए
- D. ऊर्जा बचाने के लिए

(1) A और B

(2) B और C

(3) केवल C

(4) C और D

[Question ID = 67][Question Description = CTET_P1_PART_3_EVS_SET_102_Q67]

- 1. 1 [Option ID = 265]
- 2. 2 [Option ID = 266]
- 3. 3 [Option ID = 267]
- 4. 4 [Option ID = 268]

- 8) Which of the following is true about an elephant herd ?
- A. Their herd always has two or more old male elephants in it.
 - B. Their herd has all male elephants and baby elephants living with female elephants.
 - C. Male elephants live in the herd till they are 14-15 years old.
 - D. Their herd has only female and baby elephants.

Choose the correct option :

- (1) A and B
- (2) B and C
- (3) C and D
- (4) A and D

हाथियों के झुंड के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा सही है ?

- A. उनके झुंड में हमेशा दो या उससे अधिक नर हाथी होते हैं।
- B. उनके झुंड में सारे नर हाथी होते हैं तथा हाथी के बच्चे मादा हाथियों के साथ रहते हैं।
- C. नर हाथी झुंड के साथ 14-15 वर्ष की आयु तक रहते हैं।
- D. उनके झुंड में केवल मादाएँ तथा हाथियों के बच्चे रहते हैं।

सही विकल्प का चयन कीजिए :

- (1) A तथा B
- (2) B तथा C
- (3) C तथा D
- (4) A तथा D

[Question ID = 68][Question Description = CTET_P1_PART_3_EVS_SET_102_Q68]

- 1. 1 [Option ID = 269]
- 2. 2 [Option ID = 270]
- 3. 3 [Option ID = 271]
- 4. 4 [Option ID = 272]

- 9) In the textbook for class V a map of Golconda Fort is given. On the right bottom of the map following scale is printed.

Scale 1 cm = 110 metre

If on the map the distance between the Fateh Darwaza and Patancheru Darwaza is 15.2 cm, the actual distance between these two places is

- (1) 1.520 km
- (2) 1.652 km
- (3) 1.672 km
- (4) 16.72 km

कक्षा V की पाठ्यपुस्तक में गोलकोंडा किले का मानचित्र दिया गया है। इस पर दाहिने नीचे की ओर पैमाना छपा है।

पैमाना 1 सेमी = 110 मीटर

यदि इस मानचित्र पर फतेह दरवाजा और पटनचेरु दरवाजा के बीच की दूरी 15.2 सेमी है, तो इन दोनों स्थानों के बीच की वास्तविक दूरी है

- (1) 1.520 किलोमीटर
- (2) 1.652 किलोमीटर
- (3) 1.672 किलोमीटर
- (4) 16.72 किलोमीटर

[Question ID = 69][Question Description = CTET_P1_PART_3_EVS_SET_102_Q69]

- 1. 1 [Option ID = 273]
- 2. 2 [Option ID = 274]
- 3. 3 [Option ID = 275]
- 4. 4 [Option ID = 276]

10) Sona's friend Tara is from Mizoram. Tara has difficulty in speaking Hindi because in Mizoram the main languages spoken are

- (1) Khasi, Assamese
- (2) Mizo, Lusei, Kuki
- (3) Meiteilon, English
- (4) Mao, Bengali

सोना की सहेली तारा मिज़ोरम से है। तारा को हिन्दी बोलने में परेशानी होती है क्योंकि मिज़ोरम में बोली जाने वाली प्रमुख भाषाएँ हैं

- (1) खासी, असमी
- (2) मिज़ो, लूसेई, कुकी
- (3) मेतेलॉन, अंग्रेजी
- (4) माओ, बंगाली

[Question ID = 70][Question Description = CTET_P1_PART_3_EVS_SET_102_Q70]

- 1. 1 [Option ID = 277]
- 2. 2 [Option ID = 278]
- 3. 3 [Option ID = 279]
- 4. 4 [Option ID = 280]

11) Petroleum and Coal are known as non-renewable fuels because they

- (1) cause pollution
- (2) are expensive
- (3) are obtained through fractional distillation
- (4) take many years to form

पेट्रोलियम तथा कोयले को अनवीकरणीय ईंधन कहा जाता है क्योंकि ये

- (1) प्रदूषण फैलाते हैं
- (2) महुँगे होते हैं
- (3) प्रभाजी आसवन के द्वारा प्राप्त किए जाते हैं
- (4) बनने में कई साल लगते हैं

[Question ID = 71][Question Description = CTET_P1_PART_3_EVS_SET_102_Q71]

1. 1 [Option ID = 281]
2. 2 [Option ID = 282]
3. 3 [Option ID = 283]
4. 4 [Option ID = 284]

12) Mountaineers carry oxygen cylinders with them because they need it for

- (1) Cooking food as availability of fuel is less in mountains.
- (2) Keeping them warm by burning oxygen in it.
- (3) breathing as less oxygen is available at high altitudes.
- (4) Putting up support for tents.

पर्वतारोही अपने साथ ऑक्सीजन सिलिंडर ले जाते हैं क्योंकि उन्हें इसकी जरूरत होती है

- (1) खाना पकाने के लिए क्योंकि पर्वतों में ईंधन की उपलब्धता कम होती है।
- (2) अपने को गर्म रखने के लिए उसमें उपस्थित ऑक्सीजन को जला कर।
- (3) साँस लेने के लिए क्योंकि अधिक ऊँचाइयों पर ऑक्सीजन की मात्रा कम मिलती है।
- (4) टेंट लगाने के लिए सहारे के रूप में।

[Question ID = 72][Question Description = CTET_P1_PART_3_EVS_SET_102_Q72]

1. 1 [Option ID = 285]
2. 2 [Option ID = 286]
3. 3 [Option ID = 287]
4. 4 [Option ID = 288]

13) Three Indian states having coast on the Arabian Sea are

- (1) Karnataka, Tamil Nadu, Andhra Pradesh
- (2) Maharashtra, Karnataka, Puducherry
- (3) Goa, Maharashtra, Kerala
- (4) Telangana, Kerala, Karnataka

अरब सागर के तीन भारतीय तटवर्ती प्रदेश (राज्य) हैं

- (1) कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश
- (2) महाराष्ट्र, कर्नाटक, पुदुचेरी
- (3) गोआ, महाराष्ट्र, केरल
- (4) तेलंगाना, केरल, कर्नाटक

[Question ID = 73][Question Description = CTET_P1_PART_3_EVS_SET_102_Q73]

1. 1 [Option ID = 289]

2. 2 [Option ID = 290]
3. 3 [Option ID = 291]
4. 4 [Option ID = 292]

14) The traditional dance of Rajasthan where veiled women dancers balance seven to nine brass pots on their head is known as

- (1) Kalbelia
- (2) Kathak
- (3) Terah Taali
- (4) Bhavai

राजस्थान का पारम्परिक नृत्य जिसमें घूँघट वाली महिला नृत्यांगनाएँ सिर पर सात से नौ पीतल के घड़ों को संभालती हैं, कहलाता है

- (1) कालबेलिया
- (2) कथक
- (3) तेरह ताली
- (4) भवाई

[Question ID = 74][Question Description = CTET_P1_PART_3_EVS_SET_102_Q74]

1. 1 [Option ID = 293]
2. 2 [Option ID = 294]
3. 3 [Option ID = 295]
4. 4 [Option ID = 296]

15) Madhubani is a famous

- A. Lake in Rajasthan
- B. Shawl from Bihar
- C. Woven saree from Andhra Pradesh
- D. Form of folk art Paintings from Bihar
- E. Place in Bihar

- (1) A and B
- (2) B and C
- (3) B, D and E
- (4) D and E

मधुबनी एक प्रसिद्ध

- A. झील है राजस्थान में
- B. बिहार की शॉल है
- C. आंध्र प्रदेश की बुनी हुई साड़ी है
- D. बिहार की एक प्रकार की लोक-कला चित्रकारी है
- E. बिहार का एक स्थान है

(1) A और B

(2) B और C

(3) B, D और E

(4) D और E

[Question ID = 75][Question Description = CTET_P1_PART_3_EVS_SET_102_Q75]

- 1. 1 [Option ID = 297]
- 2. 2 [Option ID = 298]
- 3. 3 [Option ID = 299]
- 4. 4 [Option ID = 300]

Topic:- EVS_Q76-90_P1_CTET

- 1) Shobhit observes a picture in a book where girls are shown playing with pebbles and boys are shown playing cricket. He asks his teacher that why are boys and girls playing separately ? Why are boys not playing pebbles ? Why are girls not playing cricket ? Which of the following EVS teaching objectives are included in this event ?
- A. Development of higher level critical thinking.
 - B. Development of broad cultural attitude and aesthetic sensitivity.
 - C. Development of an understanding based on observation and picturization.
 - D. Development of cognitive ability for generating curiosity about a social event.
- (1) A, B and C
- (2) B, C and D
- (3) A, B and D
- (4) A, C and D

शोभित किताब में एक चित्र देखता है, जिसमें लड़कियों को गोटियाँ खेलते तथा लड़कों को क्रिकेट खेलते हुए दिखाया गया है। वह अपने अध्यापक से पूछता है कि लड़के और लड़कियाँ अलग-अलग क्यों खेल रहे हैं ? लड़के गोटियाँ क्यों नहीं खेल रहे हैं ? लड़कियाँ क्रिकेट क्यों नहीं खेल रही हैं ?

निम्नलिखित में से कौन-से पर्यावरण अध्ययन शिक्षण उद्देश्य इस घटना में सम्मिलित हैं ?

- A. उच्च स्तरीय आलोचनात्मक सोच विकसित करना।
- B. व्यापक सांस्कृतिक नज़रिया एवं सौन्दर्य के प्रति संवेदना विकसित करना।
- C. अवलोकन और चित्रण के आधार पर समझ विकसित करना।
- D. सामाजिक घटना के बारे में जिज्ञासु बनाने के लिए संज्ञानात्मक क्षमता विकसित करना।

(1) A, B और C

(2) B, C और D

(3) A, B और D

(4) A, C और D

[Question ID = 76][Question Description = CTET_P1_PART_3_EVS_SET_102_Q76]

- 1. 1 [Option ID = 301]
- 2. 2 [Option ID = 302]
- 3. 3 [Option ID = 303]
- 4. 4 [Option ID = 304]

2) As an EVS teacher, you want to introduce the theme of 'Seasons' to your learners of class II. Which one of the following would be the best pedagogic strategy ?

- (1) Use charts and books to explain the concept of seasons
- (2) Use videos of seasons to later explain seasons on blackboard
- (3) Use newspapers to read about articles on seasons
- (4) Use food habits, clothes worn and relevant local literature to develop interest in seasons

पर्यावरण अध्ययन के एक शिक्षक के रूप में, आप कक्षा II के अपने विद्यार्थियों के समक्ष विषय 'ऋतुएँ' प्रस्तावित करना चाहते हैं। निम्नलिखित में से कौन एक उत्तम शिक्षणशास्त्रीय युक्ति होगी ?

- (1) संप्रत्यय ऋतुएँ समझाने के लिए चार्ट एवं पुस्तकों का उपयोग
- (2) श्यामपट्ट पर लिखे विषय ऋतुएँ को बाद में समझाने के लिए ऋतुओं के वीडियो का उपयोग
- (3) ऋतुओं पर लिखे लेख पढ़ने के लिए समाचार-पत्रों का उपयोग
- (4) ऋतुओं के विषय में रुचि का विकास करने के लिए भोजन की आदतों, पहनने के वस्त्रों और संदर्भित स्थानीय साहित्य का उपयोग

[Question ID = 77][Question Description = CTET_P1_PART_3_EVS_SET_102_Q77]

- 1. 1 [Option ID = 305]
- 2. 2 [Option ID = 306]

3. 3 [Option ID = 307]

4. 4 [Option ID = 308]

3) Which of the following statements are the correct description of the nature of assessment ?

- A. It is a part of teaching-learning process, that is continuous.
- B. It acquaints about the achievement level of students and what they don't know.
- C. It diagnoses the hindrances in learning and helps in their removal.
- D. It acquaints about the tendency to learn, interests and prior experiences of students.

(1) A, B and C

(2) B, C and D

(3) A, C and D

(4) A, B and D

निम्नलिखित में से कौन-से कथन आकलन की प्रकृति की सही व्याख्या करते हैं ?

- A. शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया का एक अंग है, जो सतत चलता रहता है।
- B. विद्यार्थियों के उपलब्धि स्तर तथा उन्हें क्या नहीं आता है, के बारे में अवगत कराता है।
- C. सीखने में आई बाधाओं का पता लगाकर उन्हें दूर करने में सहायक है।
- D. विद्यार्थियों की सीखने की प्रवृत्ति, रुचि एवं पूर्व अनुभवों के बारे में अवगत कराता है।

(1) A, B और C

(2) B, C और D

(3) A, C और D

(4) A, B और D

[Question ID = 78][Question Description = CTET_P1_PART_3_EVS_SET_102_Q78]

1. 1 [Option ID = 309]

2. 2 [Option ID = 310]

3. 3 [Option ID = 311]

4. 4 [Option ID = 312]

4) As EVS teacher of class V, in the chapter 'Walls Tell Stories' you need to introduce learners to historical monuments, which method you think will suit best ?

- (1) Virtual tours, online games and quiz related to historical monuments
- (2) Passage reading on historical monuments
- (3) Visits to local historical monuments followed by discussion
- (4) Lecture discussion method to explain the past of historical monuments

कक्षा V के पर्यावरण अध्ययन शिक्षक के रूप में, पाठ 'बोलती इमारतें' के लिए आपको विद्यार्थियों को ऐतिहासिक इमारतों को प्रस्तुत करने की आवश्यकता है, आप क्या सोचते हैं कि कौन-सी विधि सर्वथा उत्तम होगी ?

- (1) ऐतिहासिक इमारतों से संबंधित आभासी सैर, ऑन-लाइन खेल और पहेली
- (2) ऐतिहासिक इमारतों पर परिच्छेद पठन
- (3) स्थानीय ऐतिहासिक इमारतों का भ्रमण और तत्पश्चात् उन पर चर्चा
- (4) ऐतिहासिक इमारतों का भूतकाल समझाने के लिए व्याख्यान-चर्चा विधि

[Question ID = 79][Question Description = CTET_P1_PART_3_EVS_SET_102_Q79]

1. 1 [Option ID = 313]
2. 2 [Option ID = 314]
3. 3 [Option ID = 315]
4. 4 [Option ID = 316]

5) A teacher asked students to draw an ant. Some students made 4 legs of ant while some made 6 and some 8 legs. What should the teacher do ?

- (1) Tell them that ants have 6 legs and not 4 or 8 legs
- (2) Tell them that students who made 6 legs are correct and all other students are wrong
- (3) Show them a picture of an ant and ask them to observe the number of legs
- (4) Give them a magnifying lens and ask to them observe the number of legs in an ant

अध्यापक विद्यार्थियों से एक चींटी का चित्र बनाने को कहते हैं। कुछ विद्यार्थी चींटी के चार पैर बनाते हैं, जबकि कुछ छह और कुछ आठ पैर बनाते हैं। अध्यापक को क्या करना चाहिए ?

- (1) यह कहना चाहिए कि चींटी के छह पैर होते हैं, चार या आठ नहीं होते
- (2) यह कहना चाहिए कि जिन विद्यार्थियों ने छह पैर बनाए हैं, वे सही हैं और बाकी सभी विद्यार्थी गलत हैं
- (3) उन्हें चींटी का चित्र दिखाकर पैरों की संख्या देखने के लिए कहना चाहिए
- (4) उन्हें आवर्धक लेंस देकर, चींटी के पैरों की संख्या को देखने के लिए कहना चाहिए

[Question ID = 80][Question Description = CTET_P1_PART_3_EVS_SET_102_Q80]

1. 1 [Option ID = 317]
2. 2 [Option ID = 318]
3. 3 [Option ID = 319]
4. 4 [Option ID = 320]

6) As an EVS teacher of class IV, you have to introduce the concept of astronauts to learners. Which method will you follow ?

- (1) Explain the definition of astronaut and ask students to memorise
- (2) Deliver a lecture on astronauts
- (3) Share biographies of astronauts of India and then highlight main features
- (4) Share stories on astronauts to help students understand the concept

कक्षा IV के पर्यावरण अध्ययन के शिक्षक के रूप में, आपको विद्यार्थियों को अंतरिक्षयात्रियों का संप्रत्यय प्रस्तावित करना है। इसलिए आप कौन-से प्रक्रम का अनुसरण करेंगे ?

- (1) विद्यार्थियों को अंतरिक्षयात्रियों की परिभाषा समझाइए और याद करने के लिए कहिए
- (2) अंतरिक्षयात्रियों पर एक व्याख्यान दीजिए
- (3) भारत के अंतरिक्षयात्रियों की आत्मकथाएँ साझा कीजिए और उनकी मुख्य विशेषताओं को इंगित कीजिए
- (4) अंतरिक्षयात्रियों की कहानियाँ साझा कीजिए और विद्यार्थियों को विषय को समझने में सहायता कीजिए

[Question ID = 81][Question Description = CTET_P1_PART_3_EVS_SET_102_Q81]

1. 1 [Option ID = 321]
2. 2 [Option ID = 322]
3. 3 [Option ID = 323]
4. 4 [Option ID = 324]

7) Yash asked his teacher, "Why some food-product packets are labelled with red while some food-product packets are labelled with green dot ?". Teacher explained that green dot indicates vegetarian food while red dot indicates non-vegetarian food. She asked students to observe various food-product packets and enlist them as vegetarian and non-vegetarian. Which of the following processes are involved in this activity ?

- A. Identification
- B. Imagination
- C. Bias
- D. Classification

- (1) A and B
- (2) B and C
- (3) C and D
- (4) A and D

यश ने अपने अध्यापक से पूछा, “कुछ भोजन उत्पादों के पैकेट पर हरे गोले क्यों हैं, जबकि कुछ भोजन उत्पादों के पैकेट पर लाल गोले बने हैं ?” । अध्यापक समझाते हैं कि हरे गोले शाकाहारी खाने तथा लाल गोले मांसाहारी खाने को सूचित करते हैं । अध्यापक ने विद्यार्थियों को विभिन्न भोजन उत्पादों के पैकेट देखकर उन्हें शाकाहारी अथवा मांसाहारी में सूचीबद्ध करने को कहा । इस गतिविधि में निम्नलिखित में से कौन-सी प्रक्रियाएँ शामिल हैं ?

- A. पहचान
- B. कल्पना
- C. पूर्वाग्रह
- D. वर्गीकरण

(1) A और B

(2) B और C

(3) C और D

(4) A और D

[Question ID = 82][Question Description = CTET_P1_PART_3_EVS_SET_102_Q82]

- 1. 1 [Option ID = 325]
- 2. 2 [Option ID = 326]
- 3. 3 [Option ID = 327]
- 4. 4 [Option ID = 328]

8) As an EVS teacher, you decide to familiarise students with contemporary issues related to environment. Which one of the following would you prefer ?

- (1) Ask students to watch news channels
- (2) Ask students to subscribe to newspapers at home
- (3) Relate relevant articles in class and also share them
- (4) Talk to parents to ensure newspaper reading at home

एक पर्यावरण अध्ययन शिक्षक के रूप में, अपने विद्यार्थियों को पर्यावरण से संबंधित समकालीन मुद्दों से परिचित करवाना है । निम्नलिखित में से आप किसे प्राथमिकता देंगे ?

- (1) विद्यार्थियों को समाचार चैनल देखने के लिए कहेंगे
- (2) विद्यार्थियों को घर पर समाचार-पत्रों का ग्राहक बनने के लिए कहेंगे
- (3) कक्षा में संबंधित लेखों का उल्लेख करेंगे एवं उनको साझा भी करेंगे
- (4) घर पर समाचार-पत्र पठन को सुनिश्चित करने के लिए माता-पिता से बात करेंगे

[Question ID = 83][Question Description = CTET_P1_PART_3_EVS_SET_102_Q83]

- 1. 1 [Option ID = 329]
- 2. 2 [Option ID = 330]
- 3. 3 [Option ID = 331]
- 4. 4 [Option ID = 332]

9) John is forming animal shadows with the help of his hands and asks students to guess which animal is being formed in the shadow. Which of the following processes are involved in this activity ?

- A. Prediction
- B. Observation
- C. Inference
- D. Description

(1) A, B and D

(2) A, B and C

(3) C and D

(4) A and D

जॉन अपने हाथों की सहायता से जंतुओं की परछाई बना रहा है और वह विद्यार्थियों से यह अंदाजा लगाने को कहता है कि परछाई में कौन-सा जानवर बन रहा है। इस गतिविधि में निम्नलिखित में से कौन-सी प्रक्रियाएँ शामिल हैं ?

- A. अनुमान
- B. अवलोकन
- C. निष्कर्ष
- D. वर्णन

(1) A, B और D

(2) A, B और C

(3) C और D

(4) A और D

[Question ID = 84][Question Description = CTET_P1_PART_3_EVS_SET_102_Q84]

- 1. 1 [Option ID = 333]
- 2. 2 [Option ID = 334]
- 3. 3 [Option ID = 335]
- 4. 4 [Option ID = 336]

10) Integrated perspective in EVS denotes which of the following ?

- (1) Draw insights from science and social studies
- (2) Draw insights from social studies and environment education
- (3) Draw insights from science and environment education
- (4) Draw insights from science, social studies and environment education

पर्यावरण अध्ययन में एकीकृत/संगठित परिप्रेक्ष्य, निम्नलिखित में से किसे निर्दिष्ट करता है ?

- (1) विज्ञान एवं सामाजिक अध्ययन से पूरी जानकारी
- (2) सामाजिक अध्ययन एवं पर्यावरण शिक्षा से पूरी जानकारी
- (3) विज्ञान एवं पर्यावरण शिक्षा से पूरी जानकारी
- (4) विज्ञान, सामाजिक अध्ययन एवं पर्यावरण शिक्षा से पूरी जानकारी

[Question ID = 85][Question Description = CTET_P1_PART_3_EVS_SET_102_Q85]

- 1. 1 [Option ID = 337]
- 2. 2 [Option ID = 338]
- 3. 3 [Option ID = 339]
- 4. 4 [Option ID = 340]

11) Rini asked his teacher, "Why are the stems of plants round and not square shaped ?" What should the teacher do ?

- A. Teacher should tell students that they will learn about this in higher classes.
- B. Teacher should explain students that the reason of round stems is the gravity.
- C. Teacher should ask students to think about the reason for the round shape of stem.
- D. Teacher should take students for a garden visit and ask to observe the shape of various stems.

- (1) A and B
- (2) B and C
- (3) C and D
- (4) A and D

रिनी ने अध्यापक से पूछा, "पौधों के तने गोल क्यों होते हैं, चौकोर क्यों नहीं" ? अध्यापक को क्या करना चाहिए ?

- A. अध्यापक को विद्यार्थियों से कहना चाहिए कि वे इस बारे में उच्च कक्षाओं में सीखेंगे ।
- B. अध्यापक को विद्यार्थियों को समझाना चाहिए कि गोल तने का कारण गुरुत्वाकर्षण है ।
- C. अध्यापक को विद्यार्थियों से तने के गोल आकार होने के कारण सोचने के बारे में कहना चाहिए ।
- D. अध्यापक को विद्यार्थियों को बाग में घूमने ले जाना चाहिए तथा विभिन्न तनों के आकार देखने के लिए कहना चाहिए ।

(1) A और B

(2) B और C

(3) C और D

(4) A और D

[Question ID = 86][Question Description = CTET_P1_PART_3_EVS_SET_102_Q86]

- 1. 1 [Option ID = 341]
- 2. 2 [Option ID = 342]
- 3. 3 [Option ID = 343]
- 4. 4 [Option ID = 344]

12) Which of the following methods can be effective in transaction of EVS ?

- A. Chalk and Talk method
- B. Lecture method
- C. Role play
- D. Story telling

(1) A and B

(2) B and C

(3) C and D

(4) A, B, C and D

निम्नलिखित में से कौन-सी विधियाँ पर्यावरण अध्ययन के सम्पादन में प्रभावी हो सकती हैं ?

- A. चॉक एवं टॉक विधि
- B. व्याख्यान विधि
- C. भूमिका निर्वहन
- D. कहानी सुनाना

(1) A और B

(2) B और C

(3) C और D

(4) A, B, C और D

[Question ID = 87][Question Description = CTET_P1_PART_3_EVS_SET_102_Q87]

- 1. 1 [Option ID = 345]
- 2. 2 [Option ID = 346]
- 3. 3 [Option ID = 347]
- 4. 4 [Option ID = 348]

13) An EVS teacher asked students to write a poem describing their mother. Pammi read her poem, "My mother is sweet like sugar and honey". Some students don't know the meaning of sugar and honey.

What will you do if you are Pammi's teacher ?

- (1) Bring sugar and honey and make the students eat
- (2) Tell students meaning of sugar and honey in local language
- (3) Bring sugar and honey and show them to students
- (4) Explain students how sugar and honey are made

एक पर्यावरण अध्ययन अध्यापक विद्यार्थियों को उनकी मम्मी का वर्णन करने वाली कविता लिखने को कहती है। पम्मी अपनी कविता पढ़ती है, "मेरी मम्मी मीठी है, जैसे मिष्टी दोई"। कुछ विद्यार्थी मिष्टी दोई का अर्थ नहीं जानते हैं।

यदि आप पम्मी के अध्यापक हैं, तो आप क्या करेंगे ?

- (1) विद्यार्थियों को मिष्टी दोई लाकर खिलाएँगे
- (2) विद्यार्थियों को मिष्टी दोई का अर्थ स्थानीय भाषा में बताएँगे
- (3) विद्यार्थियों को मिष्टी दोई लाकर दिखाएँगे
- (4) विद्यार्थियों को मिष्टी दोई कैसे बनता है समझाएँगे

[Question ID = 88][Question Description = CTET_P1_PART_3_EVS_SET_102_Q88]

- 1. 1 [Option ID = 349]
- 2. 2 [Option ID = 350]
- 3. 3 [Option ID = 351]
- 4. 4 [Option ID = 352]

14) Characteristic of a good EVS curriculum at primary level is to

- (1) engage learners in inventing new products
- (2) focus on acquiring knowledge
- (3) develop socio-emotional skills learners
- (4) help learners to earn their livelihood

प्राथमिक स्तर पर एक अच्छे पर्यावरण अध्ययन के पाठ्यचर्या की विशेषता है

- (1) विद्यार्थियों को नए उत्पादों के आविष्कार में लगाना
- (2) ज्ञान अर्जित करने पर केन्द्रित होना
- (3) विद्यार्थियों में सामाजिक-भावनात्मक कौशलों को विकसित करना
- (4) विद्यार्थियों को जीविकोपार्जन में सहायता करना

[Question ID = 89][Question Description = CTET_P1_PART_3_EVS_SET_102_Q89]

1. 1 [Option ID = 353]
2. 2 [Option ID = 354]
3. 3 [Option ID = 355]
4. 4 [Option ID = 356]

15) In EVS group discussion should be conducted, this creates meaningful knowledge. Which of the following statement best describes this fact ?

- (1) Learning is facilitated due to social contact.
- (2) Thoughts and experiences are shared with others.
- (3) Every child is free to express his/her view.
- (4) Every response is accepted without criticism.

पर्यावरण अध्ययन में समूह-चर्चा कराना चाहिए, इससे सार्थक ज्ञान का निर्माण होता है।

निम्नलिखित में से कौन-सा कथन इस तथ्य की सर्वोत्तम व्याख्या है ?

- (1) सामाजिक संपर्क के माध्यम से अधिगम सरल हो जाता है।
- (2) विचार और अनुभव दूसरों के साथ साझा किए जाते हैं।
- (3) प्रत्येक बच्चा अपनी राय व्यक्त करने हेतु स्वतंत्र है।
- (4) प्रत्येक प्रतिक्रिया को बिना आलोचना स्वीकार किया जाता है।

[Question ID = 90][Question Description = CTET_P1_PART_3_EVS_SET_102_Q90]

1. 1 [Option ID = 357]
2. 2 [Option ID = 358]
3. 3 [Option ID = 359]
4. 4 [Option ID = 360]

Topic:- Sanskrit_Q91-99_L1_P1_CTET

1) **निर्देश:** : अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा तदाधारितप्रश्नानां विकल्पात्मकोत्तरेषु उचिततमम् उत्तरं चित्वा लिखत ।

एकदा एकः नृपः कश्मिंश्चिद् अरण्ये मृगयार्थं गतवान् आसीत् । सः सपरिवारं आमात्यादिभिः सह तत्र गतवान् आसीत् । वन्यजीवान् अनुसरन् सः नृपः वने परिवारात् आमात्यादिभ्यः दूरम्

अगच्छत् । यदा आमात्याः राजानाम् न अपश्यन् ते सर्वे तं अन्वेष्टुम् इतस्ततः अभ्रमन् । नृपम् अन्वेष्टुम् आमात्येन प्रेषितः एकः सैनिकः अरण्यस्य मध्ये एकस्मिन् वृक्षस्य तले ध्यानमग्नं अन्धं साधुम् अपश्यत् । गर्वितः सः सैनिकः ध्यानमग्नं साधुम् अवदत् – रे अन्ध! किं त्वम् इतः आगतम् अस्माकं राजानम् अपश्यः ? । साधुः उवाच – अन्धोऽहम् । कथं द्रष्टुं समर्थः अस्मि । आम् जानामि त्वं अन्धः असि तथापि बधिरः तु नास्ति ? किं त्वया अश्वपदध्वनिः अपि न श्रुतः । साधुः तं सैनिकं प्रत्युत्तरत् – न कोऽपि राजा अत्र मया दृष्टः । ततः दुर्वचनानि श्रावयित्वा सः सैनिकः तस्मात् स्थानात् निर्गतः ।

ततः नृपस्य अन्वेषणं कृत्वा सेनापतिः तत्र उपस्थितः अभवत् । सः साधुम् अपृच्छत् – भो साधुः! अपि अस्माकं नृपतिः अत्र आगतः ? “नृपतिस्तु न आगतः परन्तु एकः सैनिकः राजानम् अन्विष्यन् उत्तरदिशायां अगच्छत्” सः साधुः अवदत् । एतत् वचनम् आकर्ण्य सः सेनापतिः अन्य दिशायाम् अन्वेषणार्थं निरगच्छत् । अनन्तरं रथारूढः प्रधान आमात्यः अपि तत्र आगतः । सः रथात् अवतीर्य सविनयं साधुम् अपृच्छत् – भो मुनिवर! अस्मिन् दुर्गमवने वयं नृपतिना सह मृगयार्थं आगताः स्मः । परं दुर्भाग्येण ते अस्मात् वियुक्ताः जाताः । साधुः अवदत् – अस्मिन् विषये अहं किमपि न जानामि । तदा तैराश्वमुपगतः प्रधानामात्यः अपि अन्यत्र दिशायां निरगच्छत् ।

ततः यत्र सः साधुः उपविष्टः तत्र परिश्रान्तो राजा उपस्थितः जातः । करबद्धः राजा अकथयत् – हे भगवन्! तृषार्तः अहम् । किञ्चित् जलं पातुम् इच्छामि । तदा साधुः अवदत् – भवतां स्वागतं राजन् । परिश्रान्तो लक्ष्यसे भवान् । अतः सहसा जलस्य पानं मा कुरु । किञ्चित् कन्दमूलफलानि भुक्त्वा जलस्य पानं कर्तव्यम् । साधुः एतद् वचनं श्रुत्वा सविस्मयं राजा अपृच्छत् – ननु नेत्रहीनो भूत्वा अपि भवता अहं राजा इति कथं विज्ञातम् ? माम् अन्वेष्टुं कश्चिद् आगतः किम् ? तत् श्रुत्वा हसित्वा साधुः अब्रवीत् – प्रथमं तु सैनिकः भवन्तम् अन्वेष्टुम् आगतः आसीत् । तत्पश्चात् सेनापतिः ततः प्रधानामात्यः, अधुना भवान् अत्र उपस्थितः ।

तदा राजा अपृच्छत् – भगवन् तेषाम् अधिकारिणः पदानि अपि कथम् अभिज्ञातानि । साधुः प्रत्युत्तरत् – तैः प्रयुक्तैः शब्दविशेषैः । सैनिकः मां “रे अन्धः” इति उक्तम् । सेनापतिः “भोः साधुः” सम्बोधितवान् । तत्पश्चात् प्रधानामात्यः माम् आदरपूर्वकं “भोः मुनिवर” इति अब्रवीत् । भवता सप्रणामं प्रेमपूर्वकं “हे भगवन्” इति गौरवपदं प्रयुक्तम् । हे राजन्! आदरवचांसि शीलं श्रेष्ठतां च द्योतयन्ति ।

धन्यः खलु भवान्, येन शब्दमात्रेण शीलस्य परीक्षणं कृतम् । इत्युक्त्वा तं ऋषिवरं प्रणम्य नृपः स्वनगरं प्रतिनिवृत्तः ।

शीलस्य परीक्षणम् केन क्रियते ?

(1) आदरवचसा

(2) दानेन

(3) हसनेन

(4) गायनेन

1. 1 [Option ID = 2161]
2. 2 [Option ID = 2162]
3. 3 [Option ID = 2163]
4. 4 [Option ID = 2164]

2) **निर्देशः** : अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा तदाधारितप्रश्नानां विकल्पात्मकोत्तरेषु उचिततमम् उत्तरं चित्वा लिखत ।

एकदा एकः नृपः कश्मिंश्चिद् अरण्ये मृगयार्थं गतवान् आसीत् । सः सपरिवारं आमात्यादिभिः सह तत्र गतवान् आसीत् । वन्यजीवान् अनुसरन् सः नृपः वने परिवारात् आमात्यादिभ्यः दूरम् अगच्छत् । यदा आमात्याः राजानाम् न अपश्यन् ते सर्वे तं अन्वेष्टुम् इतस्ततः अभ्रमन् । नृपम् अन्वेष्टुम् आमात्येन प्रेषितः एकः सैनिकः अरण्यस्य मध्ये एकस्मिन् वृक्षस्य तले ध्यानमग्नं अन्धं साधुम् अपश्यत् । गर्वितः सः सैनिकः ध्यानमग्नं साधुम् अवदत् — रे अन्ध! किं त्वम् इतः आगतम् अस्माकं राजानम् अपश्यः ? । साधुः उवाच — अन्धोऽहम् । कथं द्रष्टुं समर्थः अस्मि । आम् जानामि त्वं अन्धः असि तथापि बधिरः तु नास्ति ? किं त्वया अश्वपदध्वनिः अपि न श्रुतः । साधुः तं सैनिकं प्रत्युत्तरत् — न कोऽपि राजा अत्र मया दृष्टः । ततः दुर्वचनानि श्रावयित्वा सः सैनिकः तस्मात् स्थानात् निर्गतः ।

ततः नृपस्य अन्वेषणं कृत्वा सेनापतिः तत्र उपस्थितः अभवत् । सः साधुम् अपृच्छत् — भो साधुः! अपि अस्माकं नृपतिः अत्र आगतः ? “नृपतिस्तु न आगतः परन्तु एकः सैनिकः राजानम् अन्विष्यन् उत्तरदिशायां अगच्छत्” सः साधुः अवदत् । एतत् वचनम् आकर्ण्य सः सेनापतिः अन्य दिशायाम् अन्वेषणार्थं निरगच्छत् । अनन्तरं रथारूढः प्रधान आमात्यः अपि तत्र आगतः । सः रथात् अवतीर्य सविनयं साधुम् अपृच्छत् — भो मुनिवर! अस्मिन् दुर्गमवने वयं नृपतिना सह मृगयार्थं आगताः स्मः । परं दुर्भाग्येण ते अस्मात् वियुक्ताः जाताः । साधुः अवदत् — अस्मिन् विषये अहं किमपि न जानामि । तदा नैराश्यमुपगतः प्रधानामात्यः अपि अन्यत्र दिशायां निरगच्छत् ।

ततः यत्र सः साधुः उपविष्टः तत्र परिश्रान्तो राजा उपस्थितः जातः । करबद्धः राजा अकथयत् — हे भगवन्! तृषार्तः अहम् । किञ्चित् जलं पातुम् इच्छामि । तदा साधुः अवदत् — भवतां स्वागतं राजन् । परिश्रान्तो लक्ष्यसे भवान् । अतः सहसा जलस्य पानं मा कुरु । किञ्चित् कन्दमूलफलानि भुक्त्वा जलस्य पानं कर्तव्यम् । साधुः एतद् वचनं श्रुत्वा सविस्मयं राजा अपृच्छत् — ननु नेत्रहीनो भूत्वा अपि भवता अहं राजा इति कथं विज्ञातम् ? माम् अन्वेष्टुं कश्चिद् आगतः किम् ? तत् श्रुत्वा हसित्वा साधुः अब्रवीत् — प्रथमं तु सैनिकः भवन्तम् अन्वेष्टुम् आगतः आसीत् । तत्पश्चात् सेनापतिः ततः प्रधानामात्यः, अधुना भवान् अत्र उपस्थितः ।

तदा राजा अपृच्छत् — भगवन् तेषाम् अधिकारिणः पदानि अपि कथम् अभिज्ञातानि । साधुः प्रत्युत्तरत् — तैः प्रयुक्तैः शब्दविशेषैः । सैनिकः मां “रे अन्धः” इति उक्तम् । सेनापतिः “भोः साधुः” सम्बोधितवान् । तत्पश्चात् प्रधानामात्यः माम् आदरपूर्वकं “भोः मुनिवर” इति अब्रवीत् । भवता सप्रणामं प्रेमपूर्वकं “हे भगवन्” इति गौरवपदं प्रयुक्तम् । हे राजन्! आदरवचांसि शीलं श्रेष्ठतां च द्योतयन्ति ।

धन्यः खलु भवान्, येन शब्दमात्रेण शीलस्य परीक्षणं कृतम् । इत्युक्त्वा तं ऋषिवरं प्रणम्य नृपः स्वनगरं प्रतिनिवृत्तः ।

सैनिकः साधुम् किं उक्तवान् ?

(1) भोः साधुः

(2) रे अन्ध

(3) हे भगवन्

(4) भोः मुनिवरः

[Question ID = 542][Question Description = CTET_P1_PART_4_L1_SET_102_SANSKRIT_Q92]

1. 1 [Option ID = 2165]

2. 2 [Option ID = 2166]

3. 3 [Option ID = 2167]

4. 4 [Option ID = 2168]

3) **निर्देशः** : अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा तदाधारितप्रश्नानां विकल्पात्मकोत्तरेषु उचिततमम् उत्तरं चित्वा लिखत ।

एकदा एकः नृपः कश्मिंश्चिद् अरण्ये मृगयार्थं गतवान् आसीत् । सः सपरिवारं आमात्यादिभिः सह तत्र गतवान् आसीत् । वन्यजीवान् अनुसरन् सः नृपः वने परिवारात् आमात्यादिभ्यः दूरम् अगच्छत् । यदा आमात्याः राजानाम् न अपश्यन् ते सर्वे तं अन्वेष्टुम् इतस्ततः अभ्रमन् । नृपम् अन्वेष्टुम् आमात्येन प्रेषितः एकः सैनिकः अरण्यस्य मध्ये एकस्मिन् वृक्षस्य तले ध्यानमग्नं अन्धं साधुम् अपश्यत् । गर्वितः सः सैनिकः ध्यानमग्नं साधुम् अवदत् – रे अन्ध! किं त्वम् इतः आगतम् अस्माकं राजानम् अपश्यः ? । साधुः उवाच – अन्धोऽहम् । कथं द्रष्टुं समर्थः अस्मि । आम् जानामि त्वं अन्धः असि तथापि बधिरः तु नास्ति ? किं त्वया अश्वपदध्वनिः अपि न श्रुतः । साधुः तं सैनिकं प्रत्युत्तरत् – न कोऽपि राजा अत्र मया दृष्टः । ततः दुर्वचनानि श्रावयित्वा सः सैनिकः तस्मात् स्थानात् निर्गतः ।

ततः नृपस्य अन्वेषणं कृत्वा सेनापतिः तत्र उपस्थितः अभवत् । सः साधुम् अपृच्छत् – भो साधुः! अपि अस्माकं नृपतिः अत्र आगतः ? “नृपतिस्तु न आगतः परन्तु एकः सैनिकः राजानम् अन्विष्यन् उत्तरदिशायां अगच्छत्” सः साधुः अवदत् । एतत् वचनम् आकर्ण्य सः सेनापतिः अन्य दिशायां अन्वेषणार्थं निरगच्छत् । अनन्तरं रथारूढः प्रधान आमात्यः अपि तत्र आगतः । सः रथात् अवतीर्य सविनयं साधुम् अपृच्छत् – भो मुनिवर! अस्मिन् दुर्गमवने वयं नृपतिना सह मृगयार्थं आगताः स्मः । परं दुर्भाग्येण ते अस्मात् वियुक्ताः जाताः । साधुः अवदत् – अस्मिन् विषये अहं किमपि न जानामि । तदा नैराश्यमुपगतः प्रधानामात्यः अपि अन्यत्र दिशायां निरगच्छत् ।

ततः यत्र सः साधुः उपविष्टः तत्र परिश्रान्तो राजा उपस्थितः जातः । करबद्धः राजा अकथयत् – हे भगवन्! तृषार्तः अहम् । किञ्चित् जलं पातुम् इच्छामि । तदा साधुः अवदत् – भवतां स्वागतं राजन् । परिश्रान्तो लक्ष्यसे भवान् । अतः सहसा जलस्य पानं मा कुरु । किञ्चित् कन्दमूलफलानि भुक्त्वा जलस्य पानं कर्तव्यम् । साधोः एतद् वचनं श्रुत्वा सविस्मयं राजा अपृच्छत् – ननु नेत्रहीनो भूत्वा अपि भवता अहं राजा इति कथं विज्ञातम् ? माम् अन्वेष्टुं कश्चिद् आगतः किम् ? तत् श्रुत्वा हसित्वा साधुः अब्रवीत् – प्रथमं तु सैनिकः भवन्तम् अन्वेष्टुम् आगतः आसीत् । तत्पश्चात् सेनापतिः ततः प्रधानामात्यः, अधूना भवान् अत्र उपस्थितः ।

तदा राजा अपृच्छत् — भगवन् तेषाम् अधिकारिणः पदानि अपि कथम् अभिज्ञातानि । साधुः प्रत्युत्तरत् — तैः प्रयुक्तैः शब्दविशेषैः । सैनिकः मां “रे अन्धः” इति उक्तम् । सेनापतिः “भोः साधुः” सम्बोधितवान् । तत्पश्चात् प्रधानामात्यः माम् आदरपूर्वकं “भोः मुनिवर” इति अब्रवीत् । भवता सप्रणामं प्रेमपूर्वकं “हे भगवन्” इति गौरवपदं प्रयुक्तम् । हे राजन्! आदरवचांसि शीलं श्रेष्ठतां च द्योतयन्ति ।

धन्यः खलु भवान्, येन शब्दमात्रेण शीलस्य परीक्षणं कृतम् । इत्युक्त्वा तं ऋषिवरं प्रणम्य नृपः स्वनगरं प्रतिनिवृत्तः ।

अधोलिखितेषु पदेषु अव्ययपदं किं ?

(1) श्रुत्वा

(2) नृपः

(3) ननु

(4) भोः

[Question ID = 543][Question Description = CTET_P1_PART_4_L1_SET_102_SANSKRIT_Q93]

1. 1 [Option ID = 2169]
2. 2 [Option ID = 2170]
3. 3 [Option ID = 2171]
4. 4 [Option ID = 2172]

4) **निर्देशः** : अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा तदाधारितप्रश्नानां विकल्पात्मकोत्तरेषु उचिततमम् उत्तरं चित्वा लिखत ।

एकदा एकः नृपः कश्मिंश्चिद् अरण्ये मृगयार्थं गतवान् आसीत् । सः सपरिवारं आमात्यादिभिः सह तत्र गतवान् आसीत् । वन्यजीवान् अनुसरन् सः नृपः वने परिवारात् आमात्यादिभ्यः दूरम् अगच्छत् । यदा आमात्याः राजानाम् न अपश्यन् ते सर्वे तं अन्वेष्टुम् इतस्ततः अभ्रमन् । नृपम् अन्वेष्टुम् आमात्येन प्रेषितः एकः सैनिकः अरण्यस्य मध्ये एकस्मिन् वृक्षस्य तले ध्यानमग्नं अन्धं साधुम् अपश्यत् । गर्वितः सः सैनिकः ध्यानमग्नं साधुम् अवदत् — रे अन्ध! किं त्वम् इतः आगतम् अस्माकं राजानम् अपश्यः ? । साधुः उवाच — अन्धोऽहम् । कथं द्रष्टुं समर्थः अस्मि । आम् जानामि त्वं अन्धः असि तथापि बधिरः तु नास्ति ? किं त्वया अश्वपदध्वनिः अपि न श्रुतः । साधुः तं सैनिकं प्रत्युत्तरत् — न कोऽपि राजा अत्र मया दृष्टः । ततः दुर्वचनानि श्रावयित्वा सः सैनिकः तस्मात् स्थानात् निर्गतः ।

ततः नृपस्य अन्वेषणं कृत्वा सेनापतिः तत्र उपस्थितः अभवत् । सः साधुम् अपृच्छत् — भो साधुः! अपि अस्माकं नृपतिः अत्र आगतः ? “नृपतिस्तु न आगतः परन्तु एकः सैनिकः राजानम् अन्विष्यन् उत्तरदिशायां अगच्छत्” सः साधुः अवदत् । एतत् वचनम् आकर्ण्य सः सेनापतिः अन्य दिशायाम् अन्वेषणार्थं निरगच्छत् । अनन्तरं रथारूढः प्रधान आमात्यः अपि तत्र आगतः । सः रथात् अवतीर्य सविनयं साधुम् अपृच्छत् — भो मुनिवर! अस्मिन् दुर्गमवने वयं नृपतिना सह मृगयार्थं आगताः स्मः । परं दुर्भाग्येण ते अस्मात् वियुक्ताः जाताः । साधुः अवदत् — अस्मिन् विषये अहं किमपि न जानामि । तदा तैराश्वमुपगतः प्रधानामात्यः अपि अन्यत्र दिशायां निरगच्छत् ।

ततः यत्र सः साधुः उपविष्टः तत्र परिश्रान्तो राजा उपस्थितः जातः । करबद्धः राजा अकथयत् – हे भगवन्! तृषार्तः अहम् । किञ्चित् जलं पातुम् इच्छामि । तदा साधुः अवदत् – भवतां स्वागतं राजन् । परिश्रान्तो लक्ष्यसे भवान् । अतः सहसा जलस्य पानं मा कुरु । किञ्चित् कन्दमूलफलानि भुक्त्वा जलस्य पानं कर्तव्यम् । साधोः एतद् वचनं श्रुत्वा सविस्मयं राजा अपृच्छत् – ननु नेत्रहीनो भूत्वा अपि भवता अहं राजा इति कथं विज्ञातम् ? माम् अन्वेष्टुं कश्चिद् आगतः किम् ? तत् श्रुत्वा हसित्वा साधुः अब्रवीत् – प्रथमं तु सैनिकः भवन्तम् अन्वेष्टुम् आगतः आसीत् । तत्पश्चात् सेनापतिः ततः प्रधानामात्यः, अधुना भवान् अत्र उपस्थितः ।

तदा राजा अपृच्छत् – भगवन् तेषाम् अधिकारिणः पदानि अपि कथम् अभिज्ञातानि । साधुः प्रत्युत्तरत् – तैः प्रयुक्तैः शब्दविशेषैः । सैनिकः मां “रे अन्धः” इति उक्तम् । सेनापतिः “भोः साधुः” सम्बोधितवान् । तत्पश्चात् प्रधानामात्यः माम् आदरपूर्वकं “भोः मुनिवर” इति अब्रवीत् । भवता सप्रणामं प्रेमपूर्वकं “हे भगवन्” इति गौरवपदं प्रयुक्तम् । हे राजन्! आदरवचांसि शीलं श्रेष्ठतां च द्योतयन्ति ।

धन्यः खलु भवान्, येन शब्दमात्रेण शीलस्य परीक्षणं कृतम् । इत्युक्त्वा तं ऋषिवरं प्रणम्य नृपः स्वनगरं प्रतिनिवृत्तः ।

नृपः किमर्थं अरण्ये गतवान् ?

- (1) भ्रमणार्थम्
- (2) युद्धार्थम्
- (3) व्यापारार्थम्
- (4) मृगयार्थम्

[Question ID = 544][Question Description = CTET_P1_PART_4_L1_SET_102_SANSKRIT_Q94]

1. 1 [Option ID = 2173]
2. 2 [Option ID = 2174]
3. 3 [Option ID = 2175]
4. 4 [Option ID = 2176]

5) **निर्देशः :** अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा तदाधारितप्रश्नानां विकल्पात्मकोत्तरेषु उचिततमम् उत्तरं चित्वा लिखत ।

एकदा एकः नृपः कश्मिंश्चिद् अरण्ये मृगयार्थं गतवान् आसीत् । सः सपरिवारं आमात्यादिभिः सह तत्र गतवान् आसीत् । वन्यजीवान् अनुसरन् सः नृपः वने परिवारात् आमात्यादिभ्यः दूरम् अगच्छत् । यदा आमात्याः राजानाम् न अपश्यन् ते सर्वे तं अन्वेष्टुम् इतस्ततः अभ्रमन् । नृपम् अन्वेष्टुम् आमात्येन प्रेषितः एकः सैनिकः अरण्यस्य मध्ये एकस्मिन् वृक्षस्य तले ध्यानमग्नं अन्धं साधुम् अपश्यत् । गर्वितः सः सैनिकः ध्यानमग्नं साधुम् अवदत् – रे अन्ध! किं त्वम् इतः आगतम् अस्माकं राजानम् अपश्यः ? । साधुः उवाच – अन्धोऽहम् । कथं द्रष्टुं समर्थः अस्मि । आम् जानामि त्वं अन्धः असि तथापि बधिरः तु नास्ति ? किं त्वया अश्वपदध्वनिः अपि न श्रुतः । साधुः तं सैनिकं प्रत्युत्तरत् – न कोऽपि राजा अत्र मया दृष्टः । ततः दुर्वचनानि श्रावयित्वा सः सैनिकः तस्मात् स्थानात् निर्गतः ।

ततः नृपस्य अन्वेषणं कृत्वा सेनापतिः तत्र उपस्थितः अभवत् । सः साधुम् अपृच्छत् – भो

साधुः! अपि अस्माकं नृपतिः अत्र आगतः ? “नृपतिस्तु न आगतः परन्तु एकः सैनिकः राजानम् अन्विष्यन् उत्तरदिशायां अगच्छत्” सः साधुः अवदत् । एतत् वचनम् आकर्ण्य सः सेनापतिः अन्य दिशायाम् अन्वेषणार्थं निरगच्छत् । अनन्तरं रथारूढः प्रधान आमात्यः अपि तत्र आगतः । सः रथात् अवतीर्य सविनयं साधुम् अपृच्छत् – भो मुनिवर! अस्मिन् दुर्गमवने वयं नृपतिना सह मृगयार्थं आगताः स्मः । परं दुर्भाग्येण ते अस्मात् वियुक्ताः जाताः । साधुः अवदत् – अस्मिन् विषये अहं किमपि न जानामि । तदा तैराश्वमुपगतः प्रधानामात्यः अपि अन्यत्र दिशायां निरगच्छत् ।

ततः यत्र सः साधुः उपविष्टः तत्र परिश्रान्तो राजा उपस्थितः जातः । करबद्धः राजा अकथयत् – हे भगवन्! तृषार्तः अहम् । किञ्चित् जलं पातुम् इच्छामि । तदा साधुः अवदत् – भवतां स्वागतं राजन् । परिश्रान्तो लक्ष्यसे भवान् । अतः सहसा जलस्य पानं मा कुरु । किञ्चित् कन्दमूलफलानि भुक्त्वा जलस्य पानं कर्तव्यम् । साधुः एतद् वचनं श्रुत्वा सविस्मयं राजा अपृच्छत् – ननु नेत्रहीनो भूत्वा अपि भवता अहं राजा इति कथं विज्ञातम् ? माम् अन्वेष्टुं कश्चिद् आगतः किम् ? तत् श्रुत्वा हसित्वा साधुः अब्रवीत् – प्रथमं तु सैनिकः भवन्तम् अन्वेष्टुम् आगतः आसीत् । तत्पश्चात् सेनापतिः ततः प्रधानामात्यः, अधुना भवान् अत्र उपस्थितः ।

तदा राजा अपृच्छत् – भगवन् तेषाम् अधिकारिणः पदानि अपि कथम् अभिज्ञातानि । साधुः प्रत्युत्तरत् – तैः प्रयुक्तैः शब्दविशेषैः । सैनिकः मां “रे अन्धः” इति उक्तम् । सेनापतिः “भोः साधुः” सम्बोधितवान् । तत्पश्चात् प्रधानामात्यः माम् आदरपूर्वकं “भोः मुनिवर” इति अब्रवीत् । भवता सप्रणामं प्रेमपूर्वकं “हे भगवन्” इति गौरवपदं प्रयुक्तम् । हे राजन्! आदरवचांसि शीलं श्रेष्ठतां च द्योतयन्ति ।

धन्यः खलु भवान्, येन शब्दमात्रेण शीलस्य परीक्षणं कृतम् । इत्युक्त्वा तं ऋषिवरं प्रणम्य नृपः स्वनगरं प्रतिनिवृत्तः ।

‘दिशायां’ अस्मिन् पदे का विभक्तिः ?

(1) द्वितीया

(2) सप्तमी

(3) षष्ठी

(4) तृतीया

[Question ID = 545][Question Description = CTET_P1_PART_4_L1_SET_102_SANSKRIT_Q95]

1. 1 [Option ID = 2177]
2. 2 [Option ID = 2178]
3. 3 [Option ID = 2179]
4. 4 [Option ID = 2180]

6) **निर्देशः** : अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा तदाधारितप्रश्नानां विकल्पात्मकोत्तरेषु उचिततमम् उत्तरं चित्वा लिखत ।

एकदा एकः नृपः कश्मिंश्चिद् अरण्ये मृगयार्थं गतवान् आसीत् । सः सपरिवारं आमात्यादिभिः सह तत्र गतवान् आसीत् । वन्यजीवान् अनुसरन् सः नृपः वने परिवारात् आमात्यादिभ्यः दूरम् अगच्छत् । यदा आमात्याः राजानाम् न अपश्यन् ते सर्वे तं अन्वेष्टुम् इतस्ततः अभ्रमन् । नृपम्

अन्वेष्टुम् आमात्येन प्रेषितः एकः सैनिकः अरण्यस्य मध्ये एकस्मिन् वृक्षस्य तले ध्यानमग्नं अन्धं साधुम् अपश्यत् । गर्वितः सः सैनिकः ध्यानमग्नं साधुम् अवदत् – रे अन्ध! किं त्वम् इतः आगतम् अस्माकं राजानम् अपश्यः ? । साधुः उवाच – अन्धोऽहम् । कथं द्रष्टुं समर्थः अस्मि । आम् जानामि त्वं अन्धः असि तथापि बधिरः तु नास्ति ? किं त्वया अश्वपदध्वनिः अपि न श्रुतः । साधुः तं सैनिकं प्रत्युत्तरत् – न कोऽपि राजा अत्र मया दृष्टः । ततः दुर्वचनानि श्रावयित्वा सः सैनिकः तस्मात् स्थानात् निर्गतः ।

ततः नृपस्य अन्वेषणं कृत्वा सेनापतिः तत्र उपस्थितः अभवत् । सः साधुम् अपृच्छत् – भो साधुः! अपि अस्माकं नृपतिः अत्र आगतः ? “नृपतिस्तु न आगतः परन्तु एकः सैनिकः राजानम् अन्विष्यन् उत्तरदिशायां अगच्छत्” सः साधुः अवदत् । एतत् वचनम् आकर्ण्य सः सेनापतिः अन्य दिशायाम् अन्वेषणार्थं निरगच्छत् । अनन्तरं रथारूढः प्रधान आमात्यः अपि तत्र आगतः । सः रथात् अवतीर्य सविनयं साधुम् अपृच्छत् – भो मुनिवर! अस्मिन् दुर्गमवने वयं नृपतिना सह मृगयार्थं आगताः स्मः । परं दुर्भाग्येण ते अस्मात् वियुक्ताः जाताः । साधुः अवदत् – अस्मिन् विषये अहं किमपि न जानामि । तदा तैराश्वमुपगतः प्रधानामात्यः अपि अन्यत्र दिशायां निरगच्छत् ।

ततः यत्र सः साधुः उपविष्टः तत्र परिश्रान्तो राजा उपस्थितः जातः । करबद्धः राजा अकथयत् – हे भगवन्! तृषार्तः अहम् । किञ्चित् जलं पातुम् इच्छामि । तदा साधुः अवदत् – भवतां स्वागतं राजन् । परिश्रान्तो लक्ष्यसे भवान् । अतः सहसा जलस्य पानं मा कुरु । किञ्चित् कन्दमूलफलानि भुक्त्वा जलस्य पानं कर्तव्यम् । साधुः एतद् वचनं श्रुत्वा सविस्मयं राजा अपृच्छत् – ननु नेत्रहीनो भूत्वा अपि भवता अहं राजा इति कथं विज्ञातम् ? माम् अन्वेष्टुं कश्चिद् आगतः किम् ? तत् श्रुत्वा हसित्वा साधुः अब्रवीत् – प्रथमं तु सैनिकः भवन्तम् अन्वेष्टुम् आगतः आसीत् । तत्पश्चात् सेनापतिः ततः प्रधानामात्यः, अधुना भवान् अत्र उपस्थितः ।

तदा राजा अपृच्छत् – भगवन् तेषाम् अधिकारिणः पदानि अपि कथम् अभिज्ञातानि । साधुः प्रत्युत्तरत् – तैः प्रयुक्तैः शब्दविशेषैः । सैनिकः मां “रे अन्धः” इति उक्तम् । सेनापतिः “भोः साधुः” सम्बोधितवान् । तत्पश्चात् प्रधानामात्यः माम् आदरपूर्वकं “भोः मुनिवर” इति अब्रवीत् । भवता सप्रणामं प्रेमपूर्वकं “हे भगवन्” इति गौरवपदं प्रयुक्तम् । हे राजन्! आदरवचांसि शीलं श्रेष्ठतां च द्योतयन्ति ।

धन्यः खलु भवान्, येन शब्दमात्रेण शीलस्य परीक्षणं कृतम् । इत्युक्त्वा तं ऋषिवरं प्रणम्य नृपः स्वनगरं प्रतिनिवृत्तः ।

कान् अनुसरन् राजा दूरं अगच्छत् ?

- (1) वन्यजीवान्
- (2) सैनिकान्
- (3) सेवकान्
- (4) रक्षकान्

7) **निर्देशः** : अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा तदाधारितप्रश्नानां विकल्पात्मकोत्तरेषु उचिततमम् उत्तरं चित्वा लिखत ।

एकदा एकः नृपः कश्मिंश्चिद् अरण्ये मृगयार्थं गतवान् आसीत् । सः सपरिवारं आमात्यादिभिः सह तत्र गतवान् आसीत् । वन्यजीवान् अनुसरन् सः नृपः वने परिवारात् आमात्यादिभ्यः दूरम् अगच्छत् । यदा आमात्याः राजानाम् न अपश्यन् ते सर्वे तं अन्वेष्टुम् इतस्ततः अभ्रमन् । नृपम् अन्वेष्टुम् आमात्येन प्रेषितः एकः सैनिकः अरण्यस्य मध्ये एकस्मिन् वृक्षस्य तले ध्यानमग्नं अन्धं साधुम् अपश्यत् । गर्वितः सः सैनिकः ध्यानमग्नं साधुम् अवदत् – रे अन्ध! किं त्वम् इतः आगतम् अस्माकं राजानम् अपश्यः ? । साधुः उवाच – अन्धोऽहम् । कथं द्रष्टुं समर्थः अस्मि । आम् जानामि त्वं अन्धः असि तथापि बधिरः तु नास्ति ? किं त्वया अश्वपदध्वनिः अपि न श्रुतः । साधुः तं सैनिकं प्रत्युत्तरत् – न कोऽपि राजा अत्र मया दृष्टः । ततः दुर्वचनानि श्रावयित्वा सः सैनिकः तस्मात् स्थानात् निर्गतः ।

ततः नृपस्य अन्वेषणं कृत्वा सेनापतिः तत्र उपस्थितः अभवत् । सः साधुम् अपृच्छत् – भो साधुः! अपि अस्माकं नृपतिः अत्र आगतः ? “नृपतिस्तु न आगतः परन्तु एकः सैनिकः राजानम् अन्विष्यन् उत्तरदिशायां अगच्छत्” सः साधुः अवदत् । एतत् वचनम् आकर्ण्य सः सेनापतिः अन्य दिशायाम् अन्वेषणार्थं निरगच्छत् । अनन्तरं रथारूढः प्रधान आमात्यः अपि तत्र आगतः । सः रथात् अवतीर्य सविनयं साधुम् अपृच्छत् – भो मुनिवर! अस्मिन् दुर्गमवने वयं नृपतिना सह मृगयार्थं आगताः स्मः । परं दुर्भाग्येण ते अस्मात् वियुक्ताः जाताः । साधुः अवदत् – अस्मिन् विषये अहं किमपि न जानामि । तदा तैराश्वमुपगतः प्रधानामात्यः अपि अन्यत्र दिशायां निरगच्छत् ।

ततः यत्र सः साधुः उपविष्टः तत्र परिश्रान्तो राजा उपस्थितः जातः । करबद्धः राजा अकथयत् – हे भगवन्! तृषार्तः अहम् । किञ्चित् जलं पातुम् इच्छामि । तदा साधुः अवदत् – भवतां स्वागतं राजन् । परिश्रान्तो लक्ष्यसे भवान् । अतः सहसा जलस्य पानं मा कुरु । किञ्चित् कन्दमूलफलानि भुक्त्वा जलस्य पानं कर्तव्यम् । साधुः एतद् वचनं श्रुत्वा सविस्मयं राजा अपृच्छत् – ननु नेत्रहीनो भूत्वा अपि भवता अहं राजा इति कथं विज्ञातम् ? माम् अन्वेष्टुं कश्चिद् आगतः किम् ? तत् श्रुत्वा हसित्वा साधुः अब्रवीत् – प्रथमं तु सैनिकः भवन्तम् अन्वेष्टुम् आगतः आसीत् । तत्पश्चात् सेनापतिः ततः प्रधानामात्यः, अधुना भवान् अत्र उपस्थितः ।

तदा राजा अपृच्छत् – भगवन् तेषाम् अधिकारिणः पदानि अपि कथम् अभिज्ञातानि । साधुः प्रत्युत्तरत् – तैः प्रयुक्तैः शब्दविशेषैः । सैनिकः मां “रे अन्धः” इति उक्तम् । सेनापतिः “भोः साधुः” सम्बोधितवान् । तत्पश्चात् प्रधानामात्यः माम् आदरपूर्वकं “भोः मुनिवर” इति अब्रवीत् । भवता सप्रणामं प्रेमपूर्वकं “हे भगवन्” इति गौरवपदं प्रयुक्तम् । हे राजन्! आदरवचांसि शीलं श्रेष्ठतां च द्योतयन्ति ।

धन्यः खलु भवान्, येन शब्दमात्रेण शीलस्य परीक्षणं कृतम् । इत्युक्त्वा तं ऋषिवरं प्रणम्य नृपः स्वनगरं प्रतिनिवृत्तः ।

अन्वेषणार्थं इत्यस्य पदस्य शब्द-विच्छेदः किम् ?

(1) अन्वेष + णार्थम्

(2) अन्वे + णार्थम्

(3) अन्वेषण + अर्थम्

(4) अन्व + इषणार्थम्

[Question ID = 547][Question Description = CTET_P1_PART_4_L1_SET_102_SANSKRIT_Q97]

1. 1 [Option ID = 2185]
2. 2 [Option ID = 2186]
3. 3 [Option ID = 2187]
4. 4 [Option ID = 2188]

8) **निर्देशः** : अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा तदाधारितप्रश्नानां विकल्पात्मकोत्तरेषु उचिततमम् उत्तरं चित्वा लिखत ।

एकदा एकः नृपः कश्मिंश्चिद् अरण्ये मृगयार्थं गतवान् आसीत् । सः सपरिवारं आमात्यादिभिः सह तत्र गतवान् आसीत् । वन्यजीवान् अनुसरन् सः नृपः वने परिवारात् आमात्यादिभ्यः दूरम् अगच्छत् । यदा आमात्याः राजानाम् न अपश्यन् ते सर्वे तं अन्वेष्टुम् इतस्ततः अभ्रमन् । नृपम् अन्वेष्टुम् आमात्येन प्रेषितः एकः सैनिकः अरण्यस्य मध्ये एकस्मिन् वृक्षस्य तले ध्यानमग्नं अन्धं साधुम् अपश्यत् । गर्वितः सः सैनिकः ध्यानमग्नं साधुम् अवदत् – रे अन्ध! किं त्वम् इतः आगतम् अस्माकं राजानम् अपश्यः ? । साधुः उवाच – अन्धोऽहम् । कथं द्रष्टुं समर्थः अस्मि । आम् जानामि त्वं अन्धः असि तथापि बधिरः तु नास्ति ? किं त्वया अश्वपदध्वनिः अपि न श्रुतः । साधुः तं सैनिकं प्रत्युत्तरत् – न कोऽपि राजा अत्र मया दृष्टः । ततः दुर्वचनानि श्रावयित्वा सः सैनिकः तस्मात् स्थानात् निर्गतः ।

ततः नृपस्य अन्वेषणं कृत्वा सेनापतिः तत्र उपस्थितः अभवत् । सः साधुम् अपृच्छत् – भो साधुः! अपि अस्माकं नृपतिः अत्र आगतः ? “नृपतिस्तु न आगतः परन्तु एकः सैनिकः राजानम् अन्विष्यन् उत्तरदिशायां अगच्छत्” सः साधुः अवदत् । एतत् वचनम् आकर्ण्य सः सेनापतिः अन्य दिशायाम् अन्वेषणार्थं निरगच्छत् । अनन्तरं रथारूढः प्रधान आमात्यः अपि तत्र आगतः । सः रथात् अवतीर्य सविनयं साधुम् अपृच्छत् – भो मुनिवर! अस्मिन् दुर्गमवने वयं नृपतिना सह मृगयार्थं आगताः स्मः । परं दुर्भाग्येण ते अस्मात् वियुक्ताः जाताः । साधुः अवदत् – अस्मिन् विषये अहं किमपि न जानामि । तदा तैराश्वमुपगतः प्रधानामात्यः अपि अन्यत्र दिशायां निरगच्छत् ।

ततः यत्र सः साधुः उपविष्टः तत्र परिश्रान्तो राजा उपस्थितः जातः । करबद्धः राजा अकथयत् – हे भगवन्! तृषार्तः अहम् । किञ्चित् जलं पातुम् इच्छामि । तदा साधुः अवदत् – भवतां स्वागतं राजन् । परिश्रान्तो लक्ष्यसे भवान् । अतः सहसा जलस्य पानं मा कुरु । किञ्चित् कन्दमूलफलानि भुक्त्वा जलस्य पानं कर्तव्यम् । साधुः एतद् वचनं श्रुत्वा सविस्मयं राजा अपृच्छत् – ननु नेत्रहीनो भूत्वा अपि भवता अहं राजा इति कथं विज्ञातम् ? माम् अन्वेष्टुं कश्चिद् आगतः किम् ? तत् श्रुत्वा हसित्वा साधुः अब्रवीत् – प्रथमं तु सैनिकः भवन्तम् अन्वेष्टुम् आगतः आसीत् । तत्पश्चात् सेनापतिः ततः प्रधानामात्यः, अधुना भवान् अत्र उपस्थितः ।

तदा राजा अपृच्छत् – भगवन् तेषाम् अधिकारिणः पदानि अपि कथम् अभिज्ञातानि । साधुः

प्रत्युत्तरत् – तैः प्रयुक्तैः शब्दविशेषैः । सैनिकः मां “रे अन्धः” इति उक्तम् । सेनापतिः “भोः साधुः” सम्बोधितवान् । तत्पश्चात् प्रधानामात्यः माम् आदरपूर्वकं “भोः मुनिवर” इति अब्रवीत् । भवता सप्रणामं प्रेमपूर्वकं “हे भगवन्” इति गौरवपदं प्रयुक्तम् । हे राजन्! आदरवचांसि शीलं श्रेष्ठतां च द्योतयन्ति ।

धन्यः खलु भवान्, येन शब्दमात्रेण शीलस्य परीक्षणं कृतम् । इत्युक्त्वा तं ऋषिवरं प्रणम्य नृपः स्वनगरं प्रतिनिवृत्तः ।

‘क्लान्तः’ इत्यस्य पदस्य समानार्थकं पदं गद्यांशे किं अस्ति ?

(1) उपस्थितः

(2) सन्तुष्टः

(3) दृष्टः

(4) परिश्रान्तः

[Question ID = 548][Question Description = CTET_P1_PART_4_L1_SET_102_SANSKRIT_Q98]

1. 1 [Option ID = 2189]
2. 2 [Option ID = 2190]
3. 3 [Option ID = 2191]
4. 4 [Option ID = 2192]

9) **निर्देशः** : अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा तदाधारितप्रश्नानां विकल्पात्मकोत्तरेषु उचिततमम् उत्तरं चित्वा लिखत ।

एकदा एकः नृपः कश्मिंश्चिद् अरण्ये मृगयार्थं गतवान् आसीत् । सः सपरिवारं आमात्यादिभिः सह तत्र गतवान् आसीत् । वन्यजीवान् अनुसरन् सः नृपः वने परिवारात् आमात्यादिभ्यः दूरम् अगच्छत् । यदा आमात्याः राजानाम् न अपश्यन् ते सर्वे तं अन्वेष्टुम् इतस्ततः अभ्रमन् । नृपम् अन्वेष्टुम् आमात्येन प्रेषितः एकः सैनिकः अरण्यस्य मध्ये एकस्मिन् वृक्षस्य तले ध्यानमग्नं अन्धं साधुम् अपश्यत् । गर्वितः सः सैनिकः ध्यानमग्नं साधुम् अवदत् – रे अन्ध! किं त्वम् इतः आगतम् अस्माकं राजानम् अपश्यः ? । साधुः उवाच – अन्धोऽहम् । कथं द्रष्टुं समर्थः अस्मि । आम् जानामि त्वं अन्धः असि तथापि बधिरः तु नास्ति ? किं त्वया अश्वपदध्वनिः अपि न श्रुतः । साधुः तं सैनिकं प्रत्युत्तरत् – न कोऽपि राजा अत्र मया दृष्टः । ततः दुर्वचनानि श्रावयित्वा सः सैनिकः तस्मात् स्थानात् निर्गतः ।

ततः नृपस्य अन्वेषणं कृत्वा सेनापतिः तत्र उपस्थितः अभवत् । सः साधुम् अपृच्छत् – भो साधुः! अपि अस्माकं नृपतिः अत्र आगतः ? “नृपतिस्तु न आगतः परन्तु एकः सैनिकः राजानम् अन्विष्यन् उत्तरदिशायां अगच्छत्” सः साधुः अवदत् । एतत् वचनम् आकर्ण्य सः सेनापतिः अन्य दिशायाम् अन्वेषणार्थं निरगच्छत् । अनन्तरं स्थावरः प्रधान आमात्यः अपि तत्र आगतः । सः रथात् अवतीर्य सविनयं साधुम् अपृच्छत् – भो मुनिवर! अस्मिन् दुर्गमवने वयं नृपतिना सह मृगयार्थं आगताः स्मः । परं दुर्भाग्येण ते अस्मात् वियुक्ताः जाताः । साधुः अवदत् – अस्मिन् विषये अहं किमपि न जानामि । तदा तैराश्वमुपगतः प्रधानामात्यः अपि अन्यत्र दिशायां निरगच्छत् ।

ततः यत्र सः साधुः उपविष्टः तत्र परिश्रान्तो राजा उपस्थितः जातः । करबद्धः राजा अकथयत्

– हे भगवन्! तृषार्तः अहम् । किञ्चित् जलं पातुम् इच्छामि । तदा साधुः अवदत् – भवतां स्वागतं राजन् । परिश्रान्तो लक्ष्यसे भवान् । अतः सहसा जलस्य पानं मा कुरु । किञ्चित् कन्दमूलफलानि भुक्त्वा जलस्य पानं कर्तव्यम् । साधुः एतद् वचनं श्रुत्वा सविस्मयं राजा अपृच्छत् – ननु नेत्रहीनो भूत्वा अपि भवता अहं राजा इति कथं विज्ञातम् ? माम् अन्वेष्टुं कश्चिद् आगतः किम् ? तत् श्रुत्वा हसित्वा साधुः अब्रवीत् – प्रथमं तु सैनिकः भवन्तम् अन्वेष्टुम् आगतः आसीत् । तत्पश्चात् सेनापतिः ततः प्रधानामात्यः, अधुना भवान् अत्र उपस्थितः । तदा राजा अपृच्छत् – भगवन् तेषाम् अधिकारिणः पदानि अपि कथम् अभिज्ञातानि । साधुः प्रत्युत्तरत् – तैः प्रयुक्तैः शब्दविशेषैः । सैनिकः मां “रे अन्धः” इति उक्तम् । सेनापतिः “भोः साधुः” सम्बोधितवान् । तत्पश्चात् प्रधानामात्यः माम् आदरपूर्वकं “भोः मुनिवर” इति अब्रवीत् । भवता सप्रणामं प्रेमपूर्वकं “हे भगवन्” इति गौरवपदं प्रयुक्तम् । हे राजन्! आदरवचांसि शीलं श्रेष्ठतां च द्योतयन्ति ।

धन्यः खलु भवान्, येन शब्दमात्रेण शीलस्य परीक्षणं कृतम् । इत्युक्त्वा तं ऋषिवरं प्रणम्य नृपः स्वनगरं प्रतिनिवृत्तः ।

‘अन्धोऽहम् ! कथं द्रष्टुम् समर्थः अस्मि ?’ इति कः कं कथयति ?

(1) नृपः सैनिकम्

(2) साधुः सैनिकम्

(3) सेनापतिः नृपम्

(4) आमात्यः सेनापतिम्

[Question ID = 549][Question Description = CTET_P1_PART_4_L1_SET_102_SANSKRIT_Q99]

1. 1 [Option ID = 2193]
2. 2 [Option ID = 2194]
3. 3 [Option ID = 2195]
4. 4 [Option ID = 2196]

Topic:- Sanskrit_Q100-105_L1_P1_CTET

1) **निर्देशः** : अधोलिखितं श्लोकान् पठित्वा प्रश्नानां विकल्पात्मकोत्तरेभ्यः उचिततमम् उत्तरं चित्वा लिखत ।

साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः ।

तृणं न खादन्नपि जीवमानः तद् भागधेयं परमं पशूनाम् ॥ 1

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः ।

नास्ति येषां यशः काये जरामरणजं भयम् ॥ 2

सिंहः शिशुरपि निपतति मदमलिनकपोलभित्तिषु गजेषु ।

प्रकृतिरियं सत्त्ववतां न खलु वयस्तेजसो हेतुः ॥ 3

दानं भोगो नाशः तिष्ठो गतयो भवन्ति वित्तस्य ।

यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति ॥ 4

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीस्थो महान् रिपुः ।

नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति ॥ 5

कीदृशः जनः साक्षात्पशुः भवति ?

(1) पुच्छविषाणहीनः

(2) तृणं खादन्

(3) साहित्यसंगीतकलाविहीनः

(4) वने भ्रमन्

[Question ID = 550][Question Description = CTET_P1_PART_4_L1_SET_102_SANSKRIT_Q100]

1. 1 [Option ID = 2197]
2. 2 [Option ID = 2198]
3. 3 [Option ID = 2199]
4. 4 [Option ID = 2200]

2) **निर्देशः** : अधोलिखितं श्लोकान् पठित्वा प्रश्नानां विकल्पात्मकोत्तरेभ्यः उचिततमम् उत्तरं चित्वा लिखत ।

साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः ।

तृणं न खादन्नपि जीवमानः तद् भागधेयं परमं पशूनाम् ॥ 1

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः ।

नास्ति येषां यशः काये जरामरणजं भयम् ॥ 2

सिंहः शिशुरपि निपतति मदमलिनकपोलभित्तिषु गजेषु ।

प्रकृतिरियं सत्त्ववतां न खलु वयस्तेजसो हेतुः ॥ 3

दानं भोगो नाशः तिष्ठो गतयो भवन्ति वित्तस्य ।

यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति ॥ 4

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीस्थो महान् रिपुः ।

नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति ॥ 5

तेजसः हेतुः किं न भवति ?

(1) विद्या

(2) वयः

(3) धनम्

(4) व्यापारः

[Question ID = 551][Question Description = CTET_P1_PART_4_L1_SET_102_SANSKRIT_Q101]

1. 1 [Option ID = 2201]
2. 2 [Option ID = 2202]
3. 3 [Option ID = 2203]
4. 4 [Option ID = 2204]

3) **निर्देशः** : अधोलिखितं श्लोकान् पठित्वा प्रश्नानां विकल्पात्मकोत्तरेभ्यः उचिततमम् उत्तरं चित्वा लिखत ।

साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः ।

तृणं न खादन्नपि जीवमानः तद् भागधेयं परमं पशूनाम् ॥ 1

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः ।

नास्ति येषां यशः काये जरामरणजं भयम् ॥ 2

सिंहः शिशुरपि निपतति मदमलिनकपोलभित्तिषु गजेषु ।

प्रकृतिरियं सत्त्ववतां न खलु वयस्तेजसो हेतुः ॥ 3

दानं भोगो नाशः तिष्ठो गतयो भवन्ति वित्तस्य ।

यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति ॥ 4

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीस्थो महान् रिपुः ।

नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति ॥ 5

कवीश्वराः के सन्ति ?

(1) मूर्खाः

(2) विद्वान्सः

(3) रससिद्धाः कवयः

(4) अध्यापकाः

[Question ID = 552][Question Description = CTET_P1_PART_4_L1_SET_102_SANSKRIT_Q102]

1. 1 [Option ID = 2205]
2. 2 [Option ID = 2206]
3. 3 [Option ID = 2207]
4. 4 [Option ID = 2208]

4) **निर्देशः** : अधोलिखितं श्लोकान् पठित्वा प्रश्नानां विकल्पात्मकोत्तरेभ्यः उचिततमम् उत्तरं चित्वा लिखत ।

साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः ।

तृणं न खादन्नपि जीवमानः तद् भागधेयं परमं पशूनाम् ॥ 1

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः ।

नास्ति येषां यशः काये जरामरणजं भयम् ॥ 2

सिंहः शिशुरपि निपतति मदमलिनकपोलभित्तिषु गजेषु ।

प्रकृतिरियं सत्त्ववतां न खलु वयस्तेजसो हेतुः ॥ 3

दानं भोगो नाशः तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य ।

यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति ॥ 4

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीस्थो महान् रिपुः ।

नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति ॥ 5

तिस्रः गतयः कस्य भवन्ति ?

(1) नरस्य

(2) वित्तस्य

(3) मृगस्य

(4) वृक्षस्य

[Question ID = 553][Question Description = CTET_P1_PART_4_L1_SET_102_SANSKRIT_Q103]

1. 1 [Option ID = 2209]
2. 2 [Option ID = 2210]
3. 3 [Option ID = 2211]
4. 4 [Option ID = 2212]

5) **निर्देशः** : अधोलिखितं श्लोकान् पठित्वा प्रश्नानां विकल्पात्मकोत्तरेभ्यः उचिततमम् उत्तरं चित्वा लिखत ।

साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः ।

तृणं न खादन्नपि जीवमानः तद् भागधेयं परमं पशूनाम् ॥ 1

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः ।

नास्ति येषां यशः काये जरामरणजं भयम् ॥ 2

सिंहः शिशुरपि निपतति मदमलिनकपोलभित्तिषु गजेषु ।

प्रकृतिरियं सत्त्ववतां न खलु वयस्तेजसो हेतुः ॥ 3

दानं भोगो नाशः तिष्ठो गतयो भवन्ति वित्तस्य ।

यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति ॥ 4

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीस्थो महान् रिपुः ।

नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति ॥ 5

मानवस्य श्रेष्ठः बन्धुः कः अस्ति ?

(1) हास्यः

(2) चिन्ता

(3) उद्यमः

(4) विस्मयः

[Question ID = 554][Question Description = CTET_P1_PART_4_L1_SET_102_SANSKRIT_Q104]

1. 1 [Option ID = 2213]
2. 2 [Option ID = 2214]
3. 3 [Option ID = 2215]
4. 4 [Option ID = 2216]

6) निर्देशः : अधोलिखितं श्लोकान् पठित्वा प्रश्नानां विकल्पात्मकोत्तरेभ्यः उचिततमम् उत्तरं चित्वा लिखत ।

साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः ।

तृणं न खादन्नपि जीवमानः तद् भागधेयं परमं पशूनाम् ॥ 1

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः ।

नास्ति येषां यशः काये जरामरणजं भयम् ॥ 2

सिंहः शिशुरपि निपतति मदमलिनकपोलभित्तिषु गजेषु ।

प्रकृतिरियं सत्त्ववतां न खलु वयस्तेजसो हेतुः ॥ 3

दानं भोगो नाशः तिष्ठो गतयो भवन्ति वित्तस्य ।

यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति ॥ 4

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीस्थो महान् रिपुः ।

नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति ॥ 5

सिंहः शिशुरपि कस्मिन् निपतति ?

(1) गजेषु

(2) भूतले

(3) पर्वते

(4) वने

[Question ID = 555][Question Description = CTET_P1_PART_4_L1_SET_102_SANSKRIT_Q105]

1. 1 [Option ID = 2217]
2. 2 [Option ID = 2218]
3. 3 [Option ID = 2219]
4. 4 [Option ID = 2220]

Topic:- Sanskrit_Q106-120_L1_P1_CTET

1) अधोलिखितेषु किं आधारभूतं पठनकौशलं न अस्ति ?

(1) निष्कूटनम् (Decoding)

(2) शब्दाभिज्ञानम्

(3) रूपविज्ञानम् (Morphology)

(4) शब्दावलिपठनम्

[Question ID = 556][Question Description = CTET_P1_PART_4_L1_SET_102_SANSKRIT_Q106]

1. 1 [Option ID = 2221]
2. 2 [Option ID = 2222]
3. 3 [Option ID = 2223]
4. 4 [Option ID = 2224]

2) एका शिक्षिका निर्देशमाध्यमेन प्रोत्साहनमाध्यमेन च छात्रान् स्वप्रारम्भिकवर्षेषु स्वभाषां अर्जितुम् प्रेरयति तथा च तदनुसारं कार्यं कर्तुम् निर्दिशति । सा अवलम्बते

(1) स्वयमेव करणीया पद्धतिः

(2) सकलशारीरिकप्रतिक्रिया उपागमः (Total Physical Response approach)

(3) क्रियापरकशिक्षण उपागमः (Learning by Doing approach)

(4) कथावाचनपद्धतिः (Story telling method)

[Question ID = 557][Question Description = CTET_P1_PART_4_L1_SET_102_SANSKRIT_Q107]

1. 1 [Option ID = 2225]

2. 2 [Option ID = 2226]

3. 3 [Option ID = 2227]

4. 4 [Option ID = 2228]

3) भाषा एकं सामाजिकं उपकरणं अस्ति

(1) निर्वचनस्य

(2) अन्तः क्रियायाः

(3) सूचनार्थं

(4) हस्तक्षेपस्य

[Question ID = 558][Question Description = CTET_P1_PART_4_L1_SET_102_SANSKRIT_Q108]

1. 1 [Option ID = 2229]

2. 2 [Option ID = 2230]

3. 3 [Option ID = 2231]

4. 4 [Option ID = 2232]

4) पठनकाले विवरणान्, स्थानानि, नामानि, तिथीन्/समयं चिन्हितुं योग्यता अस्ति

(1) वैश्विकं अवबोधनम् (Global Comprehension)

(2) स्थानीयं अवबोधनम् (Local Comprehension)

(3) निष्कर्षनिर्धारणम् (Drawing Inference)

(4) पाठ्यनिर्वचनम् (Interpretation of the text)

[Question ID = 559][Question Description = CTET_P1_PART_4_L1_SET_102_SANSKRIT_Q109]

1. 1 [Option ID = 2233]

2. 2 [Option ID = 2234]

3. 3 [Option ID = 2235]

4. 4 [Option ID = 2236]

5) एका शिक्षिका पञ्चमकक्षायाः छात्रान् पठनं आस्वादितुं अवधारणायाः प्रभावपूर्णग्रहणार्थं च एकं सुदीर्घं लेखं पठितुं निर्दिशति । सा अभ्यासं करोति

(1) विस्तृतपठनस्य (Extensive reading)

(2) गहनपठनस्य (Intensive reading)

(3) खण्डितपठनस्य (Jigsaw reading)

(4) सहपाठिपठनस्य (Partner reading)

[Question ID = 560][Question Description = CTET_P1_PART_4_L1_SET_102_SANSKRIT_Q110]

1. 1 [Option ID = 2237]
2. 2 [Option ID = 2238]
3. 3 [Option ID = 2239]
4. 4 [Option ID = 2240]

- 6) एका शिक्षिका छात्रान् नवीनशब्दान् शिक्षितुम् वास्तविकवस्तूनि प्रयुङ्क्ते, यतो हि
- (1) एतत् शब्दानां शुद्धवर्तनीशिक्षणे उपयोगी भवति ।
 - (2) वयम् शब्दावलिं केवलं वस्तुमाध्यमेन शिक्षितुम् शक्नुमः ।
 - (3) छात्राः अमूर्तचिन्तने समर्थाः न सन्ति ।
 - (4) अनेन छात्राः शब्दान् ताभिः वस्तुभिः सह योजयितुं शक्नुवन्ति, यानि ते वास्तविकजीवने पश्यन्ति ।

[Question ID = 561][Question Description = CTET_P1_PART_4_L1_SET_102_SANSKRIT_Q111]

1. 1 [Option ID = 2241]
2. 2 [Option ID = 2242]
3. 3 [Option ID = 2243]
4. 4 [Option ID = 2244]

- 7) यदा छात्रः नवीनभाषां गृह्णाति किन्तु तया न सम्भाषते । एषः अवधिः कथ्यते
- (1) उदीयमाना वाक् (Speech emergent)
 - (2) मूकः (Silent)
 - (3) प्रारम्भिकं उत्पादनम् (Early production)
 - (4) उदीयमानः (Emergent)

[Question ID = 562][Question Description = CTET_P1_PART_4_L1_SET_102_SANSKRIT_Q112]

1. 1 [Option ID = 2245]
2. 2 [Option ID = 2246]
3. 3 [Option ID = 2247]
4. 4 [Option ID = 2248]

- 8) एका सुयोग्या भाषाशिक्षिका
- (1) छात्रान् पाठ्यपुस्तकेषु दत्तानां प्रश्नानां सर्वान् उत्तरान् कण्ठस्थीकर्तुं निर्दिशति
 - (2) शिक्षणार्थं पाठस्य अन्यसंसाधनानाम् च प्रयोगः करोति
 - (3) केवलं पाठ्यपुस्तके दत्तेभ्यः प्रश्नेभ्यः एव प्रश्नपत्रान् रचयति
 - (4) सर्वथा अनुशंसिते पुस्तके निर्भरा भवति

[Question ID = 563][Question Description = CTET_P1_PART_4_L1_SET_102_SANSKRIT_Q113]

1. 1 [Option ID = 2249]
2. 2 [Option ID = 2250]
3. 3 [Option ID = 2251]
4. 4 [Option ID = 2252]

9) एका अध्यापिका छात्राणां भाषाकार्यं एके पत्रावरके (folder) स्थापयति, अनन्तरं च अस्य प्रयोगः छात्राणां भाषालब्धिं आकलयितुं करोति । एषा आकलनपद्धतिः कथ्यते

- (1) निदानात्मकपरीक्षा (Diagnostic test)
- (2) उपाख्यानात्मकः अभिलेखः (Anecdotal record)
- (3) योगात्मकाकलनम् (Summative assessment)
- (4) पत्रावधानाकलनम् (Portfolio assessment)

[Question ID = 564][Question Description = CTET_P1_PART_4_L1_SET_102_SANSKRIT_Q114]

1. 1 [Option ID = 2253]
2. 2 [Option ID = 2254]
3. 3 [Option ID = 2255]
4. 4 [Option ID = 2256]

10) शिक्षणस्य पद्धतिः यस्मिन् लक्ष्यभाषायाः अवबोधने छात्रस्य मातृभाषायाः व्यवधानं न स्वीक्रियते । एषा किं कथ्यते ?

- (1) प्रत्यक्षपद्धतिः (Direct method)
- (2) व्याकरणानुवादपद्धतिः (Grammar translation method)
- (3) द्विभाषिकपद्धतिः (Bilingual method)
- (4) स्थितिपरकपद्धतिः (Situational method)

[Question ID = 565][Question Description = CTET_P1_PART_4_L1_SET_102_SANSKRIT_Q115]

1. 1 [Option ID = 2257]
2. 2 [Option ID = 2258]
3. 3 [Option ID = 2259]
4. 4 [Option ID = 2260]

11) अधोलिखितु कः अधोगामी-उपागमे (Top-down approach) आधारितः न अस्ति ?

- (1) छात्रः भाषायाः अर्थं ज्ञातुम् स्वपूर्वज्ञानस्य प्रयोगं करोति ।
- (2) छात्रः पठनकाले श्रवणकाले वा एतस्य अनुमानं करोति यत् पुस्तके अग्रे किं वर्तते ।
- (3) छात्रः प्रत्येकशब्दे वाक्यांशेषु च एकाग्रः भूत्वा भाषां अवगच्छति ।
- (4) ते कविताभ्यः कथाभ्यः च आरभ्य, अनन्तां वर्णमालां प्रति आगच्छन्ति ।

[Question ID = 566][Question Description = CTET_P1_PART_4_L1_SET_102_SANSKRIT_Q116]

1. 1 [Option ID = 2261]
2. 2 [Option ID = 2262]
3. 3 [Option ID = 2263]
4. 4 [Option ID = 2264]

12) उपचारात्मकं शिक्षणम्

- (1) छात्रस्य अधिगमप्रक्रियायां आगतान् अन्तरालान् पूरयति ।
- (2) असम्यक् रूपेण अवगतानां अवधारणानां संशोधनं करोति ।
- (3) कक्षायां सजातीयतां स्थापयति ।
- (4) नवीनभाषाविषयान् प्रारभते ।

[Question ID = 567][Question Description = CTET_P1_PART_4_L1_SET_102_SANSKRIT_Q117]

1. 1 [Option ID = 2265]
2. 2 [Option ID = 2266]
3. 3 [Option ID = 2267]
4. 4 [Option ID = 2268]

13) एका शिक्षणविकलता यया पठनस्य, निर्वचनस्य, वर्णशब्दसङ्केतानां अवबोधनस्य च योग्यता प्रभाविता भवति । एषा कथ्यते

- (1) डिस्लेक्सिया (Dyslexia)
- (2) डिस्कैल्कुलिया (Dyscalculia)
- (3) डिस्फेजिया (Dysphasia)
- (4) डिस्प्रेक्सिया (Dyspraxia)

[Question ID = 568][Question Description = CTET_P1_PART_4_L1_SET_102_SANSKRIT_Q118]

1. 1 [Option ID = 2269]
2. 2 [Option ID = 2270]
3. 3 [Option ID = 2271]
4. 4 [Option ID = 2272]

14) भाषाकक्षायां अधोलिखितेषु किं मुद्रणसमृद्धपरिवेशः इति मन्यते ?

- (1) कक्षायां प्रदर्शितानि भित्तिपत्राणि, विज्ञापनपत्राणि दत्तकक्षाकार्याणि च ।
- (2) परिवेशे सूचनापटाः, प्लेकार्ड (Placards), नामपत्राणि (Labels), रैपर्स (Wrappers) इत्यादयः ।
- (3) कक्षापुस्तकालये स्थितासु संधारिकासु (Almirahs) धृतानि पुस्तकानि ।
- (4) इलैक्ट्रॉनिक मीडिया यथा - टी.वी., कम्प्यूटर, स्मार्ट फोन आदयः ।

[Question ID = 569][Question Description = CTET_P1_PART_4_L1_SET_102_SANSKRIT_Q119]

1. 1 [Option ID = 2273]
2. 2 [Option ID = 2274]
3. 3 [Option ID = 2275]
4. 4 [Option ID = 2276]

15) प्रथमपीढीछात्राः ते सन्ति ये

- (1) स्वपरिवारे प्रथमाः, ये विद्यालयं गताः
- (2) प्रवेशाय प्रथमवारं विद्यालयं आगताः
- (3) विद्यालये प्रवेशार्हताकार्यक्रमे (School preparedness programme) सहभागिता
- (4) विद्यालये प्रथमवारं भाषाधिगमः

[Question ID = 570][Question Description = CTET_P1_PART_4_L1_SET_102_SANSKRIT_Q120]

1. 1 [Option ID = 2277]
2. 2 [Option ID = 2278]
3. 3 [Option ID = 2279]
4. 4 [Option ID = 2280]

Topic:- Marathi_Q121-128_L2_P1_CTET

1) **सूचना :** पुढील उतारा वाचा आणि प्रश्न यासाठी योग्य पर्यायाची निवड करा.

एकोणिसाव्या शतकातल्या अनेक वैज्ञानिकांना एक सत्य मनोमन उमगले होते. पूर्वीची जीवमणी आणि त्यातल्या जीवांची रेवण त्यातपेक्षा बरीच वेगळी होती. बरेचशा ज्ञान अधिक

वैविध्यही होते. आज जी जीवसृष्टी आपण भोवताली पाहातो ती तिच्या इतिहासातला एका अर्थाने त्रोटक नमुना आहे. 'वाहिले ते पाणी राहिले ते गंगाजळ' असे तिचे वर्णन योग्य ठरेल ! पण जीवसृष्टीतले वाहून गेलेले प्रपात कशामुळे नाहीसे झाले ! आणि जे राहिले त्यांच्यात असे काय होते की त्यांना तगून राहता आले ? या वाहून गेलेल्या वैविध्याचा निचरा कशाने झाला आणि आजघडीला जिवंत राहिलेल्या वैविध्याचे त्यांच्याशी काय नाते होते, या कोड्याचा उलगडा करणारे एक उत्तर डार्विनने सूत्रबद्ध केले आहे, त्याचे नाव 'नैसर्गिक निवड' ! ही मोठी प्रभावी पण तरल कल्पना आहे. तिच्या नावाची ठेवण जरा निसरडी आहे.

जीवांचे गुणावगुण, त्यांच्या क्षमता मुख्यतः त्यांच्या जनुकांनी घडतात. जीवांना ज्या परिसरात जगायचे असते तो परिसर, ते पर्यावरण काही बाबतीत पोषक असते तर काही बाबतीत घातक. जीवांना आपल्या मर्जीने ना जनुके निवडता येतात ना भोवताल. त्यांची अन्य जीवांशी कधी मैत्री असते, तर कधी स्पर्धात्मक वैमनस्य असते. अशी जगण्याची कसरत करताना ते काही खटपट करून पर्यावरणाशी अनुकूलन साधण्याची क्षमता कमावतात. या क्षमतांमागे जनुकबदल असतात आणि जनुकाची जोड असेल तर त्यांच्या वंशजाकडे पण हे अनुकूलन येते. त्यांची प्रजा आणि वंशवेल फोफावत जाते. ज्यांना असे अनुकूलन लाभत नाही, ते तगू शकत नाहीत. त्यांच्या न तगण्याचे परिणाम त्यांच्या वंशवेलीतही दिसतात. कालांतराने त्या जीवांची शाखा अस्तंगत पावल्यागत ढासळते. त्यांच्या वंशजांची संख्या रोडावत जाते. उदाहरणार्थ – फार प्राचीन काळी मॅमॉथ नावाचे हत्तीचे प्राचीन पूर्वज होते. त्यांच्या अंगावर फार केस नसायचे. पण त्यातल्या एका वंशफांदीमध्ये जनुकी बदल झाले आणि केसांचे प्रमाण वाढले. अतिथंड प्रदेशात जगण्या - तगण्यासाठी हे केसाळ आवरण कामी आले. अतिथंड प्रदेशात इतर मॅमॉथ टिकू शकले नाहीत. म्हणून ते अस्तंगत झाले. पण त्यांचे सुकेश भाऊबंधू तगून राहिले. अशा सुकेश मॅमॉथचे संपूर्ण सांगाडे गोठलेल्या हिमात आढळले आहेत. सुकेश होणे हा परिस्थितीशी अनुकूलन घडविणारा, तगण्याची हमी देणारा घटक ठरला. ज्यांना हे सुकेशी कवच लाभले नाही त्यांचा त्या परिसरातून अस्त झाला.

आणखी एक उदाहरण पाहू. समुद्राकाठच्या भागात विशेष प्रकारची कासवे अंडी घालतात. ही अंडी त्यांनी वाळूत पुरून ठेवलेली असतात. त्यांचे थोटे कल्लेवजा पाय हे वाळू उपसण्यासाठीचे हत्यार असते. मात्र त्यांच्या पायांची ठेवण अशी असते की, पायांनी वाळू उपसणे कष्टप्रद ठरते आणि त्याची गतीही कमी राहते. ही वाळूची उपसाउपशी संपेपर्यंत वरचे घिरट्या घालणारे पक्षी काही अंडी फस्त करतात. त्यामुळे कासवांच्या पिल्लांची संख्या कमी होते. पुढच्या पिढीचा विस्तार खालावतो. कल्पना करा, की या कासवांच्या कल्लेवजा पायांत जनुकीय विकारभेद झाला आणि त्यांचा वाळू उपसा अधिक खोल आणि जलद झाला तर तगणाऱ्या कासवांची संख्या वाढेल.

मूळ जनुकीय ठेवण, परिसर आणि पर्यावरणाच्या ठेवणीतली पोषक आणि घातक क्षमता, अपघातांमुळे घडणारे जनुकीय विकारबदल या तिन्हीच्या घुसळणीतून जे जगतात, तगतात ते जणू निसर्गाकडून निवडले गेलेले 'विजयीवीर' ठरतात.

लेखकाने पूर्वीच्या जीवसृष्टीचे वेगळेपण कोणत्या घटकातून सूचित केले आहे ?

(1) वैविध्यता

(2) निसरडेपण

(3) एकसारखेपण

(4) वैमनस्यता

[Question ID = 961][Question Description = CTET_P1_PART_5_L2_SET_102_MARATHI_Q121]

1. 1 [Option ID = 3841]
2. 2 [Option ID = 3842]
3. 3 [Option ID = 3843]
4. 4 [Option ID = 3844]

2) **सूचना :** पुढील उतारा वाचा आणि प्रश्न यासाठी योग्य पर्यायाची निवड करा.

एकोणिसाव्या शतकातल्या अनेक वैज्ञानिकांना एक सत्य मनोमन उमगले होते. पूर्वीची जीवसृष्टी आणि त्यातल्या जीवांची ठेवण आजपेक्षा बरीच वेगळी होती. बहुधा त्यात अधिक वैविध्यही होते. आज जीवसृष्टी आपण भोवताली पाहता ती तिच्या इतिहासातला एका अर्थाने त्रोटक नमुना आहे. 'वाहिले ते पाणी राहिले ते गंगाजळ' असे तिचे वर्णन योग्य ठरेल ! पण जीवसृष्टीतले वाहून गेलेले प्रपात कशामुळे नाहीसे झाले ! आणि जे राहिले त्यांच्यात असे काय होते की त्यांना तगून राहता आले ? या वाहून गेलेल्या वैविध्याचा निचरा कशाने झाला आणि आजघडीला जिवंत राहिलेल्या वैविध्याचे त्यांच्याशी काय नाते होते, या कोड्याचा उलगडा करणारे एक उत्तर डार्विनने सूत्रबद्ध केले आहे, त्याचे नाव 'नैसर्गिक निवड' ! ही मोठी प्रभावी पण तरल कल्पना आहे. तिच्या नावाची ठेवण जरा निसरडी आहे.

जीवांचे गुणावगुण, त्यांच्या क्षमता मुख्यतः त्यांच्या जनुकांनी घडतात. जीवांना ज्या परिसरात जगायचे असते तो परिसर, ते पर्यावरण काही बाबतीत पोषक असते तर काही बाबतीत घातक. जीवांना आपल्या मर्जीने ना जनुके निवडता येतात ना भोवताल. त्यांची अन्य जीवांशी कधी मैत्री असते, तर कधी स्पर्धात्मक वैमनस्य असते. अशी जगण्याची कसरत करताना ते काही खटपट करून पर्यावरणाशी अनुकूलन साधण्याची क्षमता कमावतात. या क्षमतांमागे जनुकबदल असतात आणि जनुकाची जोड असेल तर त्यांच्या वंशजाकडे पण हे अनुकूलन येते. त्यांची प्रजा आणि वंशवेल फोफावत जाते. ज्यांना असे अनुकूलन लाभत नाही, ते तगू शकत नाहीत. त्यांच्या न तगण्याचे परिणाम त्यांच्या वंशवेलीतही दिसतात. कालांतराने त्या जीवांची शाखा अस्तंगत पावल्यागत ढासळते. त्यांच्या वंशजांची संख्या रोडावत जाते. उदाहरणार्थ – फार प्राचीन काळी मॅमॉथ नावाचे हत्तीचे प्राचीन पूर्वज होते. त्यांच्या अंगावर फार केस नसायचे. पण त्यातल्या एका वंशफांदीमध्ये जनुकी बदल झाले आणि केसांचे प्रमाण वाढले. अतिथंड प्रदेशात जगण्या - तगण्यासाठी हे केसाळ आवरण कामी आले. अतिथंड प्रदेशात इतर मॅमॉथ टिकू शकले नाहीत. म्हणून ते अस्तंगत झाले. पण त्यांचे सुकेश भाऊबंधू तगून राहिले. अशा सुकेश मॅमॉथचे संपूर्ण सांगाडे गोठलेल्या हिमात आढळले आहेत. सुकेश होणे हा परिस्थितीशी अनुकूलन घडविणारा, तगण्याची हमी देणारा घटक ठरला. ज्यांना हे सुकेशी कवच लाभले नाही त्यांचा त्या परिसरातून अस्त झाला.

आणखी एक उदाहरण पाहू. समुद्राकाठच्या भागात विशेष प्रकारची कासवे अंडी घालतात. ती थंडी त्यांनी वाळवून घेऊन ठेवलेली असतात त्यांचे थोडे कल्लेबत्ता पाग ते वाळ

हा पाया त्यांना वाळूपासून उरल्या उरल्यापासून घालतात. त्यांचा पाद तळ्यातल्या पाण्यात वाळू उपसण्यासाठीचे हत्यार असते. मात्र त्यांच्या पायांची ठेवण अशी असते की, पायांनी वाळू उपसणे कष्टप्रद ठरते आणि त्याची गतीही कमी राहते. ही वाळूची उपसाउपशी संपेपर्यंत वरचे घिरट्या घालणारे पक्षी काही अंडी फस्त करतात. त्यामुळे कासवांच्या पिल्लांची संख्या कमी होते. पुढच्या पिढीचा विस्तार खालावतो. कल्पना करा, की या कासवांच्या कल्लेवजा पायांत जनुकीय विकारभेद झाला आणि त्यांचा वाळू उपसा अधिक खोल आणि जलद झाला तर तगणाऱ्या कासवांची संख्या वाढेल.

मूळ जनुकीय ठेवण, परिसर आणि पर्यावरणाच्या ठेवणीतली पोषक आणि घातक क्षमता, अपघातांमुळे घडणारे जनुकीय विकारबदल या तिन्हीच्या घुसळणीतून जे जगतात, तगतात ते जणू निसर्गाकडून निवडले गेलेले 'विजयीवीर' ठरतात.

'बाहेरपडणे' या अर्थाचा कोणता शब्द उताराऱ्यात आला आहे ?

- (1) पोषक
- (2) निचरा
- (3) वंशवेल
- (4) घुसळण

[Question ID = 962][Question Description = CTET_P1_PART_5_L2_SET_102_MARATHI_Q122]

1. 1 [Option ID = 3845]
2. 2 [Option ID = 3846]
3. 3 [Option ID = 3847]
4. 4 [Option ID = 3848]

3) **सूचना :** पुढील उतारा वाचा आणि प्रश्न यासाठी योग्य पर्यायाची निवड करा.

एकोणिसाव्या शतकातल्या अनेक वैज्ञानिकांना एक सत्य मनोमन उमगले होते. पूर्वीची जीवसृष्टी आणि त्यातल्या जीवांची ठेवण आजपेक्षा बरीच वेगळी होती. बहुधा त्यात अधिक वैविध्यही होते. आज जीवसृष्टी आपण भोवताली पाहता ती तिच्या इतिहासातला एका अर्थाने त्रोटक नमुना आहे. 'वाहिले ते पाणी राहिले ते गंगाजळ' असे तिचे वर्णन योग्य ठरेल ! पण जीवसृष्टीतले वाहून गेलेले प्रपात कशामुळे नाहीसे झाले ! आणि जे राहिले त्यांच्यात असे काय होते की त्यांना तगून राहता आले ? या वाहून गेलेल्या वैविध्याचा निचरा कशाने झाला आणि आजघडीला जिवंत राहिलेल्या वैविध्याचे त्यांच्याशी काय नाते होते, या कोड्याचा उलगडा करणारे एक उत्तर डार्विनने सूत्रबद्ध केले आहे, त्याचे नाव 'नैसर्गिक निवड' ! ही मोठी प्रभावी पण तरल कल्पना आहे. तिच्या नावाची ठेवण जरा निसरडी आहे.

जीवांचे गुणावगुण, त्यांच्या क्षमता मुख्यतः त्यांच्या जनुकांनी घडतात. जीवांना ज्या परिसरात जगायचे असते तो परिसर, ते पर्यावरण काही बाबतीत पोषक असते तर काही बाबतीत घातक. जीवांना आपल्या मर्जीने ना जनुके निवडता येतात ना भोवताल. त्यांची अन्य जीवांशी कधी मैत्री असते, तर कधी स्पर्धात्मक वैमनस्य असते. अशी जगण्याची कसरत करताना ते काही खटपट करून पर्यावरणाशी अनुकूलन साधण्याची क्षमता कमावतात. या क्षमतांमागे जनुकबदल असतात आणि जनुकाची जोड असेल तर त्यांच्या वंशजाकडे पण हे अन्तकलन येते त्यांची प्रजा आणि वंशवेल फोफावत जाते ज्यांना असे अन्तकलन लाभत नाही

ते तगू शकत नाहीत. त्यांच्या न तगण्याचे परिणाम त्यांच्या वंशवेलीतही दिसतात. कालांतराने त्या जीवांची शाखा अस्तंगत पावल्यागत ढासळते. त्यांच्या वंशजांची संख्या रोडावत जाते. उदाहरणार्थ – फार प्राचीन काळी मॅमॉथ नावाचे हत्तीचे प्राचीन पूर्वज होते. त्यांच्या अंगावर फार केस नसायचे. पण त्यातल्या एका वंशफांदीमध्ये जनुकी बदल झाले आणि केसांचे प्रमाण वाढले. अतिथंड प्रदेशात जगण्या - तगण्यासाठी हे केसाळ आवरण कामी आले. अतिथंड प्रदेशात इतर मॅमॉथ टिकू शकले नाहीत. म्हणून ते अस्तंगत झाले. पण त्यांचे सुकेश भाऊबंधू तगून राहिले. अशा सुकेश मॅमॉथचे संपूर्ण सांगाडे गोठलेल्या हिमात आढळले आहेत. सुकेश होणे हा परिस्थितीशी अनुकूलन घडविणारा, तगण्याची हमी देणारा घटक ठरला. ज्यांना हे सुकेशी कवच लाभले नाही त्यांचा त्या परिसरातून अस्त झाला.

आणखी एक उदाहरण पाहू. समुद्राकाठच्या भागात विशेष प्रकारची कासवे अंडी घालतात. ही अंडी त्यांनी वाळूत पुरून ठेवलेली असतात. त्यांचे थोटे कल्लेवजा पाय हे वाळू उपसण्यासाठीचे हत्यार असते. मात्र त्यांच्या पायांची ठेवण अशी असते की, पायांनी वाळू उपसणे कष्टप्रद ठरते आणि त्याची गतीही कमी राहते. ही वाळूची उपसाउपशी संपेपर्यंत वरचे घिरट्या घालणारे पक्षी काही अंडी फस्त करतात. त्यामुळे कासवांच्या पिल्लांची संख्या कमी होते. पुढच्या पिढीचा विस्तार खालावतो. कल्पना करा, की या कासवांच्या कल्लेवजा पायांत जनुकीय विकारभेद झाला आणि त्यांचा वाळू उपसा अधिक खोल आणि जलद झाला तर तगणाऱ्या कासवांची संख्या वाढेल.

मूळ जनुकीय ठेवण, परिसर आणि पर्यावरणाच्या ठेवणीतली पोषक आणि घातक क्षमता, अपघातांमुळे घडणारे जनुकीय विकारबदल या तिन्हीच्या घुसळणीतून जे जगतात, तगतात ते जणू निसर्गाकडून निवडले गेलेले 'विजयीवीर' ठरतात.

जीवसृष्टीची कोणती मर्यादा लेखकाने सांगितली आहे ?

- (1) जनुके, भोवताल निवडता न येणे
- (2) स्पर्धात्मक वैमनस्य
- (3) जनुकीय विकार बदल
- (4) विजयीवीर

[Question ID = 963][Question Description = CTET_P1_PART_5_L2_SET_102_MARATHI_Q123]

1. 1 [Option ID = 3849]
2. 2 [Option ID = 3850]
3. 3 [Option ID = 3851]
4. 4 [Option ID = 3852]

4) **सूचना :** पुढील उतारा वाचा आणि प्रश्न यासाठी योग्य पर्यायाची निवड करा.

एकोणिसाव्या शतकातल्या अनेक वैज्ञानिकांना एक सत्य मनोमन उमगले होते. पूर्वीची जीवसृष्टी आणि त्यातल्या जीवांची ठेवण आजपेक्षा बरीच वेगळी होती. बहुधा त्यात अधिक वैविध्यही होते. आज जीवसृष्टी आपण भोवताली पाहता ती तिच्या इतिहासातला एका अर्थाने त्रोटक नमुना आहे. 'वाहिले ते पाणी राहिले ते गंगाजळ' असे तिचे वर्णन योग्य ठरेल ! पण जीवसृष्टीतले वाहन गेलेले प्रपात कशामळे नाहीसे झाले ! आणि जे राहिले त्यांच्यात असे

काय होते की त्यांना तगून राहता आले ? या वाहून गेलेल्या वैविध्याचा निचरा कशाने झाला आणि आजघडीला जिवंत राहिलेल्या वैविध्याचे त्याच्याशी काय नाते होते, या कोड्याचा उलगडा करणारे एक उत्तर डार्विनने सूत्रबद्ध केले आहे, त्याचे नाव 'नैसर्गिक निवड' ! ही मोठी प्रभावी पण तरल कल्पना आहे. तिच्या नावाची ठेवण जरा निसरडी आहे.

जीवांचे गुणावगुण, त्यांच्या क्षमता मुख्यतः त्यांच्या जनुकांनी घडतात. जीवांना ज्या परिसरात जगायचे असते तो परिसर, ते पर्यावरण काही बाबतीत पोषक असते तर काही बाबतीत घातक. जीवांना आपल्या मर्जीने ना जनुके निवडता येतात ना भोवताल. त्यांची अन्य जीवांशी कधी मैत्री असते, तर कधी स्पर्धात्मक वैमनस्य असते. अशी जगण्याची कसरत करताना ते काही खटपट करून पर्यावरणाशी अनुकूलन साधण्याची क्षमता कमावतात. या क्षमतांमागे जनुकबदल असतात आणि जनुकाची जोड असेल तर त्यांच्या वंशजाकडे पण हे अनुकूलन येते. त्यांची प्रजा आणि वंशवेल फोफावत जाते. ज्यांना असे अनुकूलन लाभत नाही, ते तगू शकत नाहीत. त्यांच्या न तगण्याचे परिणाम त्यांच्या वंशवेलीतही दिसतात. कालांतराने त्या जीवांची शाखा अस्तंगत पावल्यागत ढासळते. त्यांच्या वंशजांची संख्या रोडावत जाते. उदाहरणार्थ – फार प्राचीन काळी मॅमॉथ नावाचे हत्तीचे प्राचीन पूर्वज होते. त्यांच्या अंगावर फार केस नसायचे. पण त्यातल्या एका वंशफांदीमध्ये जनुकी बदल झाले आणि केसांचे प्रमाण वाढले. अतिथंड प्रदेशात जगण्या - तगण्यासाठी हे केसाळ आवरण कामी आले. अतिथंड प्रदेशात इतर मॅमॉथ टिकू शकले नाहीत. म्हणून ते अस्तंगत झाले. पण त्यांचे सुकेश भाऊबंधू तगून राहिले. अशा सुकेश मॅमॉथचे संपूर्ण सांगाडे गोठलेल्या हिमात आढळले आहेत. सुकेश होणे हा परिस्थितीशी अनुकूलन घडविणारा, तगण्याची हमी देणारा घटक ठरला. ज्यांना हे सुकेशी कवच लाभले नाही त्यांचा त्या परिसरातून अस्त झाला.

आणखी एक उदाहरण पाहू. समुद्राकाठच्या भागात विशेष प्रकारची कासवे अंडी घालतात. ही अंडी त्यांनी वाळूत पुरून ठेवलेली असतात. त्यांचे थोटे कल्लेवजा पाय हे वाळू उपसण्यासाठीचे हत्यार असते. मात्र त्यांच्या पायांची ठेवण अशी असते की, पायांनी वाळू उपसणे कष्टप्रद ठरते आणि त्याची गतीही कमी राहते. ही वाळूची उपसाउपशी संपेपर्यंत वरचे घिरट्या घालणारे पक्षी काही अंडी फस्त करतात. त्यामुळे कासवांच्या पिल्लांची संख्या कमी होते. पुढच्या पिढीचा विस्तार खालावतो. कल्पना करा, की या कासवांच्या कल्लेवजा पायांत जनुकीय विकारभेद झाला आणि त्यांचा वाळू उपसा अधिक खोल आणि जलद झाला तर तगणाऱ्या कासवांची संख्या वाढेल.

मूळ जनुकीय ठेवण, परिसर आणि पर्यावरणाच्या ठेवणीतली पोषक आणि घातक क्षमता, अपघातांमुळे घडणारे जनुकीय विकारबदल या तिन्हीच्या घुसळणीतून जे जगतात, तगतात ते जणू निसर्गाकडून निवडले गेलेले 'विजयीवीर' ठरतात.

'हमी' या शब्दाचा समानार्थी शब्द निवडा.

(1) नेहमी

(2) सतत

(3) सदाची

[Question ID = 964][Question Description = CTET_P1_PART_5_L2_SET_102_MARATHI_Q124]

1. 1 [Option ID = 3853]
2. 2 [Option ID = 3854]
3. 3 [Option ID = 3855]
4. 4 [Option ID = 3856]

5) **सूचना :** पुढील उतारा वाचा आणि प्रश्न यासाठी योग्य पर्यायाची निवड करा.

एकोणिसाव्या शतकातल्या अनेक वैज्ञानिकांना एक सत्य मनोमन उमगले होते. पूर्वीची जीवसृष्टी आणि त्यातल्या जीवांची ठेवण आजपेक्षा बरीच वेगळी होती. बहुधा त्यात अधिक वैविध्यही होते. आज जीवसृष्टी आपण भोवताली पाहता ती तिच्या इतिहासातला एका अर्थाने त्रोटक नमुना आहे. 'वाहिले ते पाणी राहिले ते गंगाजळ' असे तिचे वर्णन योग्य ठरेल ! पण जीवसृष्टीतले वाहून गेलेले प्रपात कशामुळे नाहीसे झाले ! आणि जे राहिले त्यांच्यात असे काय होते की त्यांना तगून राहता आले ? या वाहून गेलेल्या वैविध्याचा निचरा कशाने झाला आणि आजघडीला जिवंत राहिलेल्या वैविध्याचे त्यांच्याशी काय नाते होते, या कोड्याचा उलगडा करणारे एक उत्तर डार्विनने सूत्रबद्ध केले आहे, त्याचे नाव 'नैसर्गिक निवड' ! ही मोठी प्रभावी पण तरल कल्पना आहे. तिच्या नावाची ठेवण जरा निसरडी आहे.

जीवांचे गुणावगुण, त्यांच्या क्षमता मुख्यतः त्यांच्या जनुकांनी घडतात. जीवांना ज्या परिसरात जगायचे असते तो परिसर, ते पर्यावरण काही बाबतीत पोषक असते तर काही बाबतीत घातक. जीवांना आपल्या मर्जीने ना जनुके निवडता येतात ना भोवताल. त्यांची अन्य जीवांशी कधी मैत्री असते, तर कधी स्पर्धात्मक वैमनस्य असते. अशी जगण्याची कसरत करताना ते काही खटपट करून पर्यावरणाशी अनुकूलन साधण्याची क्षमता कमावतात. या क्षमतांमागे जनुकबदल असतात आणि जनुकाची जोड असेल तर त्यांच्या वंशजाकडे पण हे अनुकूलन येते. त्यांची प्रजा आणि वंशवेल फोफावत जाते. ज्यांना असे अनुकूलन लाभत नाही, ते तगू शकत नाहीत. त्यांच्या न तगण्याचे परिणाम त्यांच्या वंशवेलीतही दिसतात. कालांतराने त्या जीवांची शाखा अस्तंगत पावल्यागत ढासळते. त्यांच्या वंशजांची संख्या रोडावत जाते. उदाहरणार्थ – फार प्राचीन काळी मॅमॉथ नावाचे हत्तीचे प्राचीन पूर्वज होते. त्यांच्या अंगावर फार केस नसायचे. पण त्यातल्या एका वंशफांदीमध्ये जनुकी बदल झाले आणि केसांचे प्रमाण वाढले. अतिथंड प्रदेशात जगण्या - तगण्यासाठी हे केसाळ आवरण कामी आले. अतिथंड प्रदेशात इतर मॅमॉथ टिकू शकले नाहीत. म्हणून ते अस्तंगत झाले. पण त्यांचे सुकेश भाऊबंधू तगून राहिले. अशा सुकेश मॅमॉथचे संपूर्ण सांगाडे गोठलेल्या हिमात आढळले आहेत. सुकेश होणे हा परिस्थितीशी अनुकूलन घडविणारा, तगण्याची हमी देणारा घटक ठरला. ज्यांना हे सुकेशी कवच लाभले नाही त्यांचा त्या परिसरातून अस्त झाला.

आणखी एक उदाहरण पाहू. समुद्राकाठच्या भागात विशेष प्रकारची कासवे अंडी घालतात. ही अंडी त्यांनी वाळूत पुरून ठेवलेली असतात. त्यांचे थोटे कल्लेवजा पाय हे वाळू उपसण्यासाठीचे हत्यार असते. मात्र त्यांच्या पायांची ठेवण अशी असते की, पायांनी वाळू उपसणे कष्टप्रद ठरते आणि त्याची गतीही कमी राहते. ही वाळूची उपसाउपशी संपेपर्यंत वरचे घिरट्या घालणारे पक्षी काही अंडी फस्त करतात. त्यामळे कासवांच्या पिल्लांची संख्या कमी

होते. पुढच्या पिढीचा विस्तार खालावतो. कल्पना करा, की या कासवांच्या कल्लेवजा पायांत जनुकीय विकारभेद झाला आणि त्यांचा वाळू उपसा अधिक खोल आणि जलद झाला तर तगणाऱ्या कासवांची संख्या वाढेल.

मूळ जनुकीय ठेवण, परिसर आणि पर्यावरणाच्या ठेवणीतली पोषक आणि घातक क्षमता, अपघातांमुळे घडणारे जनुकीय विकारबदल या तिन्हीच्या घुसळणीतून जे जगतात, तगतात ते जणू निसर्गाकडून निवडले गेलेले 'विजयीवीर' ठरतात.

लेखकाच्या मते पुढीलपैकी कोणती संकल्पना 'निसरडी' आहे ?

(1) जनुकीय विकारबदल

(2) जीवांचे गुणावगुण

(3) नैसर्गिक निवड

(4) वंशफांदी

[Question ID = 965][Question Description = CTET_P1_PART_5_L2_SET_102_MARATHI_Q125]

1. 1 [Option ID = 3857]
2. 2 [Option ID = 3858]
3. 3 [Option ID = 3859]
4. 4 [Option ID = 3860]

6) **सूचना :** पुढील उतारा वाचा आणि प्रश्न यासाठी योग्य पर्यायाची निवड करा.

एकोणिसाव्या शतकातल्या अनेक वैज्ञानिकांना एक सत्य मनोमन उमगले होते. पूर्वीची जीवसृष्टी आणि त्यातल्या जीवांची ठेवण आजपेक्षा बरीच वेगळी होती. बहुधा त्यात अधिक वैविध्यही होते. आज जी जीवसृष्टी आपण भोवताली पाहातो ती तिच्या इतिहासातला एका अर्थाने त्रोटक नमुना आहे. 'वाहिले ते पाणी राहिले ते गंगाजळ' असे तिचे वर्णन योग्य ठरेल ! पण जीवसृष्टीतले वाहून गेलेले प्रपात कशामुळे नाहीसे झाले ! आणि जे राहिले त्यांच्यात असे काय होते की त्यांना तगून राहता आले ? या वाहून गेलेल्या वैविध्याचा निचरा कशाने झाला आणि आजघडीला जिवंत राहिलेल्या वैविध्याचे त्यांच्याशी काय नाते होते, या कोड्याचा उलगडा करणारे एक उत्तर डार्विनने सूत्रबद्ध केले आहे, त्याचे नाव 'नैसर्गिक निवड' ! ही मोठी प्रभावी पण तरल कल्पना आहे. तिच्या नावाची ठेवण जरा निसरडी आहे.

जीवांचे गुणावगुण, त्यांच्या क्षमता मुख्यतः त्यांच्या जनुकांनी घडतात. जीवांना ज्या परिसरात जगायचे असते तो परिसर, ते पर्यावरण काही बाबतीत पोषक असते तर काही बाबतीत घातक. जीवांना आपल्या मर्जीने ना जनुके निवडता येतात ना भोवताल. त्यांची अन्य जीवांशी कधी मैत्री असते, तर कधी स्पर्धात्मक वैमनस्य असते. अशी जगण्याची कसरत करताना ते काही खटपट करून पर्यावरणाशी अनुकूलन साधण्याची क्षमता कमावतात. या क्षमतांमागे जनुकबदल असतात आणि जनुकाची जोड असेल तर त्यांच्या वंशजाकडे पण हे अनुकूलन येते. त्यांची प्रजा आणि वंशवेल फोफावत जाते. ज्यांना असे अनुकूलन लाभत नाही, ते तगू शकत नाहीत. त्यांच्या न तगण्याचे परिणाम त्यांच्या वंशवेलीतही दिसतात. कालांतराने त्या जीवांची शाखा अस्तंगत पावल्यागत ढासळते. त्यांच्या वंशजांची संख्या रोडावत जाते. उदाहरणार्थ – फार प्राचीन काळी मॅमॉथ नावाचे हत्तीचे प्राचीन पूर्वज होते.

त्यांच्या अंगावर फार केस तसायचे. पण त्यातल्या एका वंशफांदीमध्ये जनुकी बदल झाले आणि केसांचे प्रमाण वाढले. अतिथंड प्रदेशात जगण्या - तगण्यासाठी हे केसाळ आवरण कामी आले. अतिथंड प्रदेशात इतर मेंमाँथ टिकू शकले नाहीत. म्हणून ते अस्तंगत झाले. पण त्यांचे सुकेश भाऊबंध तगून राहिले. अशा सुकेश मेंमाँथचे संपूर्ण सांगाडे गोठलेल्या हिमात आढळले आहेत. सुकेश होणे हा परिस्थितीशी अनुकूलन घडविणारा, तगण्याची हमी देणारा घटक ठरला. ज्यांना हे सुकेशी कवच लाभले नाही त्यांचा त्या परिसरातून अस्त झाला.

आणखी एक उदाहरण पाहू. समुद्राकाठच्या भागात विशेष प्रकारची कासवे अंडी घालतात. ही अंडी त्यांनी वाळूत पुरून ठेवलेली असतात. त्यांचे थोटे कल्लेवजा पाय हे वाळू उपसण्यासाठीचे हत्यार असते. मात्र त्यांच्या पायांची ठेवण अशी असते की, पायांनी वाळू उपसणे कष्टप्रद ठरते आणि त्याची गतीही कमी राहते. ही वाळूची उपसाउपशी संपेपर्यंत वरचे घिरट्या घालणारे पक्षी काही अंडी फस्त करतात. त्यामुळे कासवांच्या पिल्लांची संख्या कमी होते. पुढच्या पिढीचा विस्तार खालावतो. कल्पना करा, की या कासवांच्या कल्लेवजा पायांत जनुकीय विकारभेद झाला आणि त्यांचा वाळू उपसा अधिक खोल आणि जलद झाला तर तगणाऱ्या कासवांची संख्या वाढेल.

मूळ जनुकीय ठेवण, परिसर आणि पर्यावरणाच्या ठेवणीतली पोषक आणि घातक क्षमता, अपघातांमुळे घडणारे जनुकीय विकारबदल या तिन्हीच्या घुसळणीतून जे जगतात, तगतात ते जणू निसर्गाकडून निवडले गेलेले 'विजयीवीर' ठरतात.

पर्यावरणाशी जुळवून घेण्याची क्षमता प्राप्त करण्यात जीवांच्या वंशजांनाही अनुकूलन प्राप्त होते, ते कशामुळे ?

- (1) वाळू उपसा करणारे हत्यार
- (2) पर्यावरणातील घातक क्षमता
- (3) जनुकाची जोड
- (4) स्पर्धात्मक वैमनस्य

[Question ID = 966][Question Description = CTET_P1_PART_5_L2_SET_102_MARATHI_Q126]

1. 1 [Option ID = 3861]
2. 2 [Option ID = 3862]
3. 3 [Option ID = 3863]
4. 4 [Option ID = 3864]

7) **सूचना :** पुढील उतारा वाचा आणि प्रश्न यासाठी योग्य पर्यायाची निवड करा.

एकोणिसाव्या शतकातल्या अनेक वैज्ञानिकांना एक सत्य मनोमन उमगले होते. पूर्वीची जीवसृष्टी आणि त्यातल्या जीवांची ठेवण आजपेक्षा बरीच वेगळी होती. बहुधा त्यात अधिक वैविध्यही होते. आज जी जीवसृष्टी आपण भोवताली पाहतो ती तिच्या इतिहासातला एका अर्थाने त्रोटक नमुना आहे. 'वाहिले ते पाणी राहिले ते गंगाजळ' असे तिचे वर्णन योग्य ठरेल ! पण जीवसृष्टीतले वाहून गेलेले प्रपात कशामुळे नाहीसे झाले ! आणि जे राहिले त्यांच्यात असे काय होते की त्यांना तगून राहता आले ? या वाहून गेलेल्या वैविध्याचा निचरा कशाने झाला आणि आजघडीला जिवंत राहिलेल्या वैविध्याचे त्यांच्याशी काय नाते होते, या कोड्याचा

उलगडा करणारे एक उत्तर डार्विनने सूत्रबद्ध केले आहे, त्याचे नाव 'नैसर्गिक निवड' ! ही मोठी प्रभावी पण तरल कल्पना आहे. तिच्या नावाची ठेवण जरा निसरडी आहे.

जीवांचे गुणावगुण, त्यांच्या क्षमता मुख्यतः त्यांच्या जनुकांनी घडतात. जीवांना ज्या परिसरात जगायचे असते तो परिसर, ते पर्यावरण काही बाबतीत पोषक असते तर काही बाबतीत घातक. जीवांना आपल्या मर्जीने ना जनुके निवडता येतात ना भोवताल. त्यांची अन्य जीवांशी कधी मैत्री असते, तर कधी स्पर्धात्मक वैमनस्य असते. अशी जगण्याची कसरत करताना ते काही खटपट करून पर्यावरणाशी अनुकूलन साधण्याची क्षमता कमावतात. या क्षमतांमागे जनुकबदल असतात आणि जनुकाची जोड असेल तर त्यांच्या वंशजाकडे पण हे अनुकूलन येते. त्यांची प्रजा आणि वंशवेल फोफावत जाते. ज्यांना असे अनुकूलन लाभत नाही, ते तगू शकत नाहीत. त्यांच्या न तगण्याचे परिणाम त्यांच्या वंशवेलीतही दिसतात. कालांतराने त्या जीवांची शाखा अस्तंगत पावल्यागत ढासळते. त्यांच्या वंशजांची संख्या रोडावत जाते. उदाहरणार्थ – फार प्राचीन काळी मॅमॉथ नावाचे हत्तीचे प्राचीन पूर्वज होते. त्यांच्या अंगावर फार केस नसायचे. पण त्यातल्या एका वंशफांदीमध्ये जनुकी बदल झाले आणि केसांचे प्रमाण वाढले. अतिथंड प्रदेशात जगण्या - तगण्यासाठी हे केसाळ आवरण कामी आले. अतिथंड प्रदेशात इतर मॅमॉथ टिकू शकले नाहीत. म्हणून ते अस्तंगत झाले. पण त्यांचे सुकेश भाऊबंधू तगून राहिले. अशा सुकेश मॅमॉथचे संपूर्ण सांगाडे गोठलेल्या हिमात आढळले आहेत. सुकेश होणे हा परिस्थितीशी अनुकूलन घडविणारा, तगण्याची हमी देणारा घटक ठरला. ज्यांना हे सुकेशी कवच लाभले नाही त्यांचा त्या परिसरातून अस्त झाला.

आणखी एक उदाहरण पाहू. समुद्राकाठच्या भागात विशेष प्रकारची कासवे अंडी घालतात. ही अंडी त्यांनी वाळूत पुरून ठेवलेली असतात. त्यांचे थोटे कल्लेवजा पाय हे वाळू उपसण्यासाठीचे हत्यार असते. मात्र त्यांच्या पायांची ठेवण अशी असते की, पायांनी वाळू उपसणे कष्टप्रद ठरते आणि त्याची गतीही कमी राहते. ही वाळूची उपसाउपशी संपेपर्यंत वरचे घिरट्या घालणारे पक्षी काही अंडी फस्त करतात. त्यामुळे कासवांच्या पिल्लांची संख्या कमी होते. पुढच्या पिढीचा विस्तार खालावतो. कल्पना करा, की या कासवांच्या कल्लेवजा पायांत जनुकीय विकारभेद झाला आणि त्यांचा वाळू उपसा अधिक खोल आणि जलद झाला तर तगणाऱ्या कासवांची संख्या वाढेल.

मूळ जनुकीय ठेवण, परिसर आणि पर्यावरणाच्या ठेवणीतली पोषक आणि घातक क्षमता, अपघातांमुळे घडणारे जनुकीय विकारबदल या तिन्हीच्या घुसळणीतून जे जगतात, तगतात ते जणू निसर्गाकडून निवडले गेलेले 'विजयीवीर' ठरतात.

पुढीलपैकी कोणाला 'सुकेशी कवच' न लाभल्यामुळे ते अस्तंगत झाले ?

- (1) घिरट्या घालणारे पक्षी
- (2) हत्तीचे प्राचीन पूर्वज
- (3) कासव
- (4) पर्यावरणाशी अनुकूल साधणारे जीव

1. 1 [Option ID = 3865]
2. 2 [Option ID = 3866]
3. 3 [Option ID = 3867]
4. 4 [Option ID = 3868]

8) **सूचना :** पुढील उतारा वाचा आणि प्रश्न यासाठी योग्य पर्यायाची निवड करा.

एकोणिसाव्या शतकातल्या अनेक वैज्ञानिकांना एक सत्य मनोमन उमगले होते. पूर्वीची जीवसृष्टी आणि त्यातल्या जीवांची ठेवण आजपेक्षा बरीच वेगळी होती. बहुधा त्यात अधिक वैविध्यही होते. आज जीवसृष्टी आपण भोवताली पाहतो ती तिच्या इतिहासातला एका अर्थाने त्रोटक नमुना आहे. 'वाहिले ते पाणी राहिले ते गंगाजळ' असे तिचे वर्णन योग्य ठरेल ! पण जीवसृष्टीतले वाहून गेलेले प्रपात कशामुळे नाहीसे झाले ! आणि जे राहिले त्यांच्यात असे काय होते की त्यांना तगून राहता आले ? या वाहून गेलेल्या वैविध्याचा निचरा कशाने झाला आणि आजघडीला जिवंत राहिलेल्या वैविध्याचे त्यांच्याशी काय नाते होते, या कोड्याचा उलगडा करणारे एक उत्तर डार्विनने सूत्रबद्ध केले आहे, त्याचे नाव 'नैसर्गिक निवड' ! ही मोठी प्रभावी पण तरल कल्पना आहे. तिच्या नावाची ठेवण जरा निसरडी आहे.

जीवांचे गुणावगुण, त्यांच्या क्षमता मुख्यतः त्यांच्या जनुकांनी घडतात. जीवांना ज्या परिसरात जगायचे असते तो परिसर, ते पर्यावरण काही बाबतीत पोषक असते तर काही बाबतीत घातक. जीवांना आपल्या मर्जीने ना जनुके निवडता येतात ना भोवताल. त्यांची अन्य जीवांशी कधी मैत्री असते, तर कधी स्पर्धात्मक वैमनस्य असते. अशी जगण्याची कसरत करताना ते काही खटपट करून पर्यावरणाशी अनुकूलन साधण्याची क्षमता कमावतात. या क्षमतांमागे जनुकबदल असतात आणि जनुकाची जोड असेल तर त्यांच्या वंशजाकडे पण हे अनुकूलन येते. त्यांची प्रजा आणि वंशवेल फोफावत जाते. ज्यांना असे अनुकूलन लाभत नाही, ते तगू शकत नाहीत. त्यांच्या न तगण्याचे परिणाम त्यांच्या वंशवेलीतही दिसतात. कालांतराने त्या जीवांची शाखा अस्तंगत पावल्यागत ढासळते. त्यांच्या वंशजांची संख्या रोडावत जाते. उदाहरणार्थ – फार प्राचीन काळी मॅमॉथ नावाचे हत्तीचे प्राचीन पूर्वज होते. त्यांच्या अंगावर फार केस नसायचे. पण त्यातल्या एका वंशफांदीमध्ये जनुकी बदल झाले आणि केसांचे प्रमाण वाढले. अतिथंड प्रदेशात जगण्या - तगण्यासाठी हे केसाळ आवरण कामी आले. अतिथंड प्रदेशात इतर मॅमॉथ टिकू शकले नाहीत. म्हणून ते अस्तंगत झाले. पण त्यांचे सुकेश भाऊबंधू तगून राहिले. अशा सुकेश मॅमॉथचे संपूर्ण सांगाडे गोठलेल्या हिमात आढळले आहेत. सुकेश होणे हा परिस्थितीशी अनुकूलन घडविणारा, तगण्याची हमी देणारा घटक ठरला. ज्यांना हे सुकेशी कवच लाभले नाही त्यांचा त्या परिसरातून अस्त झाला.

आणखी एक उदाहरण पाहू. समुद्राकाठच्या भागात विशेष प्रकारची कासवे अंडी घालतात. ही अंडी त्यांनी वाळूत पुरून ठेवलेली असतात. त्यांचे थोटे कल्लेवजा पाय हे वाळू उपसण्यासाठीचे हत्यार असते. मात्र त्यांच्या पायांची ठेवण अशी असते की, पायांनी वाळू उपसणे कष्टप्रद ठरते आणि त्याची गतीही कमी राहते. ही वाळूची उपसाउपशी संपेपर्यंत वरचे घिरट्या घालणारे पक्षी काही अंडी फस्त करतात. त्यामुळे कासवांच्या पिल्लांची संख्या कमी होते. पुढच्या पिढीचा विस्तार खालावतो. कल्पना करा, की या कासवांच्या कल्लेवजा पायांत जनुकीय विकारभेद झाला आणि त्यांचा वाळू उपसा अधिक खोल आणि जलद झाला तर

तगणाऱ्या कासवांची संख्या वाढेल.

मूळ जनुकीय ठेवण, परिसर आणि पर्यावरणाच्या ठेवणीतली पोषक आणि घातक क्षमता, अपघातांमुळे घडणारे जनुकीय विकारबदल या तिन्हींच्या घुसळणीतून जे जगतात, तगतात ते जणू निसर्गाकडून निवडले गेलेले 'विजयीवीर' ठरतात.

'अतिथंड प्रदेशात जगण्या-तगण्यासाठी हे आवरण कामी आले' वाक्यातील विशेषण शोधा.

(1) जगण्या-तगण्यासाठी

(2) आवरण

(3) अतिथंड

(4) प्रदेश

[Question ID = 968][Question Description = CTET_P1_PART_5_L2_SET_102_MARATHI_Q128]

1. 1 [Option ID = 3869]
2. 2 [Option ID = 3870]
3. 3 [Option ID = 3871]
4. 4 [Option ID = 3872]

Topic:- Marathi_Q129-135_L2_P1_CTET

1) **सूचना :** पुढील उतारा वाचा आणि प्रश्न यासाठी योग्य पर्यायाची निवड करा.

ज्या वेगानं यंत्रं आणि समाज बदलत आहे ते पाहाता आपल्या आजच्या ज्ञानाचा अजून किती दिवस उपयोग होऊ शकेल याची खात्री आताशा त्याच्या थकलेल्या मनाला नसते. तो मनातलं जे सांगायला टाळतो ते शारीरिक लक्षणं सांगू पाहातात.

ताणतणाव मनात मावेनासा झाला की तो शरीरात उतरतो. मग काही तक्रारी लक्षणं म्हणून समोर येतात. त्यातल्या त्यात डोकेदुखी, अंगदुखी, भूक न लागणं, असिडिटी याबरोबर झोप बिघडणं, ही काही पहिली लक्षणं असतात. मनावरचा ताण, निराशा आणि पोटाचं आरोग्य यांचा खूप जवळचा संबंध आहे असा अंदाज आपल्याला असतोच. आतापर्यंत जीवनात अडचणी, अपघात, विरह, वियोग, गृहकलह, प्रेमभंग, परीक्षा आणि व्यवसाय यातलं अपयश, अशा वेळी भूक मंदावते, असिडिटी वाढते हा आपला अनुभव आहे. आयुर्वेदानंही असं निरीक्षण अनेक वर्ष आधी नोंदवलं आहे. मनातले विचार, भावना यांतल्या अस्वस्थतेवर पोटात असलेल्या प्रतिक्रिया यावर आधुनिक वैद्यकशास्त्रानंही सखोल संशोधन केलं आहे.

जागृती आणि वास्तव थोडं बाजूला ठेवून निद्रावस्था समजून घेऊ. झोप समजून घेताना अनेक समज, अंदाज, कल्पना या संभ्रम वाढवतात असं दिसतं. माणसं निश्चित मनानं रात्री झोपत होती असा काही काळ पूर्वी होता का, हाही एक अनुत्तरित राहाणारा प्रश्न आहे. काही माणसं उद्याच्या अनिश्चितीतही झोपत असतात असं दिसतं. किंबहुना मेंदू आपली अनेक कामं पूर्ण करण्यात अडथळा आणणारी जागृती बंद पाडण्यासाठी माणसाला झोपायला भाग पाडतो. काही गरीब लोक तगण्याचे प्रश्न भेडसावत असतानाही थकूनभागून झोपू शकतात. ती निद्रा असते, की ती आवश्यक ग्लानी, एक प्रकारची बेशुद्धी असते ? श्रीमंती सोबत घेऊन येते ते क्लिष्ट प्रश्न सधनालाही असतात. म्हणून तो अन्य सुखं (आणि छान झोप देण्याचं आश्वासन देणारी गाडी असतरी) झोप शकत नसावा झोप याची म्हणून काही जण घेत असलेलं फेसाल.

अमली पेय प्रत्यक्षात नैसर्गिक झोपेची वासलात लावतं आणि मेंदूचा ताबा घेऊन टाकतं, असं निद्राशास्त्र सांगतं. तरीही ते जगभर वापरलं जातं. नेमकं होतं आहे तरी काय ?

शिक्षणाच्या चरकातून यशस्वीरीत्या बाहेर आलेल्या आणि समाजात यशस्वी ठरलेल्या तरुणांशी बोलताना त्यांना आयुष्यात शिक्षण नंतर कशा प्रकारे उपयुक्त ठरतं आहे हे जाणून घेतलं, तर रूढ शिक्षण नेमकं काय घडवतं आहे ते समजू शकेल. या सतत बदलत्या जगात शिक्षण म्हणजे केवळ वाचणं, आठवून परीक्षेत लिहून दाखवणं असून चालणार नाही. ते विद्यार्थ्यांतली सर्जकता जागवून, नवी उत्तरं शोधण्याची स्फूर्ती देणारं असावं लागेल. चिकाटी, लवचीकता, संयम, आत्मविश्वास वाढवणारं, वैज्ञानिक दृष्टिकोन मनात रुजवणारं, समाजहितदक्ष आणि चारित्र्यसंपन्न व्यक्तिमत्त्व घडविणारं असावं लागेल. हे स्वप्नरंजन नाही, ही आजच्या जगाची निकड आहे. शिक्षण हे सारं देत आहे का ? चरकातून पिळल्यानंतरही गोड उसाचा रस मिळत नसेल, हाताशी चिपाड तेवढं उरत असेल तर चरकातून जाण्याचा फायदा काय ?

संपवणे, फत्ता करणे या अर्थाचा उताऱ्यातील शब्द शोधा.

(1) अडथळा

(2) लवचिकता

(3) वासलात

(4) जागृती

[Question ID = 969][Question Description = CTET_P1_PART_5_L2_SET_102_MARATHI_Q129]

1. 1 [Option ID = 3873]
2. 2 [Option ID = 3874]
3. 3 [Option ID = 3875]
4. 4 [Option ID = 3876]

2) **सूचना :** पुढील उतारा वाचा आणि प्रश्न यासाठी योग्य पर्यायाची निवड करा.

ज्या वेगानं यंत्रं आणि समाज बदलत आहे ते पाहता आपल्या आजच्या ज्ञानाचा अजून किती दिवस उपयोग होऊ शकेल याची खात्री आताशा त्याच्या थकलेल्या मनाला नसते. तो मनातलं जे सांगायला टाळतो ते शारीरिक लक्षणं सांगू पाहतात.

ताणतणाव मनात मावेनासा झाला की तो शरीरात उतरतो. मग काही तक्रारी लक्षणं म्हणून समोर येतात. त्यातल्या त्यात डोकेदुखी, अंगदुखी, भूक न लागणं, असिडिटी याबरोबर झोप बिघडणं, ही काही पहिली लक्षणं असतात. मनावरचा ताण, निराशा आणि पोटाचं आरोग्य यांचा खूप जवळचा संबंध आहे असा अंदाज आपल्याला असतोच. आतापर्यंत जीवनात अडचणी, अपघात, विरह, वियोग, गृहकलह, प्रेमभंग, परीक्षा आणि व्यवसाय यातलं अपयश, अशा वेळी भूक मंदावते, असिडिटी वाढते हा आपला अनुभव आहे. आयुर्वेदानंही असं निरीक्षण अनेक वर्ष आधी नोंदवलं आहे. मनातले विचार, भावना यांतल्या अस्वस्थतेवर पोट देत असलेल्या प्रतिक्रिया यावर आधुनिक वैद्यकशास्त्रानंही सखोल संशोधन केलं आहे.

जागृती आणि वास्तव थोडं बाजूला ठेवून निद्रावस्था समजून घेऊ. झोप समजून घेताना अनेक समज अंदाज कल्पना या संभव वाढवतात असं दिसतं. माणसं निश्चित मनानं रात्री झोपत

होती असा काही काळ पूर्वी होता का, हाही एक अनुत्तरित राहाणारा प्रश्न आहे. काही माणसं उद्याच्या अनिश्चितीतही झोपत असतात असं दिसतं. किंबहुना मेंदू आपली अनेक कामं पूर्ण करण्यात अडथळा आणणारी जागृती बंद पाडण्यासाठी माणसाला झोपायला भाग पाडतो. काही गरीब लोक तगण्याचे प्रश्न भेडसावत असतानाही थकूनभागून झोपू शकतात. ती निद्रा असते, की ती आवश्यक ग्लानी, एक प्रकारची बेशुद्धी असते ? श्रीमंती सोबत घेऊन येते ते क्लिष्ट प्रश्न सधनालाही असतात. म्हणून तो अन्य सुखं (आणि छान झोप देण्याचं आश्वासन देणारी गादी असूनही) झोपू शकत नसावा. झोप यावी म्हणून काही जण घेत असलेलं फेसाळ, अमली पेय प्रत्यक्षात नैसर्गिक झोपेची वासलात लावतं आणि मेंदूचा ताबा घेऊन टाकतं, असं निद्राशास्त्र सांगतं. तरीही ते जगभर वापरलं जातं. नेमकं होतं आहे तरी काय ?

शिक्षणाच्या चरकातून यशस्वीरीत्या बाहेर आलेल्या आणि समाजात यशस्वी ठरलेल्या तरुणांशी बोलताना त्यांना आयुष्यात शिक्षण नंतर कशा प्रकारे उपयुक्त ठरतं आहे हे जाणून घेतलं, तर रूढ शिक्षण नेमकं काय घडवतं आहे ते समजू शकेल. या सतत बदलत्या जगात शिक्षण म्हणजे केवळ वाचणं, आठवून परीक्षेत लिहून दाखवणं असून चालणार नाही. ते विद्यार्थ्यांतली सर्जकता जागवून, नवी उत्तरं शोधण्याची स्फूर्ती देणारं असावं लागेल. चिकाटी, लवचीकता, संयम, आत्मविश्वास वाढवणारं, वैज्ञानिक दृष्टिकोन मनात रुजवणारं, समाजहितदक्ष आणि चारित्र्यसंपन्न व्यक्तिमत्त्व घडविणारं असावं लागेल. हे स्वप्नरंजन नाही, ही आजच्या जगाची निकड आहे. शिक्षण हे सारं देत आहे का ? चरकातून पिळल्यानंतरही गोड उसाचा रस मिळत नसेल, हाताशी चिपाड तेवढं उरत असेल तर चरकातून जाण्याचा फायदा काय ?

आयुर्वेद आणि आधुनिक वैद्यकशास्त्र या दोघांमध्ये कोणत्या बाबतीत एकवाक्यता आहे. असे लेखकाला वाटते.

- (1) मानसिक अवस्था आणि पोटाचे आरोग्य
- (2) विरह आणि प्रेमभंग
- (3) परीक्षा आणि अपयश
- (4) जागृती आणि वास्तव

[Question ID = 970][Question Description = CTET_P1_PART_5_L2_SET_102_MARATHI_Q130]

1. 1 [Option ID = 3877]
2. 2 [Option ID = 3878]
3. 3 [Option ID = 3879]
4. 4 [Option ID = 3880]

3) **सूचना :** पुढील उतारा वाचा आणि प्रश्न यासाठी योग्य पर्यायाची निवड करा.

ज्या वेगानं यंत्रं आणि समाज बदलत आहे ते पाहता आपल्या आजच्या ज्ञानाचा अजून किती दिवस उपयोग होऊ शकेल याची खात्री आताशा त्याच्या थकलेल्या मनाला नसते. तो मनातलं जे सांगायला टाळतो ते शारीरिक लक्षणं सांगू पाहतात.

ताणतणाव मनात मावेनासा झाला की तो शरीरात उतरतो. मग काही तक्रारी लक्षणं म्हणून समोर येतात. त्यातल्या त्यात डोकेदुखी, अंगदुखी, भूक न लागणं, असिडिटी याबरोबर झोप

बिघडणं, ही काही पहिली लक्षणं असतात. मनावरचा ताण, निराशा आणि पोटाचं आरोग्य यांचा खूप जवळचा संबंध आहे असा अंदाज आपल्याला असतोच. आतापर्यंत जीवनात अडचणी, अपघात, विरह, वियोग, गृहकलह, प्रेमभंग, परीक्षा आणि व्यवसाय यातलं अपयश, अशा वेळी भूक मंदावते, असिडिटी वाढते हा आपला अनुभव आहे. आयुर्वेदानंही असं निरीक्षण अनेक वर्ष आधी नोंदवलं आहे. मनातले विचार, भावना यांतल्या अस्वस्थतेवर पोटा देत असलेल्या प्रतिक्रिया यावर आधुनिक वैद्यकशास्त्रानंही सखोल संशोधन केलं आहे.

जागृती आणि वास्तव थोडं बाजूला ठेवून निद्रावस्था समजून घेऊ. झोप समजून घेताना अनेक समज, अंदाज, कल्पना या संभ्रम वाढवतात असं दिसतं. माणसं निश्चित मनानं रात्री झोपत होती असा काही काळ पूर्वी होता का, हाही एक अनुत्तरित राहाणारा प्रश्न आहे. काही माणसं उद्याच्या अनिश्चितीतही झोपत असतात असं दिसतं. किंबहुना मेंदू आपली अनेक कामं पूर्ण करण्यात अडथळा आणणारी जागृती बंद पाडण्यासाठी माणसाला झोपायला भाग पाडतो. काही गरीब लोक तगण्याचे प्रश्न भेडसावत असतानाही थकूनभागून झोपू शकतात. ती निद्रा असते, की ती आवश्यक ग्लानी, एक प्रकारची बेशुद्धी असते ? श्रीमंती सोबत घेऊन येते ते क्लिष्ट प्रश्न सधनालाही असतात. म्हणून तो अन्य सुखं (आणि छान झोप देण्याचं आश्वासन देणारी गादी असूनही) झोपू शकत नसावा. झोप यावी म्हणून काही जण घेत असलेलं फेसाळ, अमली पेय प्रत्यक्षात नैसर्गिक झोपेची वासलात लावतं आणि मेंदूचा ताबा घेऊन टाकतं, असं निद्राशास्त्र सांगतं. तरीही ते जगभर वापरलं जातं. नेमकं होतं आहे तरी काय ?

शिक्षणाच्या चरकातून यशस्वीरीत्या बाहेर आलेल्या आणि समाजात यशस्वी ठरलेल्या तरुणांशी बोलताना त्यांना आयुष्यात शिक्षण नंतर कशा प्रकारे उपयुक्त ठरतं आहे हे जाणून घेतलं, तर रूढ शिक्षण नेमकं काय घडवतं आहे ते समजू शकेल. या सतत बदलत्या जगात शिक्षण म्हणजे केवळ वाचणं, आठवून परीक्षेत लिहून दाखवणं असून चालणार नाही. ते विद्यार्थ्यांतली सर्जकता जागवून, नवी उत्तरं शोधण्याची स्फूर्ती देणारं असावं लागेल. चिकाटी, लवचीकता, संयम, आत्मविश्वास वाढवणारं, वैज्ञानिक दृष्टिकोन मनात रुजवणारं, समाजहितदक्ष आणि चारित्र्यसंपन्न व्यक्तिमत्त्व घडविणारं असावं लागेल. हे स्वप्नरंजन नाही, ही आजच्या जगाची निकड आहे. शिक्षण हे सारं देत आहे का ? चरकातून पिळल्यानंतरही गोड उसाचा रस मिळत नसेल, हाताशी चिपाड तेवढं उरत असेल तर चरकातून जाण्याचा फायदा काय ?

ताणतणाव शरीरात उतरल्यावर समोर येणाऱ्या प्राथमिक लक्षणांपैकी लेखकाने न सांगितलेले लक्षण कोणते ?

- (1) डोकेदुखी
- (2) अंगदुखी
- (3) निद्रानाश
- (4) गृहकलह

4) **सूचना :** पुढील उतारा वाचा आणि प्रश्न यासाठी योग्य पर्यायाची निवड करा.

ज्या वेगानं यंत्रं आणि समाज बदलत आहे ते पाहता आपल्या आजच्या ज्ञानाचा अजून किती दिवस उपयोग होऊ शकेल याची खात्री आताशा त्याच्या थकलेल्या मनाला नसते. तो मनातलं जे सांगायला टाळतो ते शारीरिक लक्षणं सांगू पाहतात.

ताणतणाव मनात मावेनासा झाला की तो शरीरात उतरतो. मग काही तक्रारी लक्षणं म्हणून समोर येतात. त्यातल्या त्यात डोकेदुखी, अंगदुखी, भूक न लागणं, असिडिटी याबरोबर झोप बिघडणं, ही काही पहिली लक्षणं असतात. मनावरचा ताण, निराशा आणि पोटाचं आरोग्य यांचा खूप जवळचा संबंध आहे असा अंदाज आपल्याला असतोच. आतापर्यंत जीवनात अडचणी, अपघात, विरह, वियोग, गृहकलह, प्रेमभंग, परीक्षा आणि व्यवसाय यातलं अपयश, अशा वेळी भूक मंदावते, असिडिटी वाढते हा आपला अनुभव आहे. आयुर्वेदानंही असं निरीक्षण अनेक वर्ष आधी नोंदवलं आहे. मनातले विचार, भावना यांतल्या अस्वस्थतेवर पोट देत असलेल्या प्रतिक्रिया यावर आधुनिक वैद्यकशास्त्रानंही सखोल संशोधन केलं आहे.

जागृती आणि वास्तव थोडं बाजूला ठेवून निद्रावस्था समजून घेऊ. झोप समजून घेताना अनेक समज, अंदाज, कल्पना या संभ्रम वाढवतात असं दिसतं. माणसं निश्चित मनानं रात्री झोपत होती असा काही काळ पूर्वी होता का, हाही एक अनुत्तरित राहाणारा प्रश्न आहे. काही माणसं उद्याच्या अनिश्चितीतही झोपत असतात असं दिसतं. किंबहुना मेंदू आपली अनेक कामं पूर्ण करण्यात अडथळा आणणारी जागृती बंद पाडण्यासाठी माणसाला झोपायला भाग पाडतो. काही गरीब लोक तगण्याचे प्रश्न भेडसावत असतानाही थकूनभागून झोपू शकतात. ती निद्रा असते, की ती आवश्यक ग्लानी, एक प्रकारची बेशुद्धी असते ? श्रीमंती सोबत घेऊन येते ते क्लिष्ट प्रश्न सधनालाही असतात. म्हणून तो अन्य सुखं (आणि छान झोप देण्याचं आश्वासन देणारी गादी असूनही) झोपू शकत नसावा. झोप यावी म्हणून काही जण घेत असलेलं फेसाळ, अमली पेय प्रत्यक्षात नैसर्गिक झोपेची वासलात लावतं आणि मेंदूचा ताबा घेऊन टाकतं, असं निद्राशास्त्र सांगतं. तरीही ते जगभर वापरलं जातं. नेमकं होतं आहे तरी काय ?

शिक्षणाच्या चरकातून यशस्वीरीत्या बाहेर आलेल्या आणि समाजात यशस्वी ठरलेल्या तरुणांशी बोलताना त्यांना आयुष्यात शिक्षण नंतर कशा प्रकारे उपयुक्त ठरतं आहे हे जाणून घेतलं, तर रूढ शिक्षण नेमकं काय घडवतं आहे ते समजू शकेल. या सतत बदलत्या जगात शिक्षण म्हणजे केवळ वाचणं, आठवून परीक्षेत लिहून दाखवणं असून चालणार नाही. ते विद्यार्थ्यांतली सर्जकता जागवून, नवी उत्तरं शोधण्याची स्फूर्ती देणारं असावं लागेल. चिकाटी, लवचीकता, संयम, आत्मविश्वास वाढवणारं, वैज्ञानिक दृष्टिकोन मनात रुजवणारं, समाजहितदक्ष आणि चारित्र्यसंपन्न व्यक्तिमत्त्व घडविणारं असावं लागेल. हे स्वप्नरंजन नाही, ही आजच्या जगाची निकड आहे. शिक्षण हे सारं देत आहे का ? चरकातून पिळल्यानंतरही गोड उसाचा रस मिळत नसेल, हाताशी चिपाड तेवढं उरत असेल तर चरकातून जाण्याचा फायदा काय ?

लेखकाच्या मते मनात न मावणारी कोणती गोष्ट शरीरात झिरपते ?

(1) अमलीपेय

(2) ताणतणाव

(3) असिडिटी

(4) तक्रार

[Question ID = 972][Question Description = CTET_P1_PART_5_L2_SET_102_MARATHI_Q132]

1. 1 [Option ID = 3885]
2. 2 [Option ID = 3886]
3. 3 [Option ID = 3887]
4. 4 [Option ID = 3888]

5) **सूचना :** पुढील उतारा वाचा आणि प्रश्न यासाठी योग्य पर्यायाची निवड करा.

ज्या वेगानं यंत्रं आणि समाज बदलत आहे ते पाहाता आपल्या आजच्या ज्ञानाचा अजून किती दिवस उपयोग होऊ शकेल याची खात्री आताशा त्याच्या थकलेल्या मनाला नसते. तो मनातलं जे सांगायला टाळतो ते शारीरिक लक्षणं सांगू पाहातात.

ताणतणाव मनात मावेनासा झाला की तो शरीरात उतरतो. मग काही तक्रारी लक्षणं म्हणून समोर येतात. त्यातल्या त्यात डोकेदुखी, अंगदुखी, भूक न लागणं, असिडिटी याबरोबर झोप बिघडणं, ही काही पहिली लक्षणं असतात. मनावरचा ताण, निराशा आणि पोटाचं आरोग्य यांचा खूप जवळचा संबंध आहे असा अंदाज आपल्याला असतोच. आतापर्यंत जीवनात अडचणी, अपघात, विरह, वियोग, गृहकलह, प्रेमभंग, परीक्षा आणि व्यवसाय यातलं अपयश, अशा वेळी भूक मंदावते, असिडिटी वाढते हा आपला अनुभव आहे. आयुर्वेदानंही असं निरीक्षण अनेक वर्ष आधी नोंदवलं आहे. मनातले विचार, भावना यांतल्या अस्वस्थतेवर पोटात असलेल्या प्रतिक्रिया यावर आधुनिक वैद्यकशास्त्रानंही सखोल संशोधन केलं आहे.

जागृती आणि वास्तव थोडं बाजूला ठेवून निद्रावस्था समजून घेऊ. झोप समजून घेताना अनेक समज, अंदाज, कल्पना या संभ्रम वाढवतात असं दिसतं. माणसं निश्चित मनानं रात्री झोपत होती असा काही काळ पूर्वी होता का, हाही एक अनुत्तरित राहाणारा प्रश्न आहे. काही माणसं उद्याच्या अनिश्चितीतही झोपत असतात असं दिसतं. किंबहुना मेंदू आपली अनेक कामं पूर्ण करण्यात अडथळा आणणारी जागृती बंद पाडण्यासाठी माणसाला झोपायला भाग पाडतो. काही गरीब लोक तगण्याचे प्रश्न भेडसावत असतानाही थकूनभागून झोपू शकतात. ती निद्रा असते, की ती आवश्यक ग्लानी, एक प्रकारची बेशुद्धी असते ? श्रीमंती सोबत घेऊन येते ते क्लिष्ट प्रश्न सधनालाही असतात. म्हणून तो अन्य सुखं (आणि छान झोप देण्याचं आश्वासन देणारी गादी असूनही) झोपू शकत नसावा. झोप यावी म्हणून काही जण घेत असलेलं फेसाळ, अमली पेय प्रत्यक्षात नैसर्गिक झोपेची वासलात लावतं आणि मेंदूचा ताबा घेऊन टाकतं, असं निद्राशास्त्र सांगतं. तरीही ते जगभर वापरलं जातं. नेमकं होतं आहे तरी काय ?

शिक्षणाच्या चरकातून यशस्वीरीत्या बाहेर आलेल्या आणि समाजात यशस्वी ठरलेल्या तरुणांशी बोलताना त्यांना आयुष्यात शिक्षण नंतर कशा प्रकारे उपयुक्त ठरतं आहे हे जाणून घेतलं, तर रूढ शिक्षण नेमकं काय घडवतं आहे ते समजू शकेल. या सतत बदलत्या जगात शिक्षण म्हणजे केवळ वाचणं, आठवून परीक्षेत लिहून दाखवणं असून चालणार नाही. ते

विद्यार्थ्यांतली सर्जकता जागवून, नवी उत्तरं शोधण्याची स्फूर्ती देणारं असावं लागेल. चिकाटी, लवचीकता, संयम, आत्मविश्वास वाढवणारं, वैज्ञानिक दृष्टिकोन मनात रुजवणारं, समाजहितदक्ष आणि चारित्र्यसंपन्न व्यक्तिमत्त्व घडविणारं असावं लागेल. हे स्वप्नरंजन नाही, ही आजच्या जगाची निकड आहे. शिक्षण हे सारं देत आहे का ? चरकातून पिळल्यानंतरही गोड उसाचा रस मिळत नसेल, हाताशी चिपाड तेवढं उरत असेल तर चरकातून जाण्याचा फायदा काय ?

‘वास्तव’ शब्दाचा समानार्थी नसलेला शब्द कोणता ?

(1) प्रत्यक्ष

(2) खरोखरीचे

(3) मूळ

(4) विकळ

[Question ID = 973][Question Description = CTET_P1_PART_5_L2_SET_102_MARATHI_Q133]

1. 1 [Option ID = 3889]
2. 2 [Option ID = 3890]
3. 3 [Option ID = 3891]
4. 4 [Option ID = 3892]

6) **सूचना :** पुढील उतारा वाचा आणि प्रश्न यासाठी योग्य पर्यायाची निवड करा.

ज्या वेगानं यंत्रं आणि समाज बदलत आहे ते पाहता आपल्या आजच्या ज्ञानाचा अजून किती दिवस उपयोग होऊ शकेल याची खात्री आताशा त्याच्या थकलेल्या मनाला नसते. तो मनातलं जे सांगायला टाळतो ते शारीरिक लक्षणं सांगू पाहतात.

ताणतणाव मनात मावेनासा झाला की तो शरीरात उतरतो. मग काही तक्रारी लक्षणं म्हणून समोर येतात. त्यातल्या त्यात डोकेदुखी, अंगदुखी, भूक न लागणं, असिडिटी याबरोबर झोप बिघडणं, ही काही पहिली लक्षणं असतात. मनावरचा ताण, निराशा आणि पोटाचं आरोग्य यांचा खूप जवळचा संबंध आहे असा अंदाज आपल्याला असतोच. आतापर्यंत जीवनात अडचणी, अपघात, विरह, वियोग, गृहकलह, प्रेमभंग, परीक्षा आणि व्यवसाय यातलं अपयश, अशा वेळी भूक मंदावते, असिडिटी वाढते हा आपला अनुभव आहे. आयुर्वेदानंही असं निरीक्षण अनेक वर्ष आधी नोंदवलं आहे. मनातले विचार, भावना यांतल्या अस्वस्थतेवर पोटा देत असलेल्या प्रतिक्रिया यावर आधुनिक वैद्यकशास्त्रानंही सखोल संशोधन केलं आहे.

जागृती आणि वास्तव थोडं बाजूला ठेवून निद्रावस्था समजून घेऊ. झोप समजून घेताना अनेक समज, अंदाज, कल्पना या संभ्रम वाढवतात असं दिसतं. माणसं निश्चित मनानं रात्री झोपत होती असा काही काळ पूर्वी होता का, हाही एक अनुत्तरित राहाणारा प्रश्न आहे. काही माणसं उद्याच्या अनिश्चितीतही झोपत असतात असं दिसतं. किंबहुना मेंदू आपली अनेक कामं पूर्ण करण्यात अडथळा आणणारी जागृती बंद पाडण्यासाठी माणसाला झोपायला भाग पाडतो. काही गरीब लोक तगण्याचे प्रश्न भेडसावत असतानाही थकूनभागून झोपू शकतात. ती निद्रा असते, की ती आवश्यक ग्लानी, एक प्रकारची बेशुद्धी असते ? श्रीमंती सोबत घेऊन येते ते क्लिष्ट प्रश्न सधनालाही असतात. म्हणून तो अन्य सुखं (आणि छान झोप देण्याचं आश्वासन

देणारी गादी असूनही) झोपू शकत नसावा. झोप यावी म्हणून काही जण घेत असलेलं फेसाळ, अमली पेय प्रत्यक्षात नैसर्गिक झोपेची वासलात लावतं आणि मेंदूचा ताबा घेऊन टाकतं, असं निद्राशास्त्र सांगतं. तरीही ते जगभर वापरलं जातं. नेमकं होतं आहे तरी काय ?

शिक्षणाच्या चरकातून यशस्वीरीत्या बाहेर आलेल्या आणि समाजात यशस्वी ठरलेल्या तरुणांशी बोलताना त्यांना आयुष्यात शिक्षण नंतर कशा प्रकारे उपयुक्त ठरतं आहे हे जाणून घेतलं, तर रूढ शिक्षण नेमकं काय घडवतं आहे ते समजू शकेल. या सतत बदलत्या जगात शिक्षण म्हणजे केवळ वाचणं, आठवून परीक्षेत लिहून दाखवणं असून चालणार नाही. ते विद्यार्थ्यांतली सर्जकता जागवून, नवी उत्तरं शोधण्याची स्फूर्ती देणारं असावं लागेल. चिकाटी, लवचीकता, संयम, आत्मविश्वास वाढवणारं, वैज्ञानिक दृष्टिकोन मनात रुजवणारं, समाजहितदक्ष आणि चारित्र्यसंपन्न व्यक्तिमत्त्व घडविणारं असावं लागेल. हे स्वप्नरंजन नाही, ही आजच्या जगाची निकड आहे. शिक्षण हे सारं देत आहे का ? चरकातून पिळल्यानंतरही गोड उसाचा रस मिळत नसेल, हाताशी चिपाड तेवढं उरत असेल तर चरकातून जाण्याचा फायदा काय ?

काही माणसांच्या बाबतीत लेखकाने कोणते निरीक्षण मांडले आहे ?

- (1) उद्याच्या अतिश्रुतीतही झोपतात
- (2) कल्पना, संभ्रम वाढवतात
- (3) स्वप्नरंजन करतात
- (4) शिक्षणाच्या चरकातून बाहेर पडतात

[Question ID = 974][Question Description = CTET_P1_PART_5_L2_SET_102_MARATHI_Q134]

1. 1 [Option ID = 3893]
2. 2 [Option ID = 3894]
3. 3 [Option ID = 3895]
4. 4 [Option ID = 3896]

7) **सूचना :** पुढील उतारा वाचा आणि प्रश्न यासाठी योग्य पर्यायाची निवड करा.

ज्या वेगानं यंत्रं आणि समाज बदलत आहे ते पाहता आपल्या आजच्या ज्ञानाचा अजून किती दिवस उपयोग होऊ शकेल याची खात्री आताशा त्याच्या थकलेल्या मनाला नसते. तो मनातलं जे सांगायला टाळतो ते शारीरिक लक्षणं सांगू पाहतात.

ताणतणाव मनात मावेनासा झाला की तो शरीरात उतरतो. मग काही तक्रारी लक्षणं म्हणून समोर येतात. त्यातल्या त्यात डोकेदुखी, अंगदुखी, भूक न लागणं, असिडिटी याबरोबर झोप बिघडणं, ही काही पहिली लक्षणं असतात. मनावरचा ताण, निराशा आणि पोटाचं आरोग्य यांचा खूप जवळचा संबंध आहे असा अंदाज आपल्याला असतोच. आतापर्यंत जीवनात अडचणी, अपघात, विरह, वियोग, गृहकलह, प्रेमभंग, परीक्षा आणि व्यवसाय यातलं अपयश, अशा वेळी भूक मंदावते, असिडिटी वाढते हा आपला अनुभव आहे. आयुर्वेदानंही असं निरीक्षण अनेक वर्ष आधी नोंदवलं आहे. मनातले विचार, भावना यांतल्या अस्वस्थतेवर पोटा देत असलेल्या प्रतिक्रिया यावर आधुनिक वैद्यकशास्त्रानंही सखोल संशोधन केलं आहे.

जागृती आणि वास्तव थोडं बाजूला ठेवून निद्रावस्था समजून घेऊ. झोप समजून घेताना अनेक

समज, अंदाज, कल्पना या संभ्रम वाढवतात असं दिसतं. माणसं निश्चित मनानं रात्री झोपत होती असा काही काळ पूर्वी होता का, हाही एक अनुत्तरित राहाणारा प्रश्न आहे. काही माणसं उद्याच्या अनिश्चितीतही झोपत असतात असं दिसतं. किंबहुना मेंदू आपली अनेक कामं पूर्ण करण्यात अडथळा आणणारी जागृती बंद पाडण्यासाठी माणसाला झोपायला भाग पाडतो. काही गरीब लोक तगण्याचे प्रश्न भेडसावत असतानाही थकूनभागून झोपू शकतात. ती निद्रा असते, की ती आवश्यक ग्लानी, एक प्रकारची बेशुद्धी असते ? श्रीमंती सोबत घेऊन येते ते क्लिष्ट प्रश्न सधनालाही असतात. म्हणून तो अन्य सुखं (आणि छान झोप देण्याचं आश्वासन देणारी गादी असूनही) झोपू शकत नसावा. झोप यावी म्हणून काही जण घेत असलेलं फेसाळ, अमली पेय प्रत्यक्षात नैसर्गिक झोपेची वासलात लावतं आणि मेंदूचा ताबा घेऊन टाकतं, असं निद्राशास्त्र सांगतं. तरीही ते जगभर वापरलं जातं. नेमकं होतं आहे तरी काय ?

शिक्षणाच्या चरकातून यशस्वीरीत्या बाहेर आलेल्या आणि समाजात यशस्वी ठरलेल्या तरुणांशी बोलताना त्यांना आयुष्यात शिक्षण नंतर कशा प्रकारे उपयुक्त ठरतं आहे हे जाणून घेतलं, तर रूढ शिक्षण नेमकं काय घडवतं आहे ते समजू शकेल. या सतत बदलत्या जगात शिक्षण म्हणजे केवळ वाचणं, आठवून परीक्षेत लिहून दाखवणं असून चालणार नाही. ते विद्यार्थ्यांतली सर्जकता जागवून, नवी उत्तरं शोधण्याची स्फूर्ती देणारं असावं लागेल. चिकाटी, लवचीकता, संयम, आत्मविश्वास वाढवणारं, वैज्ञानिक दृष्टिकोन मनात रुजवणारं, समाजहितदक्ष आणि चारित्र्यसंपन्न व्यक्तिमत्त्व घडविणारं असावं लागेल. हे स्वप्नरंजन नाही, ही आजच्या जगाची निकड आहे. शिक्षण हे सारं देत आहे का ? चरकातून पिळल्यानंतरही गोड उसाचा रस मिळत नसेल, हाताशी चिपाड तेवढं उरत असेल तर चरकातून जाण्याचा फायदा काय ?

“यावर आधुनिक वैद्यकशास्त्रानंही सखोल संशोधन केलं आहे.” या वाक्यातील कर्ता शोधा.

(1) यावर

(2) सखोल

(3) वैद्यकशास्त्र

(4) संशोधन

[Question ID = 975][Question Description = CTET_P1_PART_5_L2_SET_102_MARATHI_Q135]

1. 1 [Option ID = 3897]
2. 2 [Option ID = 3898]
3. 3 [Option ID = 3899]
4. 4 [Option ID = 3900]

Topic:- Marathi_Q136-150_L2_P1_CTET

1) एखाद्या प्रकल्पाच्या किंवा अभ्यासक्रमाच्या शेवटी विद्यार्थ्यांनी ज्ञान, क्षमता आणि योग्य वर्तणूक या गोष्टी आत्मसात करायच्या असतात. पुढीलपैकी कोणत्या बाबतीत ही गोष्ट अधोरेखित होते ?

(1) शिक्षणाची फलश्रुती

(2) शिक्षण शैली

(3) शिक्षण स्तर

(4) शिक्षण अक्षमता

[Question ID = 976][Question Description = CTET_P1_PART_5_L2_SET_102_MARATHI_Q136]

1. 1 [Option ID = 3901]
2. 2 [Option ID = 3902]
3. 3 [Option ID = 3903]
4. 4 [Option ID = 3904]

2) शिक्षिका मुलांना शैक्षणिक उपक्रमातून भाषेच्या मौखिक आणि लिखित स्वरूपांचा वापर करण्याची संधी उपलब्ध करून देते. ती पुढीलपैकी कोणत्या गोष्टीवर भर देते ?

(1) समग्र शारीरिक प्रतिसाद

(2) कृती आधारित भाषा शिक्षण

(3) पाठ्यपुस्तक आधारित भाषा शिक्षण

(4) शिक्षणाची पदबंध पद्धती

[Question ID = 977][Question Description = CTET_P1_PART_5_L2_SET_102_MARATHI_Q137]

1. 1 [Option ID = 3905]
2. 2 [Option ID = 3906]
3. 3 [Option ID = 3907]
4. 4 [Option ID = 3908]

3) पहिल्या इयत्तेतील शिक्षिका मुलांसोबत खेळताना त्यांना चालणे, धावणे, बसणे, रांगणे इत्यादी कृती करावयास सांगते. शिक्षिका मुलांच्या कोणत्या क्षमतेचा विकास करण्याचा प्रयत्न करते ?

(1) समग्र क्रियात्मक क्षमता

(2) परिष्कृत क्रियात्मक क्षमता

(3) समग्र शारीरिक प्रतिसाद

(4) शारीरिक शिक्षण कृती

[Question ID = 978][Question Description = CTET_P1_PART_5_L2_SET_102_MARATHI_Q138]

1. 1 [Option ID = 3909]
2. 2 [Option ID = 3910]
3. 3 [Option ID = 3911]
4. 4 [Option ID = 3912]

4) विद्यार्थ्यांची मजकुरातील माहिती आणि त्याचे आकलन करण्याची क्षमता म्हणजे

(1) वाचनातील ओघ

(2) अर्थ लावणे

(3) श्रुतलेखन

(4) समजून वाचणे

[Question ID = 979][Question Description = CTET_P1_PART_5_L2_SET_102_MARATHI_Q139]

1. 1 [Option ID = 3913]

2. 2 [Option ID = 3914]

3. 3 [Option ID = 3915]

4. 4 [Option ID = 3916]

5) बोलताना जीभ आणि ओठ यांचा समन्वय साधता येत नाही. ही क्रियात्मक अक्षमता म्हणजे

(1) डिसकैल्क्युलिया

(2) डिसफेसिया

(3) डिसपराक्सिया

(4) डिसलेक्सिया

[Question ID = 980][Question Description = CTET_P1_PART_5_L2_SET_102_MARATHI_Q140]

1. 1 [Option ID = 3917]

2. 2 [Option ID = 3918]

3. 3 [Option ID = 3919]

4. 4 [Option ID = 3920]

6) पुढीलपैकी कोणते विधान व्यागोत्स्कीच्या भाषा विकास सिद्धांतावर आधारित आहे ?

(1) मूल कोणतीच भाषिक क्षमता घेऊन जन्माला येत नाही.

(2) भाषेचा विकास हा ज्ञानात्मक विकासाची सातत्यपूर्ण स्थिती आहे.

(3) सामाजिक संभाषणातून भाषा विकसित होत असते.

(4) सकारात्मक प्रबलीकरणाचा एक घटक म्हणून मुले भाषा शिकतात.

[Question ID = 981][Question Description = CTET_P1_PART_5_L2_SET_102_MARATHI_Q141]

1. 1 [Option ID = 3921]

2. 2 [Option ID = 3922]

3. 3 [Option ID = 3923]

4. 4 [Option ID = 3924]

7) पुढीलपैकी कोणती बाब 'कृती आधारित' भाषा शिक्षणाच्या सिद्धांतावर बेतलेली नाही ?

(1) परातीकरण

(2) सक्रिय शिक्षण

(3) निर्मितीची पुनर्निर्मिती

(4) भाषांतरावर प्रतिक्रिया

[Question ID = 982][Question Description = CTET_P1_PART_5_L2_SET_102_MARATHI_Q142]

1. 1 [Option ID = 3925]

2. 2 [Option ID = 3926]

3. 3 [Option ID = 3927]

4. 4 [Option ID = 3928]

8) भाषाशिक्षणाच्या संरचनात्मक पद्धतीत शिक्षिकेने _____ करावे ही अपेक्षा असते.

(1) विद्यार्थ्याला पूर्वसंरचित ज्ञान देणे

(2) स्वतःचा अभ्यासक्रम तयार करावा

(3) विद्यार्थ्यांना त्यांचे पाठ्यपुस्तक तयार करण्यास सांगणे

(4) विद्यार्थ्यांना त्यांच्या अनुभवावर आधारलेले ज्ञान तयार करण्यास मदत करणे

[Question ID = 983][Question Description = CTET_P1_PART_5_L2_SET_102_MARATHI_Q143]

1. 1 [Option ID = 3929]

2. 2 [Option ID = 3930]

3. 3 [Option ID = 3931]

4. 4 [Option ID = 3932]

9) विधान (A) :

उपचारात्मक शिक्षण ही एक पद्धतशीर प्रक्रिया आहे ज्यात शिक्षक मुलांच्या समस्यांचे निदान करतात आणि नंतर योग्य त्या पद्धतीचा वापर करतात.

कारण (R) :

उपचारात्मक शिक्षण देण्यापूर्वी शिक्षकाला विद्यार्थ्यांच्या क्षमता आणि उणीवा माहित असल्या पाहिजेत.

योग्य पर्याय निवडून उत्तर द्या :

(1) (A) आणि (R) दोन्ही योग्य आहेत आणि (R) हे (A) चे योग्य विश्लेषण आहे.

(2) (A) आणि (R) दोन्ही योग्य आहेत, पण (R) हे (A) चे योग्य विश्लेषण नाहीये.

(3) (A) योग्य आहे, पण (R) बरोबर नाही.

(4) (A) हे अयोग्य आहे, पण (R) योग्य आहे.

[Question ID = 984][Question Description = CTET_P1_PART_5_L2_SET_102_MARATHI_Q144]

1. 1 [Option ID = 3933]

2. 2 [Option ID = 3934]

3. 3 [Option ID = 3935]

4. 4 [Option ID = 3936]

10) विधान (A) :

तुम्ही जितके लहान तितकेच तुम्हाला दुसरी भाषा शिकणे सोपे.

कारण (R) :

योग्य उच्चारण क्षमता विकसित करणे सोपे जाते जेव्हा ते प्रारंभिक अवस्थेत शिकले जाते.

योग्य पर्याय निवडून उत्तर द्या :

(1) (A) आणि (R) दोन्ही योग्य आहेत आणि (R) हे (A) चे योग्य विश्लेषण आहे.

(2) (A) आणि (R) दोन्ही योग्य आहेत, पण (R) हे (A) चे योग्य विश्लेषण नाहीये.

(3) (A) योग्य आहे, पण (R) बरोबर नाही.

(4) (A) हे अयोग्य आहे, पण (R) योग्य आहे.

[Question ID = 985][Question Description = CTET_P1_PART_5_L2_SET_102_MARATHI_Q145]

1. 1 [Option ID = 3937]

2. 2 [Option ID = 3938]
3. 3 [Option ID = 3939]
4. 4 [Option ID = 3940]

11) लहान मुलांचा व्याकरण शिकण्याची सुरुवात करताना त्याचे अति सामान्यीकरण करण्याकडे कल असतो. असे होते त्याचे कारण

- (1) ते अचूकता यावी यासाठी जाणीवपूर्वक भाषा नियम शिकतात.
- (2) वाक्यरचनेचे नियम सर्वत्र एकसारखेच वापरले जातात, असा त्यांचा समज असतो.
- (3) भाषेत ओघवतेपणा यावा, यासाठी ते व्याकरणिक नियमांचा वापर करतात.
- (4) मुले भाषेचे मूलभूत नियम त्यांच्या पालकांकडून शिकतात.

[Question ID = 986][Question Description = CTET_P1_PART_5_L2_SET_102_MARATHI_Q146]

1. 1 [Option ID = 3941]
2. 2 [Option ID = 3942]
3. 3 [Option ID = 3943]
4. 4 [Option ID = 3944]

12) मजकुरातील माहिती मिळविणे आणि तिचे शाब्दिक पातळीपलीकडे जाऊन अर्थनिर्णयन करणे म्हणजे _____.

- (1) पूर्वकथन करणे
- (2) तुलना करणे
- (3) चाळून पाहणे
- (4) अनुमान लावणे

[Question ID = 987][Question Description = CTET_P1_PART_5_L2_SET_102_MARATHI_Q147]

1. 1 [Option ID = 3945]
2. 2 [Option ID = 3946]
3. 3 [Option ID = 3947]
4. 4 [Option ID = 3948]

13) पाचवी इयत्तेतील विद्यार्थी असे म्हणतो की माझा मित्र पंजाबी भाषा बोलतो ते समजणे सोपे असते, पण वाचणे अवघड आहे. त्याचे स्वतःविषयीचे मूल्यमापन म्हणजे.

- (1) शिकण्याचे मूल्यमापन
- (2) शिकण्यासाठीचे मूल्यमापन
- (3) मूल्यमापन म्हणजे शिक्षण
- (4) मूल्यमापनातील शिक्षण

[Question ID = 988][Question Description = CTET_P1_PART_5_L2_SET_102_MARATHI_Q148]

1. 1 [Option ID = 3949]
2. 2 [Option ID = 3950]
3. 3 [Option ID = 3951]
4. 4 [Option ID = 3952]

14) भाषा मूल्यमापनात कोणती बाब तपासण्याकडे कल असतो ?

(1) प्रत्येक मुलाची इतर मुलांच्या तुलनेत प्रगती.

(2) त्यांचे समग्र किंवा समाकलनीय यश

(3) मुलांचे भाषिक यश

(4) मुलांचे भाषिक नैपुण्य

[Question ID = 989][Question Description = CTET_P1_PART_5_L2_SET_102_MARATHI_Q149]

1. 1 [Option ID = 3953]
2. 2 [Option ID = 3954]
3. 3 [Option ID = 3955]
4. 4 [Option ID = 3956]

15) स्टिफन क्राशेनचे अर्थग्रहणात्मक आदान ('कोम्प्रीहेन्सिबल इनपुट') सुचवते

(1) मुलांना त्यांच्या भाषास्तरानुसार भाषा उपलब्ध करून देणे.

(2) पाठ्यपुस्तक आणि शिक्षकांच्या माध्यमातून मुलांना प्राप्त झालेले आदान.

(3) मुलांना त्यांच्या भाषास्तरापेक्षा किंचित वरच्या पातळीवर जाऊन भाषा शिकवणे.

(4) मुलांना त्यांच्या स्तरापेक्षा वरच्या पातळीवरचा मजकूर आणि सामग्री देणे.

[Question ID = 990][Question Description = CTET_P1_PART_5_L2_SET_102_MARATHI_Q150]

1. 1 [Option ID = 3957]
2. 2 [Option ID = 3958]
3. 3 [Option ID = 3959]
4. 4 [Option ID = 3960]